II–शब्द विचार (Etymology)

इस अध्याय में संज्ञा आदि शब्दों के मेल अथवा उनके साथ अन्य प्रत्ययों के मेल से बनने वाले नवीन शब्दों की रीति का वर्णन किया जाएगा। शब्दों की उत्पत्ति तीन तरह से होती है–

1. उपसर्ग (Prefixes) – शब्दों के पूर्व शब्दांश जोड़ने से, ऐसे शब्दांशों को, जो शब्द के पूर्व जुड़ते हैं, उपसर्ग कहते हैं।

2. प्रत्यय (Suffixes) – शब्दों के पीछे शब्दांश जोड़ने से, ऐसे शब्दांशों की, जो शब्द के बाद जुड़ते हैं, प्रत्यय कहते हैं।

3. समास (Compound) – दो शब्दों के मेल से, ऐसे स्वतंत्र शब्दों को जो दो अथवा दो से अधिक शब्दों से मिल कर बनते हैं, समास कहते हैं।

1. उपसर्ग (Prefixes)

ऐसे शब्दांश, जो किसी शब्द के पहले लगकर उनके अर्थों में परिवर्तन ला देते हैं जैसे–

पुत्र	बेटा	सु	सुपुत्र	अच्छा बेटा
भाव	विचार	प्र	प्रभाव	असर
जय	जीतना	परा	पराजय	हार
अपराध	दोष	निर	निरपराध	निर्दोष
कर्म	काम	कु	कुकर्म	बुरा काम
योग	मेल	वि	वियोग	जुदाई
क्रम	बारी	वि	विक्रम	वीरता
स्थान	जगह	उत	उत्थान	उठना
वाद	बोलना	वि	विवाद	बहस
ग्रहण	ग्रहण लगना	वि	विग्रहण	लड़ाई

हिन्दी भाषा में जो उपसर्ग प्रयोग होते हैं, प्रायः संस्कृत के ही हैं। आगे उनके अर्थ और प्रयोग लिखे जाते हैं।

1. अप–(बुरा) अपमान, अपवाद, अपशब्द, अपकार, अपवाक्य।

2. अव–(नी) अवतार, अवगुण, अवनति, अवज्ञा।

3. अनु – (पीछे) अनुसरण, अनुकरण, अनुज, अनुचर, अनुरूप।

4.अभि–(ओर, पास, सामने, चारों ओर, मनोरथ) अभिप्राय, अभिराम, अभ्यागत, अभिमुख, अभिनय ।

5. अति–(अधिक, रहित) अतिशय, अतिदीन, अतिरिक्त, अतिमान ।

6. अधि–(ऊपर, प्रधान) अधिपति, अधिकार, अधिक ।

7. आ–(तक, समेत) आजीवन, आगमन, आकर्षण ।

8. उप –(समीप, छोटा) उपचार, उपनिवेश, उपवन, उपनाम ।

9. दुर् – (कठिन, बुरा) दुराचार, दुर्गम, दुर्दशा, दुर्जन ।

10. दुस् – (बुरा, कठिन) दुष्कर, दुस्तर ।

11. नि – (नीचे) निरोध, निपात ।

12. निर – (निषेध) निराधार, निर्दोष, निर्मल, निर्बल, निरपराध ।

13. निस् – (निषेध) निश्चय, निर्बल, निरपराध ।

14. प्र – (अधिक, ऊपर) प्रबल, प्रभाव, प्रचार, प्रस्थान, प्रसिद्धि, प्रयोग ।

15. परा – (पीछे, उल्टा) पराजय, पराभव, परामर्श ।

16.परि– (आस-पास, सब तरह, पूर्णतः) परिजन, परिक्रमा, परितोष, परिणाम ।

17. प्रति – (विरुद्ध, सामने, हर एक) प्रतिदिन, प्रतिकूल, प्रत्येक, प्रत्यक्ष ।

18. वि – (विशेषता, भिन्नता) वियोग, विदेशी ।

19. सम् – (साथ, अच्छा, पूर्ण) संगत, सम्भव, संस्कार, संक्षेप, संग्रह, संयोग ।

20. सु – (अच्छा, सहज) सुपुत्र, सुगम, सुकुमार, सुकर्म ।

21.उत् – (उत्कृष्ट, अधिक, ऊपर) उत्पत्ति, उन्माद, उत्सव, उत्थान ।

हिन्दी उपसर्ग

कुछ उपसर्ग हिन्दी के अपने भी हैं, यद्यपि वे संस्कृत से ही बिगड़े हुए हैं ।

1. अ – (अभाव) अचेत, अभाव, अछूत ।

2. अध – (आधा) अधपका, अधकच्चा, अधसुना ।

3. अन – (अभाव) अनबन, अनमोल, अनगिनत ।

4. औ – (हीन, नीच) औगुन, औघट ।

5. सु – (अच्छा) सुडौल, सुजान ।

6. कु – (बुरा) कुपूत, कुमार्ग, कुचाली ।

7. निर – (रहित) निकम्मा, निडर ।

8. भर – (पूर्णतः) भरपेट, भरपूर, भरसक ।

9. बि – (वियोग, विशेषता) बिछुड़ना ।

विशेष –

जो शब्द व्यंजन से आरम्भ होते हें उनमें निषेध प्रकट करने के लिए 'अ' लगाया जाता है और जो स्वर से आरम्भ होते हैं उनमें (अन) लगाया जाता है ।

उर्दू उपसर्ग

उर्दू भाषा के कुछ उपसर्ग भी हिन्दी भाषा में प्रयुक्त होते हैं –

1. बे – (रहित) बेपरवाह, बेअक़्ल, बेशर्म ।

2. बा – (अनुसार) बाकायदा, बाजाख्ता ।

3. बद – (बुरा) बदमाश, बदतमीज ।

4. ना – (नहीं) नापसन्द, नालायक ।

5. ला – (अभाव) लाचार, लाजबाब ।

6. हर – (प्रति) हररोज, हरएक, हरघड़ी ।

7. दर – (मैं) दरअसल ।

2. प्रत्यय (Suffixes)

ऐसे शब्दांश जो किसी शब्दांश के अन्त में जुड़ कर उनके अर्थों में परिवर्तन ला देते हैं उन्हें प्रत्यय कहा जाता है । प्रत्यय पाँच प्रकार के हैं; (क) कारक-प्रत्यय, (ख) क्रिया प्रत्यय, (ग) कृत् प्रत्यय, (घ) तद्धित प्रत्यय, (ङ) स्त्री प्रत्यय ।

कारक, स्त्री और क्रिया प्रत्ययों का वर्णन पूर्व हो चुका है । नीचे कृत् प्रत्यय और तद्धित प्रत्ययों का वर्णन किया जाता है ।

कृत् प्रत्यय (Verbal Derivations or Primary Suffixes) –जिन प्रत्ययों के धातुओं के अन्त में जोड़ने से अन्य शब्द बनते हैं, उन्हें कृत् प्रत्यय

कहते हैं । जो शब्द कृत् प्रत्यय के जोड़ने से बनते हैं उन्हें कृदन्त कहते हैं ।

कृत् प्रत्यय पाँच प्रकार के होते हैं – (क) कर्तृवाचक, (ख) कर्मवाचक, (ग) करण वाचक, (घ) भाव वाचक, (ङ) क्रिया द्यौतक ।

(1) कर्तृवाचक (Agent Noun) – जिनसे बनी हुई संज्ञा क्रिया के करने का बोध कराये, उनको कर्तृवाचक कहते हैं ।

बनाने के नियम ये हैं–

(1) क्रिया के सामान्य रूप के 'न' को 'ने' करके साथ में 'वाला' जोड़ देते हैं; जैसे–

सामान्य क्रिया	कृदन्त क्रिया	सामान्य क्रिया	कृदन्त क्रिया
करना	करने वाला	लाना	लाने वाला आदि

(2) क्रिया के सामान्य रूप में 'न' का 'मा' हटा कर 'सार' या 'हार' जोड़ देते हैं ; जैसे –

सामान्य क्रिया	कृदन्त क्रिया	सामान्य क्रिया	कृदन्त क्रिया
मिलना	मिलनसार	पालना	पालनहार आदि

(3) धातु के मूल रूप के आगे नीचे लिखे प्रत्यय जोड़ने से –

मूलधातु	प्रत्यय	कृदन्त शब्द
1. लड़	आका	लड़ाका
2. झगड़	आलू	झगड़ालू आदि

(2) कर्मवाचक (Objective Nouns) – जिनसे बनी हुई संज्ञा से क्रिया के कर्म का बोध हो; जैसे–

धातु	प्रत्यय	कृदन्त शब्द
1. रेत	ई	रेती
2. फाँस	ई	फाँसी आदि

(3) भाववाचक (Abstract Nouns) – जिसने बनी हुई संज्ञाओं में भाव अर्थात् क्रिया के अर्थ का बोध हो; जैसे–

धातु	प्रत्यय	कृदन्त शब्द
1. चोर	ई	चोरी
2. मिल	आप	मिलाप आदि

(4) क्रिया द्योतक (Verbal Nouns) – जिसमें क्रिया के समान भूत अथवा वर्तमान काल वाचक अव्यय बनते हैं; जैसे–

प्रत्यय	कृदन्त शब्द	प्रत्यय	कृदन्त शब्द
1. ता	सीता	या	दिया
2. ती	चलती	अन	भोजन आदि

तद्धित प्रत्यय (Nominal Secondary Derivations)

जो प्रत्यय शब्दों के अन्त में जुड़ कर नए शब्द बनाते हों उन्हें तद्धित प्रत्यय कहते हैं । तद्धित प्रत्यय बहुत हैं । मुख्य तद्धित प्रत्यय निम्नलिखित हैं–

(1) कर्तृवाचक (Agent Nouns) – जिनसे बनी हुई संज्ञाओं से कर्ता का बोध हो ; जैसे–

प्रत्यय	कृदन्त शब्द	प्रत्यय	कृदन्त शब्द
1. आर	सुनार	गर	कारीगर
2. इया	आढतिया	एरा	सपेरा आदि

(2) भाववाचक (Abstract Nouns) – जिनसे बनी हुई संज्ञाओं से भाववाचक क्रिया के अर्थों का बोध हो; जैसे –

प्रत्यय	कृदन्त शब्द	प्रत्यय	कृदन्त शब्द
1. आई	भलाई	आस	मिठास
2. आपा	बुढ़ापा	आयत	बहुतायत आदि

(3) सम्बन्ध वाचक (Nouns Showing Relations) – जिनसे बनी हुई संज्ञाएं परस्पर सम्बन्ध बताती हैं; जैसे–

प्रत्यय	कृदन्त शब्द	प्रत्यय	कृदन्त शब्द
1. ओई	बहनोई	एरा	चचेरा
2. जा	भतीजा, भानजा	या	भइया आदि

(4) लघुता वाचक (Diminutives) – जिनसे बनी हुई संज्ञाओं से लघुता का बोध हो; जैसे–

प्रत्यय	कृदन्त शब्द	प्रत्यय	कृदन्त शब्द
1. इया	लुटिया	ई	पहाड़ी
2. ड़ा	मुखड़ा	ड़ी	पगड़ी आदि

(5) क्रमवाचक (Nouns Showing Order) – क्रम का बोध कराने वाले; जैसे–

प्रत्यय	कृदन्त शब्द	प्रत्यय	कृदन्त शब्द
1. ला	पहला	रा	दूसरा, तीसरा
2. आ	चौथ	वां	पाँचवाँ आदि

(च) आपत्य वाचक (Descendants) – सन्तान का बोध कराने वाले; जैसे–

प्रत्यय	कृदन्त शब्द	प्रत्यय	कृदन्त शब्द
1. पाण्डु	पाण्डव	द्रुपद	द्रौपद
2. कुरु	कौरव	मनु	मानव आदि

(7) स्थान वाचक (Inhabitant or Resident) – स्थान बताने वाले ; जैसे–

प्रत्यय	कृदन्त शब्द	प्रत्यय	कृदन्त शब्द
1. पंजाब	पंजाबी	मुलतान	मुलतानी
2. मद्रास	मद्रासी	अमृतसर	अमृतसरिया आदि

(8) व्यवसाय वाचक (Profession) – पेशा बताने वाले ; जैसे –

प्रत्यय	कृदन्त शब्द	प्रत्यय	कृदन्त शब्द
1. ई	तेली	एरा	कसेरा, ठठेरा
2. हारा	लकड़हारा	आ	मछुआ आदि

(9) सादृश्य वाचक –

प्रत्यय	कृदन्त शब्द	प्रत्यय	कृदन्त शब्द
सा	लालसा	हरा	सुनहरा आदि

विशेष – तद्धित अव्ययों से तीन प्रकार के शब्द बनते हैं ।

1. अव्ययों, संज्ञाओं, सर्वनामों और विशेषणों में प्रत्यय लगा कर बनाये जाते हैं; जैसे–

बदल + ए = बदले, य् + ओं = यों, बहुत + एरा = बहुतेरा ।

2. भाववाचक संज्ञा तथा संज्ञावाचक शब्द – ये संज्ञाओं और विशेषणों के प्रत्यय लगाने से बनाये जाते हैं; जैसे–

लोहा + आर = लोहार, सोना + आर = सुनार, मीठा + आस = मिठास आदि ।

3. विशेषण – ये संज्ञाओं, सर्वनामों और अव्यय में प्रत्यय लगाने से बनाये जाते हैं; जैसे –

झाड़ू + वाला = झाड़ू वाला, व् + ऐसा = वैसा आदि ।

3. समास (Compounds)

परस्पर सम्बन्ध रखने वाले दो अथवा दो से अधिक शब्दों के मेल का नाम समास है। मेल से बने शब्दों को समस्त अथवा सामासिक शब्द कहते हैं।

समास रीति – समास करते समय समस्त शब्दों के साथ लगे हुए विभक्ति के वाक्यों अर्थात् कारकों को हटा देते हैं। इसके अतिरिक्त सम्बन्ध बनाने वाले शब्दों का अलोप कर देते हैं; जैसे –

चन्द्र जैसा मुख = चन्द्रमुख महान् है आत्मा जिसकी = महात्मा आदि

विग्रह (Dissolution of the Compound) – समास के कारण जुड़े हुए समस्त शब्द के भागों को पृथक् करके पूर्ववत् कारक चिह्न लगा कर उनके पारस्परिक सम्बन्ध को स्पष्ट करने की रीति का नाम विग्रह है; जैसे–

माँ-बाप = माँ और बाप

राजपुत्र = राजा का पुत्र

कमलनयन = कमल जैसे हैं नयन जिसके आदि।

समास के भेद

(1) अव्ययी भाव (Adverbial Compound)

(2) तत्पुरुष (Determinative Compound)

(3) द्वन्द्व (Coupative or Compound)

(4) बहुब्रीहि (Attributive Compound)

सामासिक शब्द के दो खण्डों में से कभी पहला प्रधान होता है और कभी दूसरा, कभी दोनों खण्ड प्रधान होते हैं और कभी कोई खण्ड प्रधान नहीं होता। इस दृष्टि से समास के मुख्य चार भेद हैं–

समस्त शब्द – समास करने में जो स्वतंत्र शब्द बनता है उसे समस्त शब्द कहते हैं। जैसे–राजपुरुष।

व्यस्त पद – समास रहित शब्दों को व्यस्त शब्द कहते हैं; जैसे–राजा का पुरुष।

(क) अव्ययी भाव (Adverbial Compound) – जिस समाज का पहला खण्ड प्रधान हो, उसे अव्ययी भाव समास कहते हैं। स्मरण रहे कि इस

समास का पहला खण्ड अव्यय होता है अथवा समास होने के पश्चात् अव्यय हो जाता है ; जैसे–

यथाशक्ति = शक्ति के अनुसार । यथामति = मति के अनुसार ।
यथाबुद्धि = बुद्धि के अनुसार । यथाविधि = विधि के अनुसार ।

(ख) तत्पुरुष समास (Determinative Compound) – जिस समास का दूसरा खण्ड प्रधान हो उसे तत्पुरुष समास कहते हैं । क्योंकि इस समास के पहले खण्ड से कर्त्ता कारक को छोड़ कर अन्य सभी कारकों की विभक्ति का लोप हो जाता है इसलिए जिस कारक की विभक्ति का लोप हो जाता है उसी कारक के अनुसार उस समास का नाम हो जाता है । इसी दृष्टि से तत्पुरुष समास के निम्नलिखित भेद हैं ।

1. कर्म तत्पुरुष (द्वितीया)

शरण में आया हुआ = शरणागत । गृह को गया हुआ = गृहगत आदि

2. करण तत्पुरुष (तृतीया)

ईश्वर द्वारा दिया हुआ = ईश्वरदत्त । तुलसी द्वारा कृत = तुलसीकृत ।

3. सम्प्रदान तत्पुरुष (चतुर्थी)

हवन के लिए सामग्री = हवन सामग्री ।
यज्ञ के लिए काष्ठ = यज्ञकाष्ठ आदि ।

4. अपादान तत्पुरुष (पंचमी)

भय से भीत = भयभीत । धर्म से भ्रष्ट = धर्मभ्रष्ट आदि ।

5. सम्बन्ध तत्पुरुष (षष्ठी)

देश का उद्धार = देशोद्धार । घोड़े की दौड़ = घुड़दौड़ आदि ।

6. अधिकरण तत्पुरुष

वन में वास = वनवास । आप पर बीती = आपबीती आदि ।

तत्पुरुष समास के अन्य भेद

1. कर्मधारय (Apposition Compound) – जिनमें उपमान-उपमेय विशेषण-विशेष्य (जिसकी उपमा दी जाये उसे उपमेय कहते हैं) का समास होता है, अथवा जिसका पहला खण्ड दूसरे खण्ड का वर्णन करता है ; जैसे –

घन जैसा श्याम = घनश्याम उपमान

चन्द्र जैसा मुख = चन्द्रमुख उपमेय
कमल जैसे नयम = नीलकमल उपमेय
नीला है जो कमल=नीलकमल विशेषण
लाल है जो मिर्च = लालमिर्च विशेष्य आदि ।

2. द्विगु (Numeral Compound) – जिस कर्मधाय समास का प्रथम खण्ड संख्यावाचक विशेषण हो और जिससे किसी समुदाय का बोध होता हो उसे द्विगु समास कहते हैं । जैसे–

तीन लोकों का समाहार = त्रिलोकी
पंचवटी का समाहार = पंचवटी
तीन भुवनों का समाहार= त्रिभुवन
चार मासों का समाहार = चौमासा आदि ।

नोट – जहाँ संख्यावाचक शब्द पहले हों, किन्तु समुदाय (समूह) अर्थ न हो, वहाँ द्विगु समास नहीं होता ; जैसे –दोआबा, पंजाब, दशमूल, चतुर्मुख ।

पहचान – 'दोआबा' में से दो आब (सतलुज और व्यास) निकाल देने पर भी नगर ग्राम जनता आदि बाकी रही है, अतः प्रतीत होता है कि यह दो आब (पानी) का समूह नहीं ।

अठन्नी में से आठ आने निकाल लेने पर बाकी कुछ नहीं बचता । अतः प्रतीत होता है कि अठन्नी में आठ आनों का समूह है । दोआबा, पंजाब आदि में ऐसी स्थिति नहीं ।

3. नञ् समास – (Negative Compound) – जिस समास में नञ् का शब्दों से समास होता है, उसे नञ् समास कहते हैं । जब नञ् स्वरों में पूर्व आता है तो 'अन' बन जाता है और व्यंजनों से पूर्व आता है, तब उसे 'अ' हो जाता है; जैसे–

न + कारण = अकारण । न + सत्य = असत्य ।
न + नित्य = अनित्य । न + इष्ट = अनिष्ट आदि ।

4. मध्यम पद लोपी समास (कर्मधारय का उपभेद) – जिस समास के दोनों खण्डों से मध्यवर्ती शब्द का लोप हो जाये, उसे मध्यम पद लोपी समास कहते हैं; जैसे–

घृत में मिश्रित अन्न = घृत्तान्न ।

दही में डुबा हुआ बड़ा = दहीबड़ा आदि ।

5. अलुप तत्पुरुष – जिस समास में पूर्व खण्ड की विभक्ति का लोप न हो; जैसे–

युधिष्ठिर = युद्ध में स्थिर विश्वम्भर = विश्व को भरने वाला ।

6. उपपद समास – जिस समास में उत्तर खण्ड क्रियावाचक अथवा ऐसा शब्द हो जो पृथक् प्रयुक्त न होता हो उसे उपपद समास कहते हैं; जैसे–

जलद = जल देने वाला । धनद = धन देने वाला आदि ।

(ग) द्वन्द्व समास (Compative or Co-ordinative Compound)– जिस समास के दोनों खण्ड प्रधान हो, विग्रह करने पर जिसमें 'और', 'अथवा' का प्रयोग होता है जैसे–

सीता और राम = सीता राम ।

राम और लक्ष्मण = राम लक्ष्मण आदि ।

(घ) बहुब्रीहि समास (Possessive Compound) – जिस समास का कोई भी खण्ड प्रधान न हो बल्कि समस्त शब्द अपने खण्डों से भिन्न किसी अन्य पद का विशेषण हों, उसे बहुब्रीहि समास कहते हैं । हिन्दी भाषा में इस समास के विग्रह में वाला, वाली लगाते हैं; जैसे–

तीन रंग हैं जिसके अथवा तीन रंगों वाला = तिरंगा (झंडा) ।

पीले हैं कपड़े जिसके अथवा पीले कपड़ों वाला = पीताम्बर आदि ।

विशेष – कर्मधारय और बहुब्रीहि में भेद–

कर्मधारय में समस्त पद का प्रथम भाग दूसरे भाग का विशेषण या उपमान होता है । परन्तु बहुब्रीहि में समस्त पद किसी अन्य का विशेषण होता है ।

11. सन्धि (Loss of Assimilation Letters)

जो निर्दिष्ट वर्णों के आस-पास आने पर उनका आपस में मेल हो जाने से जो विकार उत्पन्न होता है, उसे सन्धि कहते हैं। सन्धि निम्नलिखित तीन प्रकार की होती है–

1. स्वर सन्धि – स्वर से परे स्वर आने पर जो विकार होता है, उसे स्वर सन्धि कहते हैं। जैसे – विद्या+आलय = विद्यालय, परम + ईश्वर = परमेश्वर

2. व्यंजन सन्धि – व्यंजन से परे स्वर या व्यंजन आने से जो व्यंजन में विकार होता है, उसे व्यंजन सन्धि कहते हैं। जैसे – जगत् +ईश=जगदीश, सम्+कल्प=संकल्प।

3. विसर्ग सन्धि – विसर्ग से परे स्वर या व्यंजन आने से विसर्ग में जो विकार होता है, उसे विसर्ग सन्धि कहते हैं। जैसे निः+पाप=निष्पाप, दुः+गति=दुर्गति।

1. स्वर सन्धि – इसके निम्नलिखित पाँच भेद हैं–

(1) दीर्घ सन्धि – ह्रस्व व दीर्घ अ, इ, उ, ऋ से परे क्रम से यदि वही ह्रस्व व दीर्घ अ, इ, उ, ऋ हो तो दोनों के स्थान में वहाँ दीर्घ स्वर हो जाता है, इसे दीर्घ सन्धि कहते हैं। जैसे– अ+अ = आ, इ+इ = ई, उ+उ = ऊ।

वेद + अंत = वेदांत
हिम + आलय = हिमालय
कवि + इन्द्र = कवीन्द्र
मही + इन्द्र = महीन्द्र
भानु+ उदय = भानूदय
वधु + उत्सव = वधूत्सव

ऋ तथा ऋ की सन्धि के शब्द तो हिन्दी में प्रयुक्त ही नहीं होते।

2. गुण सन्धि – अ या आ से परे यदि ह्रस्व व दीर्घ इ, उ और ऋ हो तो दोनों के स्थान पर क्रम से ए, ओ तथा अर् हो जाता है। इसे गुण सन्धि कहते हैं। जैसे –

देव + इन्द्र = देवेन्द्र
नर + ईश = नरेश
वीर + उचित= वीरोचित
महा + उत्सव = महोत्सव

देव + ऋषि = देवर्षि

महा + ऋषि = महर्षि

3. वृद्धि सन्धि – अ, औ, आ से परे यदि ए, ओ, औ हो तो दोनों के स्थान में क्रम से ऐ, औ हो जाते हैं । इसे वृद्धि सन्धि कहते हैं । जैसे–

एक + एक = एकैक

परम + ऐश्वर्य = परमैश्वर्य

महा + ओज = महौज

वन + औषधि = वनौषधि

4. यण् सन्धि – ह्रस्व और दीर्घ इ, उ, ऋ से परे कोई असमान स्वर हो तो 'इ' और 'अ' को 'य' , 'उ' , और 'अ' को व तथा ऋ को 'र्' हो जाता है । इसे यण् सन्धि कहते हैं । जैसे–

यदि + अपि = यद्यपि

सु + आगत = स्वागत

मातृ + आनन्द = मात्रानन्द

5. अयादि सन्धि – ए, ओ, ऐ , औ से परे स्वर हो तो ए को अय्, ओ को अव् और ऐ को आय् और औ को आव् हो जाता है । इसे अयादि सन्धि कहते हैं । जैसे–

ने + अन् = नयन

भो + अन = भवन

गै + अक = गायक

भौ + ऊक = भावुक

2. व्यंजन सन्धि–

(1) किसी वर्ण के पहले वर्ण से परे यदि कोई स्वर या किसी वर्ग का तीसरा, चौथा वर्ण अथवा य, र, ल, व में से कोई वर्ण हो तो पहले वर्ण को उसी वर्ग का तीसरा वर्ण हो जाता है । जैसे–

दिक् + दर्शन = दिग्दर्शन

अच् + अंत = अजंत

षट् + दर्शन = षड्दर्शन

जगत् + ईश = जगदीश

अप् + ज = अब्ज

(2) किसी वर्ग के पहले या तीसरे वर्ण से परे यदि किसी वर्ग का

पाँचवाँ वर्ण हो तो पहले और तीसरे वर्ण को अपने वर्ग का पांचवां वर्ण हो जाता है; जैसे–

वाक् + मय = वाङ्मय

षट् + मास = षण्मास

जगत + नाथ = जगन्नाथ

अप् + मय = अम्मय

(3) त् और द् को च और छ परे होने पर च्, ज और झ परे होने पर ज्, ट और ठ परे होने पर ट्, ड और ढ परे होने पर ड् और ल परे होने पर ल् हो जाता है; जैसे–

सत् + चिदानन्द = सच्चिदानन्द

शरद् + चन्द्र = शरच्चन्द्र

उद् + छिन्न = उच्छिन्न

उद् + लेख = उल्लेख

(4) त् और द् से परे श् हो तो त् और द् को च् और श् को छ् हो जाता है । जैसे–

सत् + शास्त्र = सच्छास्त्र

उद् + शिष्ट = उच्छिष्ट

उद् + हार = उद्धार

(5) म् के बाद यदि क् से म् तक में कोई वर्ण हो तो म् को अनुस्वार अथवा बाद के वर्ण के वर्ग का पांचवां वर्ण हो जाता है । जैसे–

सम् + कल्प = संकल्प

सम् + चार = संचार

सम् + तोष = संतोष

सम् + बंध = सम्बन्ध

(6) क् से म् तक वर्णों को छोड़ कर यदि और कोई व्यंजन म् से परे हो तो म् को अनुस्वार हो जाता है; जैसे –

सम् + हार = संहार

सम् + वत् = संवत्

(7) स्वर से परे यदि छ आये तो छ के पूर्व च् लग जाता है । इसे आगम कहते हैं । जैसे–

आ + छादन = आच्छादन

वृक्ष + छाया = वृक्षच्छाया

(8) ऋ, र, ष से परे न् को ण् हो जाता है। स्वर, कवर्ग, पवर्ग, अनुस्वार और य, व, ह में से किन्हीं वर्णों के बीच आ जाने पर भी ऋ, ॠ, र् और ष् से परे न् को ण् हो जाता है; जैसे–

भर् + अन् = भरण

भूष + अन् = भूषण

(9) स् से पूर्व अ या आ से भिन्न कोई स्वर हो तो स् को ष् हो जाता है। जैसे –

अभि + सेक = अभिषेक

सु + समा = सुषमा

3. विसर्ग सन्धि–

(1) विसर्ग से परे स्वर और व्यंजन के आने पर विसर्ग में जो विकार होता है, उसे विसर्ग सन्धि कहते हैं, जैसे–

मनः + ताप = मनस्ताप

निः + छल = निष्छल

धनुः + टंकार = धनुष्टंकार

दुः + तर = दुस्तर

(2) यदि विसर्ग के पहले इ, उ और परे क्, ख्, प्, फ् में से कोई हो तो विसर्ग को ष् हो जाता है।

निः + पाप = निष्पाप

दुः + कर = दुष्कर

बहिः + कार = बहिष्कार

निः + कलंक = निष्कलंक

(3) श्, ष् या स् परे होने पर विसर्ग की विकल्प से श, ष हो जाता है; जैसे–

दुः + शासन = दुश्शासन अथवा दुःशासन

निः + शस्त्र = निश्शस्त्र अथवा निःशस्त्र

निः + सन्देह = निस्सन्देह अथवा निःसन्देह

(4) यदि विसर्ग के पहले आ और पीछे भी आ किसी वर्ग का तीसरा, चौथा और पांचवां अक्षर अथवा य, र, ल, व तथा ह में से कोई अक्षर हो तो

पिछले अ और विसर्ग के स्थान पर 'ओ' हो जाता है; जैसे–

अधः + गति = अधोगति

मनः + रथ = मनोरथ

वयः + वृद्ध = वयोवृद्ध

(5) यदि विसर्ग के पहले अ, आ के बिना कोई अन्य स्वर हो और पीछे कोई स्वर अथवा किसी वर्ग का तीसरा, चौथा और पांचवां अक्षर अथवा य, र, ल, व, ह में से कोई अक्षर हो तो विसर्ग को र हो जाता है । जैसे–

निः + बल = निर्बल

बहिः + गमन = बहिर्गमन

निः + गुण = निर्गुण

(6) पुरः, नमः और तिरः शब्दों के बाद 'कार' आ जाए और वाचः के बाद पति आ जाए तो इनकी विसर्गों को स् हो जाता है । जैसे–

वाचः + पति = वाचस्पति

नमः + कार = नमस्कार

(7) यदि विसर्ग में पहले अ हो और विसर्ग के बाद 'अ' के बिना कोई स्वर हो तो विसर्ग का लोप हो जाता है; जैसे–

अतः + एव = अतएव ।

गत वर्षों में वार्षिक परीक्षा में पूछे गए संधिविच्छेद संबंधी प्रश्न

(B.A. Part II P.U.)

अप्रैल 2010–सदैव, तल्लीन, भवन, उज्ज्वल, इत्यादि, महर्षि ।

उत्तर–सदा+एव; तत्+लीन; भौ+अन; उत्+ज्वल; इति+आदि; महा+ऋषि ।

अप्रैल 2011 –सदैव, सत्यार्थ, चरणामृत, मतैक्य, संहार, प्रत्युत्तर, गंगोदक ।

उत्तर–सदा+एव; सत्य+अर्थ; चरण-अमृत; मत+एक्य; सम्+हसा; प्रति+उत्तर; गंगा+उदक ।

अप्रैल 2012–परमेश्वर, सदैव, विद्यालय, उज्ज्वल, भवन, महर्षि

उत्तर–परम+ईश्वर; सदा+एव; विद्या+आलय; उत्+ज्वल; भौ+अन; महा+ऋषि ।

अप्रैल 2013–हिमालय, कवीन्द्र, रमेश, एकैक, जगदीश, संकल्प

उत्तर–हिम+आलय; कवि+इन्द्र; रमा+ईश; एक+एक; जगत्+ईश; सम्+कल्प ।

12. शब्दभण्डार

(1) समानकृति भिन्नार्थक शब्द–

कुछ शब्द ऐसे हैं जिनका उच्चारण बहुत कुछ समान होता है, किन्तु उनके अर्थ में भेद होता है । ऐसे शब्द नीचे दिये जाते हैं ।

अणु – परमाणु
अनु – पीछे
अंस – कन्धा
अंश– भाग
अवधि – मियाद
अवधी – अवध की भाषा
आकार – शकल
आकर – खान
और – अन्य
ओर – तरफ
अन्न – अनाज
अन्य – और
अनिष्ट – अमंगल
अनिष्ठ – निष्ठा से रहित
अनल – अग्नि
अनिल – वायु
अर्ध – मूल्य
अर्घ्य – जलार्पण, स्वागत
अविराम – लगातार
अभिराम – सुन्दर
अभय – निर्भय
उभय – दोनों
अस्र – रक्त
अस्त्र – शस्त्र
अवलम्ब – सहारा
अविलम्ब – शीघ्र
आदि – पहला
आधि – मानसिक रोग
अग – पर्वत
अघ – पाप
कर्म – काम
क्रम – तरतीब
अचला – पृथ्वी
अचल – सम्पत्ति
अन्त – समाप्ति
अन्त्य – अन्तिम
अस्तु – खैर
अस्त – छिपा हुआ
अशित – बिना भार का शस्त्र
असित – काला
अगम – जहाँ जाया न जा सके
आगम – शास्त्र
अधर्म – जो धर्म न हो
विधर्म – अन्य धर्म
अपभोग – बुरा भोग
उपभोग – भोग
अवध – अयोध्या
अवध्य – न मारने योग्य

आर्द्र – गीला
आर्द्रा – एक नक्षत्र
आतप – धूप
आपद् – विपत्ति
अनियमित – नियम रहित
अनियत – अनिश्चित
अज – अजन्मा
अजा – बकरी
अशक्त – असमर्थ
आसक्त – मोहित
आज्ञा – हुकम
अनुज्ञा – अनुमति
अवज्ञा – आज्ञा न मानना
अनुसार – मुताबिक
अनुस्वार – बिन्दी
अयुक्त – अनुचित
आयुक्त – प्रशासकीय अधिकारी
कुल – वंश
कूल – तट
कृति – कार्य
कृती – सफल, धन्य
करता – कर रहा
कर्ता – करने वाला
क्रीत – खरीदा हुआ
कृत – किया हुआ
आसन – बैठने का स्थान
आसन्न – निकट
आदान – ग्रहण
आधान – रखना
इति – यह, समाप्ति सूचक
इति – आपत्ति
उद्धत – उद्दण्ड
उद्यत – तैयार
ऋजु – सरल
रज्जु – रस्सी
ग्रन्थ – पुस्तक
ग्रन्थि – गांठ
उद्धार – मुक्ति
उधार – कर्ज़
अमरण – न मरना
आमरण – मरने तक
उऋण – ऋण मुक्त
ऊर्ण – ऊन
आकाश – ऊपर का नीला भाग
अवकाश – फुर्सत
इन्दु – चन्द्र
इन्द्र – देवराज
आयत – अधीन
आयात – खरीदा जाना
अग्रणी – अगुआ
अग्नि – आग
अचिर – शीघ्र
अचीर – निर्वस्त्र
कौर – ग्रास, बुर्की
कोर – किनारा
चतुर – चार
चतुर – कुशल

जलद – बादल
जलज – कमल
तरणी – नौका
तरणि – सूर्य
तुरंग – अश्व
तरंग – लहर
द्वीप – टापू
द्विप – हाथी
धात्री – माता
धरित्री – पृथ्वी
निर्जर – देवता
निर्झर – झरना
दूत – सन्देशदाता
द्यूत – जुआ
दार – पत्नी
द्वार – दरवाजा
द्रव्य – धन
द्रव – पिघली हुई वस्तु
धुनि – नदी
ध्वनि – शब्द
नव – नवीन, नौ
नभ – आकाश
पाणी – हाथ
पानी – जल
परुष – कठोर
पुरुष – मनुष्य
परिणीत – विवाहित
प्रणीत – रचित
परिहार – त्याग, खण्डन
प्रहार – वार करना
पल्लव – नया पत्ता
पल्वल – जोहड़
प्रसाद – प्रसन्न, देवता का भोग
प्रासाद – महल
प्रकार – भेद, ढंग
प्राकार – किले का कोट
प्रणाम – नमस्कार
परिणाम – फल
बलि – बलिदान
बली – बलवान्
बरस – बरसता
वर्ष – साल, संवत्सर
भाग्य – क़िस्मत
भाग – हिस्सा
मूल – जड़
मूल्य – कीमत
बिना – बग़ैर
वीणा – प्रसिद्ध बाजा
वल्लभ – प्रियतम
बल्लभ – रसोइया
वसन – वस्त्र
व्यसन –ऐब
विजन – निर्जन
व्यजन – पंखा

(2) विपरीतार्थक शब्द (Antonimus)

अकाल	सुकाल
अग्नि	जल
अग्र	पश्च
अतिवृष्टि	अनावृष्टि
अत्यधिक	स्वल्प
अधिक	न्यून
अनाथ	सनाथ
अनुराग	विराग
अनुज	अग्रज
अन्त	आदि
अन्तर्मुखी	बहिर्मुखी
अन्धकार	प्रकाश
अपमान	सम्मान
अर्वाचीन	प्राचीन
अवनति	उन्नति
असीमित	सीमित
अज्ञात	ज्ञात
अगम	सुगम
अज्ञ	विज्ञ
अमृत	विष
अल्प	अधिक
अथ	इति
अधम	उत्तम
आकर्षण	विकर्षण
आकृष्ट	विकृष्ट
आगामी	विगत
आग्रह	विग्रह
आचार	अनाचार
आदर	अनादर
आदान	प्रदान
आदि	अन्त
सुख	दुःख
आमिष	निरामिष
आयात	निर्यात
अधिकार	अनाधिकार
अनुरक्त	विरक्त
अनुमोदन	विरोध
अंतरंग	बहिरंग
अस्त	उदय
अल्पज्ञ	बहुज्ञ
अगम	सुगम
अपेक्षा	उपेक्षा
अनुकूल	प्रतिकूल
अगोचर	गोचर
अपना	पराया
अभिमानी	विनम्र
अमावस्या	पूर्णिमा
अरुचि	सुरुचि
अर्पण	ग्रहण
अवनि	आकाश
अवसान	उदय
अस्वस्थ	स्वस्थ
अनुराग	विराग
अनुमति	विमति
अनन्त	सीमित

अधीन	स्वतन्त्र	उच्च	नीच
आधुनिक	प्राचीन	उपसर्ग	प्रत्यय
आशा	निराशा	उत्पत्ति	प्रलय
आर्य	अनार्य	उन्नयन	अवनयन
आस्था	अनास्था	उत्तीर्ण	अनुतीर्ण
आरम्भ	अन्त	उद्यम	आलस्य
आदर्श	यथार्थ	उपादेय	अनुपादेय
आतप	छाया	उन्मूलन	अवमूलन
आवाहन	विसर्जन	उत्साह	निरुत्साह
आभ्यान्तर	बाह्य	एक	अनेक
आसक्त	अनासक्त	एकता	अनेकता
आर्द्र	शुष्क	एकत्र	सर्वज्ञ
आलसी	कर्मठ	ऐक्य	अनैक्य
आदर	अनादर	ऋज्	कुटिल
आलोक	अन्धकार	कृतज्ञ	कृतघ्न
आशा	निराशा	कृत्रिम	प्राकृतिक
आहार	निराहार	क्रय	विक्रय
आदि	अन्त	क्रिया	प्रतिक्रया
इष्ट	अनिष्ट	कृश	स्थूल
इहलोक	परलोक	आत्मा	अनात्मा
उऋण	ऋणी	उद्विग्न	शान्त
उग्र	शान्त	उद्धत	विनीत
उचित	अनुचित	उर्वरा	अनुपजाऊ
उत्कर्ष	अपकर्ष	उदयांचल	अस्तांचल
उत्थान	पतन	उपचय	अपचय
उत्तम	अधम	ऐहिक	पारलौकिक
उपकार	अपकार	ऐतिहासिक	अनैतिहासिक
उत्कृष्ट	निकृष्ट	ऐश्वर्य	दारिद्रय

ऋतु	अवृत	निरामिष	सामिष
कृपण	उदार	निर्लज्ज	सलज्ज
कटु	मधुर	नैसर्गिक	कृत्रिम
कुटिल	सरल	प्रसन्न	रुष्ट
कंचन	माटी	प्रलय	सृष्टि
खेचर	जलचर, भूचर	प्रवृत्ति	निवृत्ति
गौरव	लाघव	प्रकृत	कृत्रिम
तीक्ष्ण	कुंठित	प्राचीन	अर्वाचीन
तिमिर	प्रकाश	पालक	पीड़क
ताप	शीत	पावन	अपावन
तम	आलोक	भूत	भविष्य
देव	दानव	मितव्ययता	अपव्ययता
कलुष	अकलुष	रचनात्मक	ध्वंसात्मक
खल	सज्जन	रंच	अधिक
गरल	सुधा	रत	विरत
ग्राह्य	त्याज्य	बाह्य	आभ्यांतर
जंगम	स्थावर	मिलन	विरह
जाति	विजाति	रुदन	हास
ज्वार	भाटा	व्यष्टि	समष्टि
तामसिक	सात्विक	वयस्क	अवयस्क
ध्वंस	निर्माण	विकास	ह्रास
पतिव्रता	कुलटा	विपन्न	सम्पन्न
परकीय	स्वकीय	शासक	शासित
परुष	कोमल	शिव	अशिव
प्रसाद	विषाद	साधर्म्य	वैधर्म्य
दीर्घकाय	कृशकाय	वैमनस्य	सौमनस्य
दीर्घ	ह्रस्व	संगठन	विगठन
धीमान्	निर्बुद्धि	सुधा	गरल
निर्दय	सहृदय		

(3) समानार्थक शब्द (पर्यायवाची शब्द)

अंक गोद, संख्या, चिह्न, अध्याय ।
अंग भाग, उपाय, देह, अवयव ।
अक्ष सूर्य, धुरी, रथ, ज्ञान, आत्मा ।
अक्षर वर्ण, शब्द, अविनाशी, शिव ।
अग्र सिरा, मुख्य, अगुआ ।
अच्छा उचित, भद्र, शुभ, श्रेष्ठ ।
अज शिव, दशरथ के पिता, कामदेव, ब्रह्मा, ज्वाला ।
अजित अज्ञेय, अदम्य, अपराजित, दुर्दान्त ।
अग्नि आग, पावक, अनल, वह्नि, कृशानु, ज्वाला, हुताशन ।
अतिथि अभ्यागत, पाहुन, आगन्तुक ।
अधम नीच, पतित, निकृष्ट ।
अधर होंठ, धरती, आसमान के बीच का भाग ।
अनार दाड़िम, शुकप्रिय, रामबीज ।
अनी सेना, दल, कटक, नोक, चमू ।
अनुचर दास, सेवक, नौकर, किंकर, भृत्य ।
अनुपम अपूर्व, अनोखा, अनूठा, अद्‌भुत ।
अपवाद कलंक, निन्दा, नियम से बाहर ।
अर्थ हेतु, धन, कारण, प्रयोजन ।
अम्बुज कमल, नीरज, जलज, पंकज ।
अमृत पीयूष, सुधा, सोम, अमिय ।
अश्व घोड़ा, तुरंग, सैंधव, वाजि ।
अहंकार घमण्ड, अभिमान, दर्प, दम्भ ।
सुख हर्ष, मोद, प्रसन्नता, उल्लास ।
आह्‌वान चुनौती, बुलावा, ललकार, पुकारना ।
इच्छा चाह, कामना, मनोरथ, आकंक्षा, अभिलाषा, लालसा ।
इन्द्र देवेन्द्र, सुरेन्द्र, देवराज, पुरन्दर, सुरपति, शचीपति ।

इन्दु चन्द्रमा, मयंक, राजा अज की पत्नी ।
ईश्वर प्रभु, परमेश्वर, परमात्मा, जगदीश ।
उत्तर उत्तर दिशा, जवाब, पीछे ।
उत्सव पर्व, समारोह
उद्दण्ड अभयार्द, अविनीत, असभ्य, धृष्ट ।
उदार उच्चाशय, महान्, दानशील ।
उद्यान उपवन, फुलवारी, बग़ीचा, बाग़, वाटिका, आराम ।
उद्योग उद्यम, धन्धा, परिश्रम, प्रयत्न, प्रयास ।
उन्नति उत्थान, उत्कर्ष, विकास, वृद्धि, समृद्धि ।
ऋषि महामुनि, सन्त, मन्त्रद्रष्टा ।
एकता संगठन, मेल, मिलाप ।
कंचन सोना, कांच, धन-दौलत, निर्मल ।
कक्ष दोष, सूखी घास, कमरा, बगल ।
कनक सोना, धतूरा, गेहूं ।
कपट छल, धोखा, वंचना ।
कपड़ा चीर, पट, वसन, वस्त्र, परिधान ।
कमल अरविन्द, इन्दीवर, कंज, जलज, नलिन, पंकज, सरोज, पदम, सरसिज, पण्डरीक ।
कर हाथ, हाथी की सूंड, किरण, टैक्स ।
कर्ण कुन्ती पुत्र, कान, पतवार, त्रिकोण में सामने की भुजा ।
कल सुन्दर, चैन, मशीन, बीता हुआ दिन, आने वाला दिन ।
कला सोलहवां भाग, हुनर, शोभा, तेज, गुण, छन्द की मात्रा ।
कष्ट संकट, आपत्ति, आपदा, दुःख, पीड़ा, विवाद ।
कान्ति आभा, छटा, प्रभा, विभा, शोभा, सुषमा ।
काम इच्छा, कार्य, कामदेव, पेशा, धन्धा ।
कामदेव अनंग, कंजन, कन्दर्प, मदन, मनसिज, मनोज, रतिपति ।
किरण मयूख, मरीचि, कर, रश्मि, अंशु ।

कुल	समस्त, सब वंश, खानदान
कृपा	दया, अनुग्रह, अनुकम्पा ।
कृष्ण	केशव, गिरिधर, माधव, दामोदर, मुरलीधर, वासुदेव, श्याम, नंदनंदन, गिरिधर ।
केसर	कुंकुम, पराग, परिमल, मकरन्द, किंजल्क ।
कोमल	नर्म, मृदुल, सुकुमार, मंजुल ।
कोयल	कोकिला, पिक, वसन्तदूत, परभूत, काकलोक, वनप्रिय, परभूत ।
कौशल	कुशलता, चतुरता, दक्षता, पटुता, प्रवीणता ।
गणेश	एकदन्त, गजबदन, गजानन, गणपति, गौरी पुत्र, गणनायक, विनायक, लम्वोदर, वक्रतुण्ड, शर्पकर्ण, गजाधिप ।
गदहा	खर, गदर्भ, वैशाख, नन्दन, लम्ब कर्ण ।
गृह	घर, आगार, आयतन, आवा, ओक, धाम, गेह ।
घर	मकान, आवास, कुल, बैठने का स्थान
घी	घृत, आज्य, सर्पि, हव्य ।
घोड़ा	सैंधव, तुरंग, अश्व, घोटक, हय ।
चन्द्रमा	इन्दु, कलाधर, कला निधि, निशाकर, मयंक ।
चन्द्रिका	चान्दनी, ज्योत्स्ना, कौमुदी ।
चतुर	कुशल, दक्ष, निपुण, प्रवीण, विशारद ।
चपला	लक्ष्मी, बिजली, चंचल स्त्री ।
छन्द	अभिलाषा, ढंग, रंग, स्वेच्छाचार ।
छली	कपटी, धूर्त, मायावी ।
जमुना	कालिन्दी, तरणिजा, रवितनया, कृष्णा ।
जीभ	जिह्वा, रसना, रसज्ञा ।
जलन्धर	सागर, बादल ।
तन	अंग, काया, गात, गात्र, शरीर, देह ।
तम	अन्धेरा, तमोगुण, पाप, राहु ।
तरंग	लहर, वीचि, उर्मि, मौज, हिलौर ।

तारा	बृहस्पति की पत्नी, बाली की पत्नी, आँख की पुतली, नक्षत्र ।
तालाब	तड़ाग, सर, सरोवर, पुष्कर ।
तीर	बाण, नदी का किनारा, शर, इषु ।
द्विज	ब्राह्मण, भूदेव, विप्र, पक्षी, दांत, चन्द्रमा ।
दीन	ग़रीब, बेचारा, निर्धन, मलिन ।
दुर्गा	चण्डिका, सिंहवाहिनी, चामुण्डा, कामाक्षी ।
दूध	दुग्ध, अमृत, क्षीर, पय, स्तन्य ।
द्रौपदी	पांचाली, श्यामा, कृष्णा, नित्य, यौवना ।
धनुष	चाप, धनु, कोदंड, पिनाक, शरासन, सारंग ।
धरती	धरणी, पृथ्वी, मही अवनि, अचला, वसुधा ।
नदी	सरिता, तटनि, तरंगिनी, प्रवाहिनी ।
पक्षी	अण्डज, खग, विहग, पखेरु, शकुन्त ।
पर्वत	अचल, नग, गिरि, पहाड़, भूधर ।
पानी	जल, कान्ति, प्रतिष्ठा ।
पार्वती	गौरी, उमा, गिरिजा, दुर्गा, भवानी ।
पुत्र	तनय, बेटा, सुत, नन्दन ।
पुष्प	फूल, सुमन, प्रसून, कुसुम, पहुप ।
मदिता	सुरा, शराब, आसव, कदम्बरी ।
स्त्री	अबला, रमणी, अंगना, वनिता, नारी, महिला, वामा ।
सूर्य	रवि, दिवाकर, दिनकर, भास्कर, भानु ।
मछली	मीन, जलज, जलूसी, मकर, मत्स्य ।
आँख	नेत्र, नयन, अक्षि, लोचन, चक्षु, दृग ।
आकाश	अम्बर, गगन, नभ, व्योम, अंतरिक्ष ।

(4) एक ही शब्द (One word subsitution)

जिसका आदि न हो	अनादि
जिसका अन्त न हो	अनन्त
जो कभी बूढ़ा न हो	अजर
जिसके पार न देखा जा सके	अपारदर्शक
जो बिना वेतन के काम करे	अवैतनिक
जो शब्दों द्वारा व्यक्त न किया जा सके	अनिवर्चनीय
जो कुछ भी न जानता हो	अज्ञ
जो कानून के विरुद्ध हो	अवैध
पीछे-पीछे गमन करने वाला	अनुगामी, अनुयायी
अनुकरण के योग्य	अनुकरणीय
गुरु के समीप रहने वाला विद्यार्थी	अन्तेवासी
अन्य से सम्बन्ध न रखने वाला	अनन्य
जिसे भेदा न जा सके	अभेद्य
एक-एक अक्षर के अनुसार	अक्षरशः
जिसके वास का किसी को पता न हो	अज्ञातवास
दूसरों के मन की बात जानने वाला	अन्तर्यामी
जो कुछ काम न कर सके	अकर्मण्य
जो साधारण नियम से भिन्न हो	अपवाद
जिस पर मुक़द्दमा चल रहा हो	अभियुक्त
जो दिखाई न दे	अदृश्य
जिसके समान कोई दूसरा न हो	अदृश्य
जो एक जाति से दूसरी जाति के बीच हो	अन्तर्जातीय

जो उचित समय पर न हो	असामयिक
जिसका उल्लंघन करना उचित नहीं	अनुल्लंघनीय
जिसकी तुलना न की जा सके	अतुलनीय
जिस पर विश्वास करना उचित न हो	अविश्वसनीय
अण्डे से पैदा होने वाला	अण्डज
जिसकी गहराई का पता न हो	अथाह
बहुत अधिक नंगी शृंगार की बात	अश्लीलता
जो त्यागने योग्य न हो	अत्याज्य
जिसकी इच्छा नहीं करनी चाहिए	अवांछनीय
जिसका मन कहीं और हो	अन्यमनस्क
परम्परा से सुनने में चली आई हुई बात	अनुश्रुति
जो ग्रहण करने के योग्य न हो	अग्राह्य
अपेक्षा (परवाह) करने योग्य	अपेक्षणीय
जो इन्द्रियों से न जाना जाए	अतीन्द्रिय
जो भूलने के योग्य न हो	अविस्मरणीय
जो अपनी हत्या आप करता हो	आत्मघाती
आशा से परे, आशा से बढ़कर	आशातीत
श्रद्धा से जल पीना	आचमन
आचार्य की पत्नी	आचार्याणी
आयुर्वेद से सम्बन्ध रखने वाला	आयुर्वैदिक
आदि से अन्त तक	आद्योपान्त
नया आविष्कार करने वाला	आविष्कारक
जो इन्द्रियों के ज्ञान के बाहर हो	इन्द्रियातीत

जमीन फोड़ कर पैदा होने वाला	उद्भिज
दूसरे के खाने के बाद बची वस्तु	उच्छिष्ट
जो मरने के बाद सम्पत्ति का अधिकारी हो	उत्तराधिकारी
ऐसी भूमि जो उपजाऊ न हो	ऊसर
अपनी इच्छा से किया जा सकने वाला कार्य	ऐच्छिक
इन्द्रियों से सम्बन्ध रखने वाला	ऐन्द्रिय
जो किये हुए उपकार को माने	कृतज्ञ
जो किये हुए उपकार को न माने	कृतघ्न
जो अच्छे कुल में पैदा हुआ हो	कुलीन
जिसका प्रयोजन सिद्ध हो चुका हो	कृतकार्य
कमल के समान नयनों वाला	कमलनयन
बुरा आचरण करने वाला	दुराचारी, कदाचारी
समय पर काम चलाने वाला	कामचलाऊ
जिसे कर्त्तव्य न सूझ रहा हो	किंकर्त्तव्यविमूढ
रात और सन्ध्या के बीच का समय	गोधूलि
हाथी के मुख के समान मुख वाला	गजानन
आकाश को चूमने वाला	गगन चुम्बी
किसी को तुच्छ समझ कर अनादर करना	तिरस्कार
दस वर्षों का समूह	दशाब्दी
जिसे दण्ड दिया गया हो	दण्डित
जो व्यक्ति हर काम को देर से करे	दीर्घसूत्री
जो दर्शन शास्त्र का विद्वान हो	दार्शनिक
जिसका जन्म दो प्रकार से हो	द्विज

लोगों में परम्परा से आई कथा	दंतकथा
जंगल की आग	दावानल
जिसका दमन कठिन हो	दुर्दम्य
न्यायशास्त्र को जानने वाला	नैयायिक
जिसे अक्षरों का ज्ञान न हो	निरक्षर
जिसके हृदय में ममता न हो	निर्मम
जो दया से रहित हो	निर्दय
रात्रि में घूमने वाला	निशाचर
जो आकाश में घूमता है	नभचर
जो किसी का अंकुश न माने	निरंकुश
जिसे कोई उत्तर न आये	निरुत्तर
जो स्त्री सन्तान उत्पन्न करने योग्य न हो	बांझ
जिसके हाथ में चक्र हो	चक्रपाणि
जिसकी चार भुजाएं हों	चतुर्भुज
जो देर तक स्मरण रखने योग्य हो	चिरस्मरणीय
जिसकी चिन्ताएं दूर हो गई हों	चिन्तामुक्त
जानने की इच्छा रखने वाला	जिज्ञासु
जो व्याकरण का पंडित हो	वैयाकरण
जो न बोल सके	मूक
जो बहुत बोलता हो	वाचाल
जो थोड़ा सुनता हो	वधिर
किसी एक विषय का विद्वान्	विशेषज्ञ
मोक्ष चाहले वाला	मुमुक्षु
बुद्धि ही जिसकी आँखें हों	प्रज्ञाचक्षु
कड़वा बोलने वाला	कटुभाषी
मीठा बोलने वाला	मृदुभाषी

(5) एकार्थ शब्दों में भेद

ऐसे शब्द जो एक अर्थ वाले प्रतीत होते हैं, परन्तु उनके अर्थों में भेद होता है; जैसे–

1.	आचार	चरित्र ।
	व्यवहार	दूसरे के प्रति सलूक ।
2.	मूर्ख	जो समझाने पर न समझे ।
	अनभिज्ञ	जिसे ज्ञान न हो ।
3.	अबला	स्त्री जाति को अबला कहते हैं ।
	निर्बला	बलहीन स्त्री ।
4.	आधि	मानसिक कष्ट ।
	व्याधि	शारीरिक कष्ट ।
5.	अभिवादन	अपने परिचय के साथ जो प्रणाम किया जाता है ।
	नमस्कार	जो प्रणाम बराबर वालों के साथ किया जाता है ।
6.	अपराध	राज्य के नियमों का उल्लंघन करना ।
	पाप	धार्मिक और सामाजिक नियमों का उल्लंघन करना ।
7.	अस्त्र	जो दूर से फैंका जा सके ।
	शस्त्र	जो हाथ में पकड़ कर चलाया जाये ।
8.	अहंकार	गुणों के बिना व्यर्थ घमण्ड ।
	अभिमान	धन, जन और मन पर गौरव प्रकट करना ।
9.	अज्ञ	जिसे पढ़ने लिखने या जानने समझने का अवसर न मिला हो ।
	अनभिज्ञ	जिसे ज्ञान न हो ।
	मूर्ख	जिसमें समझने की क्षमता न हो ।
10.	अलौकिक	जो लोक में न पाया जाए ।
	अस्वाभाविक	जो सृष्टि के नियम के विपरीत हो ।
11.	भ्रम	असावधानी से होने वाली भूल ।
	अशुद्धि	मूर्खतावश की गई भूल ।

12.	व्याख्यान	मौखिक भाषण ।
	अभिभाषण	लिखित भाषण ।
13.	प्रतियोगिता	गुणों के बल पर अपने आप को श्रेष्ठतम सिद्ध करने की इच्छा ।
	प्रतिद्वन्द्विता	गुणों के अभाव में छल-कपट से श्रेष्ठता प्राप्त करने की इच्छा ।
14.	आयु	सम्पूर्ण जीवन ।
	अवस्था	जीवन का वर्षों में माप दण्ड ।
	वय	आयु का पूर्ण हो जाने वाला एक भाग ।
15.	घृणा	दूसरे के बुरे कार्यों पर अरुचि प्रकट करना ।
	ग्लानि	अपने कार्यों के प्रति अपने ऊपर हो रही अरुचि ।
16.	प्रायश्चित	अपनी भूल पर दुःख प्रकट करना ।
	खेद	पश्चाताप ।
	दुःख	कष्ट ।
	शोक	किसी की मृत्यु पर दुःख ।
	विषाद्	बड़ा भारी दुःख ।
	क्षोभ	अनिष्ट के समय प्रसन्नता का अभाव ।
	पश्चाताप	भूल से अनुचित कार्य करने पर खेद प्रकट करना ।
17.	प्रयास	साधारणतः कष्टों का विचार न करके कार्य करना ।
	प्रयत्न	साधारणतः तन मन से कार्य करना ।
	यत्न	तन मन से कार्य करना ।
	चेष्टा	मन से यत्न करना ।
18.	परामर्श	सलाह देना ।
	मन्त्रणा	गुप्त विचारों का आदान प्रदान ।
19.	प्रार्थना	गुरुजनों के सामने विनीत भाव से इच्छा प्रकट करना ।

	निवेदन	दूसरों की इच्छानुसार विनम्र विचार रखना ।
	आवेदन	अपने गुण दिखा कर किसी से काम करवाने के लिए इच्छा प्रकट करना ।
20.	भ्रान्ति	निर्बल या गलत धारणा ।
	सन्देह	मन का अस्थिर या अनिश्चयात्मक विचार ।
21.	उद्योग	व्यवसाय या धन्धा ।
	उद्यम	भरसक प्रयत्न ।
22.	भय	किसी अनिष्ट के विचार से मन में विशेष विचार उत्पन्न होना ।
	आतंक	शरीर और मन में उत्पन्न भय का विचार ।
	त्रास	दूसरे के द्वारा कष्ट देना ।
23.	हृदय	ज्ञानेन्द्रिय ।
	अन्तःकरण	सत् असत् का अनुभव करने वाली इन्द्रिय ।
	चित्त	स्मरण करने की इन्द्रिय ।
24.	कष्ट	शारीरिक विकार ।
	दुःख	मानसिक पीड़ा ।
	खेद	पछतावा ।
25.	कृपा	जो अपने से छोटे पर की जाए ।
	दया	जो किसी दुःखी पर की जाए ।
26.	ग्लानि	अकेलेपन में जो बात अपने मन में चुभे ।
	लज्जा	बुरा काम करने पर छिपाने की इच्छा ।
27.	तर्क	हेतुपूर्वक युक्ति द्वारा विचार ।
	युक्ति	किसी कार्य का हेतु ।
28.	प्रेम	प्यार जो प्रत्येक से हो ।
	स्नेह	जो छोटों से प्रेम हो ।
	वात्सल्य	प्रेम जो बच्चों से हो ।
	श्रद्धा	प्रेम जो बड़ों से हो ।
29.	प्रणय	प्रेम जो स्त्री से हो ।
	आकर्षण	जो किसी के रूप अथवा गुणों के कारण खिंचाव हो ।
21	पत्नी	अपनी विवाहिता स्त्री ।
	स्त्री	प्रत्येक नारी ।

III. वाक्यविचार (Syntex)

1. वाक्य व वाक्यरचना

ऐसा पद-समूह जिससे वक्ता अथवा लेखक का पूरा-पूरा आशय प्रकट हो, उसे वाक्य कहते हैं; जैसे – राम जाता है । श्याम पढ़ता है ।

जिन पदों से वाक्य बनते हैं उनमें नीचे लिखी तीन बातों का होना आवश्यक है–

(क) आकांक्षा, (ख) योग्यता, (ग) आसक्ति ।

(क) आकांक्षा – वक्ता के भाग को पूर्णतः समझने के लिए एक पद सुनते ही दूसरा पद सुनने की जो इच्छा उत्पन्न हो जाती है, उसे आकांक्षा कहते हैं, जैसे–

'श्री नरेन्द्र मोदी' यह पद सुनने के पश्चात् 'हमारे प्रधानमंत्री है' इस पद के सुनने की इच्छा रहती है । इसी प्रकार 'बापू का' यह पद सुन कर 'नाम अमर हो गया है' इस पद को सुनने की इच्छा रहती है ।

(ख) योग्यता – वाक्य के पदों में परस्पर अर्थ-सम्बन्ध के होने का नाम योग्यता है; जैसे – ''मैंने आँखों से सुना और कानों से देखा ।'' इस वाक्य में आँखों से सुनने और कानों से देखने का काम लिया गया है । किन्तु यह दोनों बातें असम्भव हैं; न आँखें सुन सकती हैं और न कान देख सकते हैं । अतः इन पदों में अर्थ-सम्बन्ध की योग्यता नहीं । इसलिए उपरिलिखित पद समूह को वाक्य नहीं कह सकते ।

(ग) आसक्ति – आकांक्षा और योग्यता वाले पदों की समीपता को आसक्ति कहते हैं । स्पष्ट शब्दों में आसक्ति के अर्थ हैं एक पद के साथ दूसरे पद का लिखना अथवा तुरन्त बोलना; जैसे – 'आत्मा' पद के साथ ही 'अमर' है' इस पद का बोलना अथवा लिखना आवश्यक है । पदों के परस्पर एक साथ लिखने अथवा बोलने का नाम आसक्ति है ।

सार यह कि आकांक्षा, योग्यता और आसक्ति वाले पदों के समूह को वाक्य कहते हैं । वाक्यों की शुद्ध रचना के लिए निम्नलिखित बातों का ध्यान

रखना आवश्यक है– (1) अन्वय अथवा मेल, (2) क्रम ।

(1) अन्वय अथवा मेल – ऐसे पद जो वाक्य में प्रयुक्त होते हैं उनका लिंग , वचन, पुरुष, काल आदि के अनुसार परस्पर जो सम्बन्ध रहता है, उसे अन्वय अथवा मेल कहते हैं । वाक्यों में प्रायः निम्नलिखित के सम्बन्ध दृष्टिगोचर होते हैं–

(1) क्रिया का कर्त्ता के साथ

(2) क्रिया का कर्म के साथ

(3) संज्ञा का सर्वनाम के साथ

(4) सम्बन्ध का सम्बन्धी के साथ

(5) विशेषण का विशेष्य के साथ

(1) क्रिया का कर्त्ता के साथ –

(1) साधारणतया यदि कर्त्ता एकवचन हो तो क्रिया उसी वचन में होती है, परन्तु आदर प्रकट करने के लिए क्रिया बहुवचन में आती है; जैसे –नेता जी अभी नहीं पधारे हैं । गुरु जी व्याख्यान दे रहे हैं ।

(2) यदि कर्त्ता एक से अधिक हों और एकवचन में हों तो क्रिया बहुवचन में आती है; जैसे– राम और श्याम पढ़ते हैं, रमेश और गणेश खेलते हैं ।

(3) जब कर्ता विभक्तिरहित हो तो क्रिया कर्ता के अनुसार आती है; जैसे– वह पढ़ता है, तू खाता है ।

(4) यदि विभक्ति के अनेक कर्त्ता बहुवचन में हों तो क्रिया भी बहुवचन में आती है; जैसे – इस मकान में 2 लड़के, 5 लड़कियां और 4 औरतें सो रही हैं ।

(5) यदि वाक्य में बहुत से विभक्ति रहित कर्त्ता और उनके बाद कोई

समुदाय-वाचक शब्द हो तो क्रिया बहुवचन में आती है; जैसे – इस मुहल्ले के बालक, युवक, वृद्ध, स्त्री, पुरुष सब प्रातः सैर को जाते हैं। धनी, निर्धन, मूर्ख, विद्वान् सभी लोग एक न एक दिन संसार छोड़ जाएंगे।

(6) जब वाक्य में बिना विभक्ति के अनेक कर्त्ता हो और उनके मध्य 'मैं', 'या' अथवा 'न' आदि योजक शब्द हों तो क्रिया अन्तिम कर्त्ता के अनुसार आती है; जैसे–मैं या वेद अवश्य आएगा। न रहेगा बांस न बजेगी बांसुरी।

(7) जब एक ही वाक्य में उत्तम पुरुष, मध्यम पुरुष और अन्य पुरुष एक ही क्रिया व कर्त्ता के रूप में आएं तो क्रिया उत्तम पुरुष में आती है; जैसे– हम, तुम और वह एक साथ रहेंगे एक साथ पढ़ेंगे और एक साथ खेलेंगे।

(8) यदि अनेक भिन्न लिंग वाले कर्त्ता बहुवचन में हों तो क्रिया अन्तिम कर्त्ता के अनुसार आती है; जैसे – दो पुरुष, चार स्त्रियां और तीन बालक एक साथ गा रहे हैं और खा रहे हैं।

(9) जब एक ही वाक्य में मध्यम और अन्य पुरुष एक ही क्रिया के कर्त्ता हों तो क्रिया मध्यम पुरुष के अनुसार आती है; जैसे–तुम और मोहन घर चल कर पढ़ो और मैं अभी आता हूँ।

(2) क्रिया का कर्म के साथ–

(1) कर्म वाच्य में क्रिया कर्म के अनुसार आती है; जैसे – हम यहाँ सरकार द्वारा लाए गए हैं और सरकार द्वारा ही आगे पहुँचाए जाएंगे।

(2) भाव वाच्य में क्रिया पुँल्लिग एकवचन अन्य पुरुष के रूप में रहती है; जैसे – मुझ से इस आयु में नहीं पढ़ा जाता। हमसे यहां इस अवस्था में नहीं रहा जाता।

(3) संज्ञा और सर्वनाम का अन्वय–

सर्वनाम जिस संज्ञा के स्थान पर आते हैं, क्रिया के लिंग और वचन

उसी संज्ञा के अनुसार आते हैं; जैसे– आप ने कल समाज में जिस साधु का उपदेश सुना था, वह आज देहली जा रहा है । राम नहीं खेलेगा, क्योंकि वह बीमार है ।

(4) सम्बन्ध और सम्बन्धी का अन्वय –

(1) जब सम्बन्धी अनेक हों तो सम्बन्ध कारक का चिह्न सर्वप्रथम सम्बन्धी के अनुसार होता है; जैसे–उसका धन, स्त्री और बच्चे सभी पाकिस्तान में रह गए हैं ।

(2) जो लिंग और वचन सम्बन्धी के होते हैं वही सम्बन्ध कारक के होते हैं; जैसे – आपका पत्र, रमेश की पुस्तक, गणेश के रुपए ।

(3) यदि सम्बन्धी पद पुँल्लिंग हो और उसके आगे विभक्ति हो तो इसके एकवचन में होने पर भी सम्बन्ध कारक में 'क' और 'र' के बदले 'के' और 'रे' चिह्न लगता है; जैसे – आपके पिता का नाम नगर वाले कभी नहीं भुला सकते । तुम्हारे भाई का नाम लिखा दिया गया है ।

(5) विशेषण और विशेष्य का अन्वय–

(1) विशेषण के लिंग और वचन विशेष्य के अनुसार होते हैं; जैसे – काली कमीज़, नीला घोड़ा, पीला काग़ज़ इत्यादि ।

(2) यदि एक ही विशेषण के कई विशेष्य हों तो विशेषण के लिंग और वचन अपने समीपस्थ विशेष्य के अनुसार होते हैं; जैसे – नई घड़ी और साईकल, नए पाजामें और कमीजें इत्यादि ।

(3) विभक्ति वाले स्त्रीलिंग कर्म कारक का विशेषण प्रायः पुँल्लिंग में होता है; जैसे –पगड़ी को उसने मैला किया है ।

(2) वाक्य क्रम (Sequence)

वाक्यों में शब्दों को अर्थ और सम्बन्ध के अनुसार यथास्थान रखने को क्रम कहते हैं । यदि वाक्य के शब्दों में क्रम न हो तो शब्दों के परस्पर सम्बन्ध टूट जाने से वाक्य का अर्थ ठीक-ठीक समझ नहीं आता । क्रम के कुछ विशेष नियम नीचे दिये जाते हैं ।

(1) वाक्य के पहले कर्त्ता फिर कर्म या पूरक और अन्त में क्रिया को

रखते हैं; जैसे – राम पुस्तक पढ़ता है ।

(2) क्रिया के द्विकर्मक होने पर गौण कर्म पहले और मुख्य कर्म बाद में रखा जाता है; जैसे – राम ने श्याम को पुस्तक दी ।

(3) विशेषण को विशेष्य से पहले रखते हैं; जैसे – सुन्दर बालक, दानी पुरुष, मीठा फल ।

(4) सम्बोधन वाक्य के आरम्भ में आता है; जैसे – हे भगवान्! हमें शक्ति दो ।

(5) क्रिया-विशेषण क्रिया से पूर्व आता है; जैसे –रमेश जल्दी पढ़ता है, शीला धीरे-धीरे चलती है ।

(6) प्रश्नवाचक शब्द उससे पहले रखा जाता है जिसके विषय में मुख्यतया प्रश्न किया जाता है; जैसे – मैं कब आऊँ? तुम क्या लिखते हो?

(7) सम्बन्ध पहले और सम्बन्धी बाद में आता है; जैसे – समाज की पाठशाला, राजा का धर्म ।

(8) पदवी-सूचक शब्द विशेष्य से पहले आता है; जैसे – नोबेल विजेता रविन्द्रनाथ टैगोर ।

(9) पूर्वकालिक क्रियाएं मुख्य क्रिया से पहले आती हैं; जैसे –कृष्ण बलदेव खा कर सो गये हैं । बलदेव खा कर नहाएगा ।

(10) करण, सम्प्रदान, अपादान और अधिकरण, ये चार कारक कर्त्ता और कर्म के बीच में आते हैं । इनमें भी पहले अधिकरण, फिर अपादान, उसके बाद सम्प्रदान और अन्त में करण आता है; जैसे–सोहन ने मोहन के पुत्र को छत से गिरते देखा । लाल बहादुर शास्त्री जी देश के लिए सब प्रकार की सेवा करने को तैयार थे ।

(11) योजक शब्द जिन शब्दों तथा वाक्यों को जोड़ते हैं उनके बीच में आते हैं; जैसे – कमला और विमला, धर्म और अर्थ इत्यादि ।

(3) वाक्य के भेद

वाक्य के निम्नलिखित तीन भेद हैं –

(1) सरल – जिस वाक्य में उद्देश्य और विधेय एक ही हो, उसे सरल वाक्य कहते हैं, जैसे – 'शीला पढ़ती है ।' इस वाक्य में 'शीला' एक ही उद्देश्य और विधेय के विस्तार के कारण बड़ा भी होता है; जैसे– शीला का भाई पुस्तक पढ़ता है ।

(2) मिश्रित वाक्य – जिसमें एक प्रधान वाक्य हो और एक या एक से अधिक उप-वाक्य उसके आश्रित हों, उसे मिश्रित वाक्य कहते हैं, जैसे – उसने कहा था कि मैं कल नहीं आऊँगा । इसमें 'उसने कहा था' यह प्रधान वाक्य है और 'मैं कल नहीं आऊँगा यह आश्रित उपवाक्य है । आश्रित वाक्य को उपवाक्य या अंग वाक्य भी कहते हैं ।

विशेष – ऐसा वाक्य जिससे वाक्य का पूरा-पूरा आशय प्रकाशित न होता हो उसे आश्रित उपवाक्य कहते हैं ।

आश्रित वाक्य के निम्नलिखित भेद हैं–

(1) संज्ञा वाक्य – जो आश्रित वाक्य प्रधान वाक्य की किसी संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होता है उसे संज्ञा वाक्य कहते हैं । जैसे–''मैं नहीं समझता कि तुम पढ़ते क्यों नहीं ।'' इस वाक्य में 'तुम पढ़ते क्यों नहीं', यह उपवाक्य 'समझता' क्रिया का कर्म है । इसी प्रकार इन वाक्यों में अंग वाक्य 'मैं जानता न था कि यह प्रताप है' 'वह कहता था कि पंजाबी बड़े वीर हैं' मैं समझता हूँ कि रात व्यतीत हो गई' इन क्रियाओं में कर्त्ता, कर्म और पूरक के रूप आए हैं । इसलिए उन्हें संज्ञा वाक्य कहते हैं ।

(2) विशेषण वाक्य – जो आश्रित वाक्य प्रधान वाक्य के विशेषण के रूप में प्रयुक्त हों, उन्हें विशेषण वाक्य कहते हैं, जैसे– कमला जो मेरे चाचा की लड़की है बड़ी चतुर है' । इस वाक्य में 'जो मेरे चाचा की लड़की है'

आश्रित वाक्य है जो 'कमला' कर्त्ता का विशेषण है ।

(3) क्रिया-विशेषण वाक्य – जो आश्रित वाक्य किसी प्रधान क्रिया के विशेषण रूप में प्रयुक्त हो उसे क्रिया-विशेषण वाक्य कहते हैं, 'जैसे–जितना रमेश पढ़ता है उतना मैं कभी नहीं पढ़ा ।' इस वाक्य में 'उतना मैं कभी नहीं पढ़ा' उपवाक्य है जो 'पढ़ता है' क्रिया के विशेषण रूप में प्रयुक्त हुआ है ।

3. संयुक्त वाक्य – ऐसा वाक्य जिसमें दो या दो से अधिक सरल अथवा मिश्रित वाक्य एक-दूसरे पर आश्रित न होकर मिलते हैं उन्हें संयुक्त वाक्य कहते हैं, जैसे –''मैं नौकरी करूँगा पर आधा वेतन पहले लूँगा । इस वाक्य में 'मैं नौकरी करूँगा' और 'आधा वेतन पहले लूँगा ।' दो परस्पर विपरीत वाक्य हैं जो 'पर' के साथ मिले हुए हैं । संयुक्त वाक्य के चार भेद हैं–

(1) संयुक्त – ऐसे वाक्य जिनमें एक वाक्य दूसरे वाक्य के साथ योजक द्वारा जुड़ा होता है; जैसे – आप आए और वह चला गया । इस वाक्य में 'आप आए', 'वह चला गया' दो परस्पर निरपेक्ष वाक्य हैं जो 'और' योजक अव्यय से जुड़े हुए हैं ।

(2) विभाजक – ऐसे वाक्य जिनमें एक वाक्य दूसरे वाक्य का विरोधी हो; जैसे – ''आपका आदेश तो था पर मैं कर नहीं सका'' । इस वाक्य में 'आपका आदेश तो था' और 'मैं कर नहीं सका' उपवाक्य हैं जो एक दूसरे के विरोधी हैं और 'पर' अव्यय से जुड़े हुए हैं ।

(3) विकल्प सूचक – ऐसा वाक्य जिसमें दो बातों में से एक का स्वीकार होना प्रकट हो; जैसे – 'युद्ध में मेरा या मेरी गोली का निशाना बनो', 'एक पैसा ले लो या चले जाओ' यहाँ 'या' संयोजक है ।

(4) परिणाम बोधक – जिसमें एक वाक्य दूसरे का परिणाम होता है; जैसे – 'राम बीमार था इसलिए उपस्थित नहीं हो सकता ।' इस वाक्य को हेतुसूचक भी कहते हैं । यहाँ 'इसलिए' योजक है ।

(4) वाक्य विश्लेषण

वाक्य के एक-एक पद, उद्देश्य, विधेय तथा दूसरे अंशों को अलग-अलग कर दिखाने की रीति को विश्लेषण कहते हैं। किसी वाक्य का विश्लेषण करने से पूर्व वाक्य के सम्बन्ध में यह निश्चय कर लेना आवश्यक है कि वह किस प्रकार का है? सरल है, संयुक्त है, अथवा मिश्रित है? प्रत्येक वाक्य के विश्लेषण की विधि नीचे दी जाती है–

(1) सरल वाक्य के विश्लेषण की विधि – सरल वाक्यों के विश्लेषण में निम्नलिखित बातों का दिखाना आवश्यक होता है – (1) उद्देश्य पद (कर्त्ता), (2) उद्देश्य पद का विस्तार करने वाले पद, (3) विधेय पद, (4) क्रिया का पूरक, (5) कर्म, (6) कर्म-विस्तार, (7) विधेय-विस्तार, (8) क्रिया, (9) क्रिया-विशेषण।

(2) मिश्रित वाक्य के विश्लेषण की विधि – (1) वाक्य में प्रधान खण्ड का निश्चय, (2) आश्रित खण्ड का निश्चय, (3) आश्रित खण्ड किस प्रकार का वाक्य है? संज्ञा वाक्य है या इसकी प्रकार से दूसरे वाक्यों में से कोई है? (4) पुनः प्रत्येक खण्ड का विग्रह सरल वाक्यों की भांति करना।

(3) संयुक्त वाक्य विश्लेषण की विधि – (1) योजक शब्द द्वारा मिले हुए निरपेक्ष वाक्यों को अलग-अलग दिखाना, (2) पुनः प्रत्येक का विश्लेषण सरल वाक्य की भान्ति करना।

5. विरामचिह्न (Punctuation)

प्रायः हम देखते हैं कि कोई भी व्यक्ति बातचीत करते समय एक प्रवाह और एक समान गति में शब्दों का उच्चारण नहीं करता, प्रत्युत कहीं-कहीं थोड़ा-बहुत अवश्य ठहरता है जिससे सुनने वाले उसकी बात को भली-भांति समझ लेते हैं। इस ठहराव को ही विरामचिह्न का नाम दिया गया है। विराम-चिह्नों द्वारा भाषा की रचना को बड़ा सहयोग मिलता है। भाव तथा विचारों का भाषा में नियमित रूप से क्रम उसी समय स्थापित होता है जब विराम चिह्नों का उचित प्रयोग हो।

विराम-चिह्न की परिभाषा एवं उद्देश्य–

लिखते समय शब्दों, वाक्यों और उपवाक्यों को पृथक्-पृथक् करने के लिए अनेक चिह्नों का प्रयोग होता है जिन्हें मौटे तौर पर विरामचिह्न कहते हैं। परन्तु इनमें ऐसे चिह्न भी शामिल हैं जिनका उद्देश्य अर्थ या भाव को स्पष्ट करना होता है, केवल रुकने का संकेत देना नहीं। उपयुक्त विराम चिह्नों का प्रयोग न होने पर अर्थ अस्पष्ट रह जाता है और कहीं-कहीं भ्रामक भी हो जाता है। हिन्दी भाषा में मुख्य विराम चिह्न निम्नलिखित हैं–

1. पूर्ण विराम (।) –

इसका प्रयोग वाक्य के पूर्ण/समाप्त होने पर किया जाता है। जैसे– वह मेरा भाई है। मैं स्कूल जाता हूँ।

2. अल्प विराम (,)–

इसमें सबसे कम रुकना पड़ता है। इसका प्रयोग निम्नलिखित परिस्थितियों में होता है–

(1) जब संज्ञा, क्रिया, विशेषण, क्रियाविशेषण आदि के दो से अधिक शब्द आयें तो उनके बीच अल्प विराम का प्रयोग होता है। जैसे–दिल्ली, मुम्बई, कोलकाता आदि।

(2) जब एक ही तरह के शब्दों के जोड़े हों तो उन्हें अलग करने के

लिए अल्प विराम का प्रयोग होता है। जैसे– हानि-लाभ, जय-पराजय आदि।

(3) जब वाक्य के अन्तर्गत कोई अन्तर्वर्ती वाक्यांश आए तो उसे आरम्भ और अन्त में अल्पविराम का प्रयोग किया जाता है। जैसे– आपका भाई जिसे आपने भेजा था, मुझसे मिला था।

(4) जब किसी के कथन को उद्धृत किया जाना हो तो कथन से पूर्व अल्प विराम चिह्न को प्रयोग किया जाता है। जैसे– नरेन्द्र मोदी जी ने कहा, ''देश की स्वतंत्रता की रक्षा अब युवकों को करनी है।''

(5) सम्बोधन में भी अल्प विराम चिह्न का प्रयोग किया जाता है। जैसे–राम, तुम कहाँ जा रहे हो?

(6) हां और नहीं के बाद यदि कुछ और कहना हो तो अल्प विराम चिह्न का प्रयोग किया जाता है। जैसे–हां, मैं तुम्हारे साथ चलूंगा।

(7) संयुक्त वाक्यों में उप-वाक्यों के पृथक् करने के लिए भी अल्प-विराम का प्रयोग किया जाता है। जैसे–राम निर्धन है, पर बेइमान नहीं।

(8) वाक्य में जहाँ समुच्चय बोधक अव्यय का लोप होता है, वहाँ अल्प विराम का प्रयोग किया जाता है। जैसे–जैसे ही मैं स्टेशन पर पहुँचा, गाड़ी चल दी।

(9) सर्वनाम का लोप हो जाने पर भी अल्प विराम का प्रयोग किया जाता है। जैसे–जो पहले आये, ले जाये।

(10) बड़ी संख्याओं में हजार, लाख, करोड़ को अलग करने के लिए भी अल्प विराम का प्रयोग किया जाता है। जैसे – 12,34,56, 789

3. अर्ध विराम (;) –

हिन्दी में अर्थ विराम का प्रयोग बहुत कम होता है। इस के द्वारा एक वाक्य का दूसरे वाक्य से दूर का सम्बन्ध दिखलाया जाता है। इसका प्रयोग निम्नलिखित स्थितियों में किया जाता है–

(1) जब संयुक्त वाक्यों के प्रधान वाक्यों में कोई विशेष सम्बन्ध नहीं रहता तो अर्ध विराम के चिह्न का प्रयोग किया जाता है । जैसे– सोहन शांत स्वभाव का था; मोहन क्रोधी ।

(2) विकल्प से अन्तिम समुच्च्य बोधक द्वारा जोड़े जाने वाले पूरे वाक्यों में अर्ध विराम चिह्न का प्रयोग किया जाता है । जैसे–मैं वहाँ पहुंचा; वह मिले; मुझे देखा भी ; परन्तु बातें न हो सकीं ।

(3) एक ही मुख्य वाक्य पर ठहरे हुए वाक्यों के बीच में भी अर्ध विराम के चिह्न का प्रयोग किया जाता है । जैसे– जब तक हमारे देश में भ्रष्टाचार है; बेरोजगारी है; तब तक हम उन्नति नहीं कर सकते ।

4. प्रश्नवाचक चिह्न (?) –

प्रश्नवाचक चिह्न का प्रयोग निम्नलिखित स्थितियों में होता है–

(1) जिस वाक्य में प्रश्न पूछा गया हो उसके अन्त में । जैसे–आप कहाँ जा रहे हैं ? वह कहाँ रहता है ?

(2) जब वाक्य में प्रश्नवाचक शब्द न होने पर भी वाक्य का लहजा प्रश्नवाचक हो । जैसे–आप भी पहुँचे गये ? भोजन करेंगे ?

(3) प्रश्नवाचक चिह्न का प्रयोग कोष्ठक में भी किया जाता है जब लिखने वाला अपनी लिखी बात के प्रति निश्चित मत न रखता हो । जैसे– कबीर का जन्म सन् 1398 ई० (?) में हुआ ।

5. विस्मयबोधक चिह्न (!) –

विस्मय, हर्ष, विषाद, आश्चर्य, करुणा, भय इत्यादि वृत्तियों को प्रकट करने के लिए वाक्यों के अन्त में विस्मयबोधक चिह्न का प्रयोग किया जाता है । वाक्य चाहे साधारण हो या प्रश्नवाचक । इस विराम चिह्न का प्रयोग निम्नलिखित प्रकार से किया जाता है । जैसे–वाह जी ! कल तो हमें चकमा ही दे गये । बस, यही है आपकी दयालुता ! वाह ! खूब ! खूब ! यह तो खूब कहा आपने !

6. उद्धरण / अवतरण चिह्न (“ ”)–

उद्धरण विराम चिह्न दो प्रकार के होते हैं पहला दोहरा (“ ”) दूसरा इकहरा (‘ ’) । इन चिह्नों का प्रयोग निम्नलिखित स्थितियों में होता है–

(1) किसी के कथन को ज्यों का त्यों दोहराने पर कथन के आदि और अन्त में दोहरे उद्धरण चिह्न का प्रयोग किया जाता है । जैसे– रमेश ने कहा, “मैं पिता की आज्ञा का पालन करूँगा ।”

(2) किसी बड़े उद्धरण के बीच में कोई छोटा उद्धरण आ जाए तो बड़े उद्धरण के दोहरे उद्धरण चिह्न और छोटे उद्धरण के लिए इकहरे उद्धरण चिह्न का प्रयोग किया जाता है । जैसे – “महात्मा जी ने कहा, ‘हमें अहिंसा परमो धर्मः’ का व्रत निभाना होगा ।”

(3) किसी विवरण में जब किसी शब्द, शब्द बंध, वाक्य या चिह्न को किसी विशेष अर्थ में प्रयोग किया जाए अथवा किसी विशेष व्यक्ति, स्थान परम्परा के संदर्भ से सम्बद्ध होने के कारण अलग दिखाना अभीष्ट हो, उसे प्रायः इकहरे चिह्नों में रखा जाता है । जैसे– जब तक ‘वर्ग चेतना’ नहीं आएगी, ‘वर्ग संघर्ष’ में गति नहीं आ सकेगी ।

7. निर्देश चिह्न (–) –

निर्देश चिह्नों का प्रयोग निम्नलिखित स्थानों पर होता है–

(1) जब कोई विवरण देने के बाद उसका कहीं सम्बन्ध निर्दिष्ट करना हो । जैसे– आप यह निर्णय स्वयं करें–यही हम सब का मत है ।

(2) किसी विषय के साथ तत्सम्बन्धी अन्य बातों का सूचना देने के लिए भी निर्देश चिह्न का प्रयोग किया जाता है । जैसे– व्यक्ति के दो रूप हैं–एक उसकी आत्मा और एक उसका शरीर ।

(3) संवाद में पात्रों के नाम के बाद भी निर्देश चिह्न का प्रयोग होता है । जैसे– मोहन–तुम क्या मेरी सहायता करोगे ?

(4) किसी रचना या उद्धरण के अन्त में लेखक का नाम अलग पंक्ति में दायें कोने पर दिया जाता है और उससे पहले निर्देश चिह्न लगाया जाता है । जैसे–

अविगत गति कुछ कहत न आवै । –सूरदास

(5) जब कोई उदाहरण देने के लिए नई पंक्ति शुरू करनी हो ।

जैसे –

8. विवरण चिह्न / अपूर्ण विराम (:)–

विवरण चिह्न को अपूर्ण विराम भी कहा जाता है । इस का प्रयोग निम्नलिखित स्थितियों में होता है–

(1) जब एक ही शीर्षक में मुख्य शब्द और उसके गौण अंग साथ-साथ निर्दिष्ट करने हों । जैसे– मनोरंजन का साधन : दूरदर्शन ।

(2) जब पंक्ति को तोड़े बिना कोई विवरण आरम्भ करना हो । जैसे– संज्ञा के तीन भेद हैं : व्यक्तिवाचक, जातिवाचक, भाववाचक ।

(3) जब कोई विस्तृत विवरण नई पंक्ति से आरम्भ करना हो तो पिछली पंक्ति में विवरण चिह्न और निर्देशक चिह्न मिला कर (:–) लिखते हैं जैसे–निम्नलिखित शब्दों के अर्थ लिखो :–

कृपा, साहिब, पुस्तक आदि ।

9. योजक चिह्न (-)

योजक चिह्न का प्रयोग निम्नलिखित स्थितियों में किया जाता है–

(1) द्वंद्व समास के दोनों पदों के बीच में । जैसे–माता-पिता, भाई-बंधु, हर्ष-विषाद आदि ।

(2) ऐसी पुनरुक्तियों में जिनके दोनों या एक घटक साधारणतः स्वतंत्र अस्तित्व रखते हों, चाहे उन में ही एक ही शब्द को दोहराया गया हो । जैसे– नगर-नगर, ग्राम-ग्राम, घर-द्वार, सुख-दुःख आदि ।

(3) जब लिखते समय या टाईप करते समय कोई शब्द एक पंक्ति में पूरा न आये और उसे तोड़ कर दूसरी पंक्ति तक खींचना पड़े तो पिछले पंक्ति में आने वाले हिस्से के बाद योजक चिह्न लगाते हैं ।

(4) तत्पुरुष समास होने पर यदि समस्त पद बहुत बड़ा बन जाए या उसके अर्थ में भ्राँति पैदा हो सकती हो तो योजक चिह्न लगाते हैं । जैसे–आनन्द-निकेतन, भू-तत्त्व आदि ।

(5) साम्यमूलक 'सा', 'से', 'सी' जोड़ने से पहले भी योजक चिह्न लगाते हैं । जैसे–तुम-सा, बहुत-से, थोड़ी-सी आदि ।

10. कोष्ठक ( ) –

कोष्ठक का प्रयोग निम्नलिखित स्थितियों में होता है–

(1) वाक्य या किसी शीर्षक के अन्तर्गत कोई ऐसी बात जोड़ने के लिए मुख्य वाक्य या शीर्षक का अंश न होने पर भी उसके अर्थ या संदर्भ को स्पष्ट करे। जोड़ी गई बात को कोष्ठक में रखा जाता है। जैसे– हमें परमपिता (परमात्मा) की भक्ति में मन लगाना चाहिए।

(2) नाटक में रंग संकेत देने के लिए या संवाद में पात्र की दशा या भाव को व्यक्त करने के लिए कोष्ठक का प्रयोग किया जाता है। जैसे–

रमेश कुमार – (झेंपकर हँसता हुआ) हें-हें-हें , बताइए अमात्य जी !

(3) अनुच्छेदों के भागों की सूचना देने के लिए भी कोष्ठक का प्रयोग किया जाता है। जैसे – अनुच्छेद 2(1), नियम 80 (सी सी)

(4) किसी प्रसिद्ध व्यक्ति के नाम के आगे जन्म-मरण के सन् अथवा सम्वत् का संकेत देने के लिए भी कोष्ठक का प्रयोग किया जाता है। जैसे–

जयशंकर प्रसाद (सन् 1889 ई० – सन् 1937 ई०)

11. संक्षेप चिह्न (०) –

इसका प्रयोग निम्नलिखित स्थितियों में होता है–

(1) जब कोई शब्द पूरा न लिख कर उसके आद्याक्षर का प्रयोग किया जाए। जैसे– डॉक्टर के लिये डॉ०, पण्डित के लिए पं०।

(2) जब कोई नाम संक्षेप में लिखना हो अथवा किसी उपाधि का उल्लेख करना हो। जैसे –रामलाल मल्होत्रा को रा० ला० मल्होत्रा लिखकर और एम०ए०पी०एच०डी० लिख कर।

विराम चिह्नों के प्रयोग के कुछ उदाहरण

उदाहरण 1

विराम चिह्नों रहित गद्यांश

छायावादी कवि जहाँ एक ओर प्रकृति के प्रति नया दृष्टिकोण नया संवेदना बोध भावुकता और आत्मीयता लेकर आया वही उसने अपनी कविता को मानवीकरण अप्रस्तुत विधान सूक्ष्म सौन्दर्य चेतना कोमलकान्त

पदावली और नूतन छन्द योजना से अलंकृत करके उपस्थित किया

विराम चिह्नों का प्रयोग

छायावादी कवि जहाँ एक ओर प्रकृति के प्रति नया दृष्टिकोण, नया संवेदना-बोध, भावुकता और आत्मीयता लेकर आया, वही उसने अपनी कविता को मानवीकरण अप्रस्तुत विधान, सूक्ष्म सौन्दर्य चेतना, कोमलकान्त पदावली और नूतन छन्द-योजना से अलंकृत करके उपस्थित किया ।

उदाहरण 2

विराम चिह्नों रहित गद्यांश

राजनीति मेरा क्षेत्र नहीं है किन्तु जहाँ तक संस्कार की बात है मैं गांधी और मार्क्स की कई बातों को ठीक समझता हूँ सामाजिक विषमताओं के मूल में मनुष्य का अहंकार निवास करता हैं जाति का अहंकार वंश का अहंकार धन और शक्ति का अहंकार सिद्धि और सफलता का अहंकार ये सभी अहंकार विभाजक रेखाएं हैं जो मनुष्य को मनुष्य से अलग करती हैं

विराम चिह्नों का प्रयोग

''राजनीति मेरा क्षेत्र नहीं है । किन्तु जहाँ तक संस्कार की बात है, मैं गांधी और मार्क्स की कई बातों को ठीक समझता हूँ । सामाजिक विषमताओं के मूल में मनुष्य का अहंकार निवास करता है । जाति का अहंकार, वंश का अहंकार, धन और शक्ति का अहंकार, सिद्धि और सफलता का अहंकार । ये सभी अहंकार विभाजक रेखाएं हैं जो मनुष्य को मनुष्य से अलग करती हैं.....''

उदाहरण 3

विराम चिह्नों रहित गद्यांश (P.U. 2010)

ध्रुवस्वामिनी आकाश की ओर देखकर वह बहुत दूर की बात है आह कितनी कठोरता है मनुष्य के हृदय में देवता को हटाकर राक्षस कहां से घुस आता है कुमार की स्निग्ध सरल और सुन्दर मूर्ति को देखकर कोई भी प्रेम से पुलकित हो सकता है किन्तु उन्हीं का भाई आश्चर्य

विराम चिह्नों का प्रयोग

ध्रुवस्वामिनी– (आकाश की ओर देखकर) वह बहुत दूर की बात है ।

आह, कितनी कठोरता है । मनुष्य के हृदय में देवता को हटाकर राक्षस कहाँ से घुस आता है? कुमार की स्निग्ध, सरल और सुन्दर मूर्ति को देखकर कोई भी प्रेम से पुलकित हो सकता है । किन्तु उन्हीं का भाई? आश्चर्य !

उदाहरण 4

विराम चिह्नों रहित गद्यांश (April 2002)

हां अम्मा बसन्ती का स्वर था मैं कॉलेज भी जाऊं और लौटकर घर में झाड़ू भी लगाऊं यह मेरे बस की बात नहीं है बूढ़े आदमी हैं अमर भुनभुनाया चुपचाप पड़े रहें हर चीज़ में दखल क्यों देते हैं

पत्नी ने बड़े व्यंग्य से कहा और कुछ नहीं सूझा तो तुम्हारी बहू को ही चौंके में भेज दिया वह गई तो पन्द्रह दिन का राशन पांच दिन में बनाकर रख दिया ।

विराम चिह्नों का प्रयोग

''हां अम्मा !'' बसन्ती का स्वर था, ''मैं कॉलेज भी जाऊं और लौटकर घर में झाड़ू भी लगाऊं यह मेरे बस की बात नहीं है ।'' ''बूढ़े आदमी हैं'' – अमर भुनभुनाया, ''चुपचाप पड़े रहें । हर चीज़ में दखल क्यों देते हैं?''

पत्नी ने बड़े व्यंग्य से कहा, ''और कुछ नहीं सूझा तो तुम्हारी बहू को ही चौंके में भेज दिया । वह गई तो पन्द्रह दिन का राशन पांच दिन में बनाकर रख दिया ।''

उदाहरण 5

विराम चिह्नों रहित गद्यांश (P.U. 2013)

सेठ जी टेलीफोन पर धीरे से हेलो जरा ऊंचे हेलो कौन साहब मन्त्री हौजरी यूनियन अच्छा अच्छा नमस्कार नमस्कार हि हि हि हिं सुनाइए क्या सब मेरे पक्ष में वोट देने को तैयार हैं मैं कृतज्ञ हूँ मैं आपका अत्यन्त कृतज्ञ हूँ इस ओर से आप बिल्कुल निश्चिन्त रहें

विराम चिह्नों का प्रयोग

सेठ जी– (टेलीफोन पर, धीरे से) हेलो ! (जरा ऊंचे) हेलो !... कौन साहब?..... मन्त्री हौजरी यूनियन ! अच्छा-अच्छा, नमस्कार, नमस्कार ।.... क्या?..... सब मेरे पक्ष में वोट देने को तैयार हैं । मैं कृतज्ञ हूँ । मैं आपका अत्यन्त कृतज्ञ हूँ..... इस ओर से आप बिल्कुल निश्चिन्त रहें ।

उदाहरण 6

विराम चिह्नों रहित गद्यांश

कात्या क्या कहा वह भी बन्द कर दी गयी है अब कमानियों चक्करों के पैसे भी अपनी जेब से देने होंगे हम खायेंगे कहो से आप भगवान् के लिए इससे कहिए यह काम छोड़ दे मैं हाथ जोड़ती हूँ यह काम उसके बस का नहीं है न खुद मरे न हमें मारे

विराम चिह्नों का प्रयोग

कात्या : क्या कहा? वह भी बन्द कर दी गयी है? अब कमानियों-चक्करों के पैसे भी अपनी जेब से देने होंगे? हम खायेंगे कहां से? आप भगवान् के लिए इससे कहिए, यह काम छोड़ दे। मैं हाथ जोड़ती हूँ, यह काम उसके बस का नहीं है, न खुद मरे, न हमें मारे।

उदाहरण 7

विराम चिह्नों रहित गद्यांश (P.U. 2011)

उसकी आंखों में एक खास चमक आ गयी थी और बोल पड़ी थी अकेलापन कोई बुरी चीज़ नहीं है सर मैं भी अकेली हूँ फिर उसने दांत से होंठ काट लिये थे और उसने कहा था जाइए अपना काम कीजिए बैंक में ऐसे सवाल नहीं किया करते

विराम चिह्नों का प्रयोग

उसकी आँखों में एक खास चमक आ गयी थी। और बोल पड़ी थी– ''अकेलापन कोई बुरी चीज़ नहीं है, सर मैं भी अकेली हूँ। फिर उसने दांत से होंठ काट लिये थे। और उसने कहा था, ''जाइए, अपना काम कीजिए, बैंक में ऐसे सवाल नहीं किया करते।''

उदाहरण 8

विराम चिह्नों रहित गद्यांश

बहुत दिनों हुए रवि बाबू की कहानी पढ़ी थी एक भद्र परिवार की महिला हैज़े में मर गई लोग जलाने को श्मशान ले गये चिता सजाई जा रही थी कि वर्षा होने लगी चिता छोड़ कर लोग बगल की अमराई की मड़ैया में छिप गए काली रात था जब वर्षा खत्म हुई उन्होंने पाया चिता से मुर्दा गायब क्या सियार खा गये खोज ढूंढ़ फिजूल गई

विराम चिह्नों का प्रयोग

बहुत दिनों हुए रवि बाबू की कहानी पढ़ी थी । एक भद्र परिवार की महिला हैज़े में मर गई । लोग जलाने को श्मशान ले गये । चिता सजाई जा रही थी कि वर्षा होने लगी । चिता छोड़ कर लोग बगल की अमराई की मड़ैया में छिप गए । काली रात थी जब वर्षा खत्म हुई उन्होंने पाया, चिता से मुर्दा गायब ! क्या सियार खा गये ? खोज-ढूंढ़ फिजूल गई ।

उदाहरण 9

विराम चिह्नों रहित गद्यांश

हिटलर मुसोलिनी स्टालिन और माओ की अधिनायकता के समर्थक मज़ाक उड़ाते हैं लोकतन्त्र का यह कह कर कि वह निन्नावे मूर्खों का एक समझदार पर शासन है और अधिनायकता उसके हाथ (वोट) नहीं गिनती उसका मस्तिष्क जांचती है पर सच्चाई यह है कि यह उद्दण्ड शक्ति का एक धुअइाधार नारा ही है सत्य का उद्घोष नहीं

विराम चिह्नों का प्रयोग

हिटलर, मुसोलिनी, स्टालिन और माओ की अधिनायकता के समर्थक मज़ाक उड़ाते हैं लोकतन्त्र का यह कह कर कि वह निन्नावे मूर्खों का एक समझदार पर शासन है और अधिनायकता उसके हाथ (वोट) नहीं गिनती, उसका मस्तिष्क जांचती है, पर सच्चाई यह है कि यह उद्दण्ड शक्ति का एक 'धुआधार' नारा ही है, सत्य का उद्घोष नहीं ।

उदाहरण 10

विराम चिह्नों रहित गद्यांश

यह खेती का मज़ा है और एक भगवान् ऐसे पड़े हैं जिनके पास जाड़ा जाये तो गर्मी से घबरा कर भागे मोटे गद्दे एक लिहाफ कम्बल मजाल है कि जाड़े का गुज़र हो जाये तकदीर की खूबी है मजूरी हम करें मज़ा दूसरे लूटें

विराम चिह्नों का प्रयोग

यह खेती का मज़ा है ! और एक भगवान् ऐसे पड़े हैं, जिनके पास जाड़ा जाये तो गर्मी से घबरा कर भागे मोटे गद्दे, एक लिहाफ कम्बल—मज़ाल

है कि जाड़े का गुज़र हो जाये । तक़दीर की खूबी है ! मजूरी हम करें मज़ा दूसरे लूटें !

6. वाक्य शुद्धि (Common Error)

भाषा भावों और विचारों का बाह्य अभिव्यक्ति का नाम है । भावों को अभिव्यक्ति वाक्यों के माध्यम से होती है । वाक्य वह शब्द समूह है जिसमें किसी कार्य का व्यापार को पूर्ण करने की योग्यता हो और जिसमें एक क्रिया सूचक पद या समापिका क्रिया हो । भाषा की वास्तविक इकाई वाक्य है । वर्तनी शुद्ध और शब्द कोष समृद्ध होने पर भी कभी-कभी कई विद्यार्थियों का वाक्य गठन ठीक से नहीं बन पाता । इसलिए वाक्यों में बहुत सी ऐसी अशुद्धियाँ हो जाती हैं जिनसे वाक्य का आकर्षण ही समाप्त हो जाता है । बहुधा वाक्य में तीन प्रकार की अशुद्धियाँ पाई जाती हैं ।

1. वर्ण सम्बन्धी – इसके अन्तर्गत वर्तनी आती है । विद्यार्थी स्वर, मात्रा की ठीक वर्तनी के ज्ञान के अभाव में अशुद्ध वाक्य की रचना करता है जैसे आगामी को अगामी, रविवार को रवीवार, अच्छर को अछर, बच्चों को बचों इत्यादि लिख कर ।

2. शब्द सम्बन्धी – इसके अन्तर्गत विद्यार्थी भ्रमवश अशुद्ध शब्दों का प्रयोग करते हैं– जैसे अनिष्ट को अनष्ट लिख कर, आन को अन्य लिख कर । इसी प्रकार विद्यार्थी आधीन, नछत्र, पूज्यनीय, सौजन्यता, अज्ञानता, राजनैतिक, प्रगट इत्यादि अशुद्ध शब्दों का प्रयोग करते हैं ।

3. वाक्य सम्बन्धी – कभी-कभी विद्यार्थी वाक्य रचना करते समय व्याकरिणक ज्ञान के अभाव में शब्द कम उलट-पुलट कर देते हैं । इस तरह वाक्य अशुद्ध हो जाता है; जैसे कोई लिख दे–गत रविवार को क्या दिन था ?

इसी प्रकार वाक्यों में कुछ अशुद्धियाँ अंग्रेज़ी के प्रभाव के कारण भी हो जाती हैं; जैसे in the night के प्रभाव से रात में वर्षा हुई लिखना जबकि हिन्दी में लिखना चाहिए रात को वर्षा हुई ।

वाक्य सम्बन्धी अशुद्धियाँ विराम चिह्नों एवं प्रयोग की सही जानकारी न होने के कारण, अन्वय के अशुद्ध प्रयोग के कारण, संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया, विशेषण के अशुद्ध प्रयोग के कारण भी अशुद्ध वाक्य रचना हो जाती है ।

वाक्यों की अशुद्धियों के कुछ उदाहरण निम्नलिखित हैं ।

(1) वर्ण सम्बन्धी अशुद्धियाँ

(स्वर मात्रा एवं व्यंजन की अशुद्धियाँ)

अशुद्ध – मैं अगामी मंगलवार को आऊँगा ।
शुद्ध – मैं आगामी मंगलवार को आऊँगा ।
अशुद्ध – वह परिक्षा में प्रथम रहा ।
शुद्ध – वह परीक्षा में प्रथम रहा ।
अशुद्ध – बुरे कर्मों का परणाम भी बुरा होता है ।
शुद्ध – बुरे कर्मों का परिणाम भी बुरा होता है ।
अशुद्ध – हमारी पड़ोसन बड़ी झगड़ालू है ।
शुद्ध – हमारी पड़ोसिन बड़ी झगड़ालू है ।
अशुद्ध – हमारी कोई पैत्रिक सम्पत्ति नहीं है ।
शुद्ध – हमारी कोई पैतृक सम्पत्ति नहीं है ।
अशुद्ध – मनोहर, मनोहर के बाग़ में गया ।
शुद्ध – मनोहर, अपने बाग़ में गया ।

लिंग सम्बन्धी अशुद्धियाँ

अशुद्ध – आपकी लेख की अशुद्धियाँ हास्यस्पद हैं ।
शुद्ध – आपके लेख की अशुद्धियाँ हास्यस्पद हैं ।
अशुद्ध – यह कार्य हमारे सामर्थ्य से परे है ।
शुद्ध – यह कार्य हमारी सामर्थ्य से परे है ।
अशुद्ध – घी के चिकनाहट को दूर कर लो ।
शुद्ध – घी की चिकनाहट को दूर कर लो ।
अशुद्ध – बंगला देश के प्रधानमंत्री भारत आए ।
शुद्ध – बंगला देश की प्रधानमंत्री भारत आई ।

वचन सम्बन्धी अशुद्धियाँ

अशुद्ध– मैंने चार-पाँच पकौड़ी खाई ।
शुद्ध – मैंने चार-पाँच पकौड़ियाँ खाई ।
अशुद्ध – उसने दो किलो जलेबियाँ खा ली ।

शुद्ध – उसने दो किलो जलेबी खा ली ।
अशुद्ध– गोष्ठी का एजण्डा क्या तैयार हो गये ?
शुद्ध – गोष्ठी का एजण्डा क्या तैयार हो गया ?
अशुद्ध– सुन्दरियों नारियों को देखकर राजा मोहित हो गया ।
शुद्ध – सुन्दरी नारियों को देखकर राजा मोहित हो गया ।

कारक चिह्नों एवं परसर्गों की अशुद्धियाँ

अशुद्ध– तुमको यह बात मान लेनी चाहिए ।
शुद्ध – तुम्हें यह बात मान लेनी चाहिए ।
अशुद्ध– मेरे को आज जालन्धर जाना है ।
शुद्ध – मुझे आज जालन्धर जाना है ।
अशुद्ध– यह बात मैं अच्छी तरह जानता हूँ ।
शुद्ध – इस बात को मैं अच्छी तरह जानता हूँ ।
अशुद्ध– मैंने अपने घर को बनाया ।
शुद्ध – मैंने अपना घर बनाया ।

(2) शब्द सम्बन्धी अशुद्धियाँ

संज्ञा सम्बन्धी अशुद्धियाँ

अशुद्ध– जम्मू के पास पाकिस्तानी सेनाएं देखी गई ।
शुद्ध – जम्मू की सीमा के पास पाकिस्तानी सेनाएं देखी गई ।
अशुद्ध– सद्व्यवहार सज्जनों का प्रमुख चिह्न है ।
शुद्ध – सद्व्यवहार सज्जनों का प्रमुख लक्षण है ।
अशुद्ध– उसकी आँखों से अश्रु जल गिर रहे थे ।
शुद्ध – उसकी आँखों से अश्रु गिर रहे थे ।
अशुद्ध– आपके प्रोत्साहन से मुझे शक्ति मिली ।
शुद्ध – आपके प्रोत्साहन से मुझे बल मिला ।

सर्वनाम सम्बन्धी अशुद्धियाँ

अशुद्ध– दूध में कौन पड़ गया ?
शुद्ध – दूध में क्या पड़ गया ?
अशुद्ध– मेरा ध्यान मेरे घर पर लगा हुआ है ।
शुद्ध – मेरा ध्यान अपने घर पर लगा हुआ है ।

अशुद्ध– वह वही आदमी है जो कल मिला था ।
शुद्ध – यह वही आदमी है जो कल मिला था ।
अशुद्ध– मेरी आँखें मेरे मित्र की ओर लगी हैं ।
शुद्ध – मेरी आँखें अपने मित्र की ओर लगी हैं ।

विशेषण सम्बन्धी अशुद्धियाँ

अशुद्ध– तुम्हारे साथ उचित न्याय किया जाएगा ।
शुद्ध – तुम्हारे साथ न्याय किया जाएगा ।
अशुद्ध– वह सुन्दर शोभा धरण कर रहा था ।
शुद्ध – वह शोभा धारण कर रहा था ।
अशुद्ध– मेरी सहेली बड़ी अच्छी है ।
शुद्ध – मेरी सहेली बहुत अच्छी है ।
अशुद्ध– मित्रों के व्यवहार से मुझे भारी दुःख हुआ ।
शुद्ध – मित्रों के व्यवहार से मुझे बहुत दुःख हुआ ।

क्रिया सम्बन्धी अशुद्धियाँ

अशुद्ध– मैं इस बात के स्पष्टीकरण करने के लिए तैयार हूँ ।
शुद्ध – मैं इस बात के स्पष्टीकरण के लिए तैयार हूँ ।
अशुद्ध– राज्यपाल महोदय ने बाल-भवन का शिलान्यास रखा ।
शुद्ध – राज्यपाल महोदय ने बाल-भवन की आधारशिला रखी ।
अशुद्ध– यातायात ठप्प होने की सम्भावना की जा रही है ।
शुद्ध – यातायात ठप्प होने की सम्भावना है ।
अशुद्ध– डाकू बहुत से पशु उठाकर ले गए ।
शुद्ध – डाकू बहुत से पशु हांक कर ले गए ।

क्रिया विशेषण सम्बन्धी अशुद्धियाँ

अशुद्ध– महात्मा जी का भाषण विद्वतापूर्वक था ।
शुद्ध – महात्मा जी का भाषण विद्वतापूर्ण था ।
अशुद्ध– वे परस्पर एक दूसरे से झगड़ने लगे ।
शुद्ध – वे एक दूसरे से झगड़ने लगे ।

अशुद्ध– वह प्रातः काल के समय सैर के लिए जाता है ।
शुद्ध – वह प्रातःकाल सैर के लिए जाता है ।
अशुद्ध– चिन्ता न करें आपकी आज्ञा के अनुकूल कार्य होगा ।
शुद्ध – चिन्ता न करें आपकी आज्ञा के अनुसार कार्य होगा ।

(3) वाक्य सम्बन्धी अशुद्धियाँ

शब्द क्रम सम्बन्धी अशुद्धियाँ

अशुद्ध– बीस स्कूल के विद्यार्थी बस दुर्घटना में घायल हो गये ।
शुद्ध – स्कूल के बीस विद्यार्थी बस दुर्घटना में घायल हो गये ।
अशुद्ध– मैं जाता हूँ खाना खाने के लिए ।
शुद्ध – मैं खाना खाने के लिए जाता हूँ ।
अशुद्ध– एक फूलों की माला देवता को चढ़ा दो ।
शुद्ध – देवता पर फूलों की एक माला चढ़ा दो ।
अशुद्ध– कुत्ता पहरेदार की तरह द्वार पर दुम हिलाता हुआ खड़ा है ।
शुद्ध – कुत्ता दुम हिलाता हुआ पहरेदार की तरह द्वार पर खड़ा है ।

अधिक पदत्व सम्बन्धी अशुद्धियाँ

अशुद्ध– वह अनेक प्रकार के बहाने बनाने लगा ।
शुद्ध – वह अनेक बहाने बनाने लगा ।
अशुद्ध– पद्यांश में निहित भावों को स्पष्ट करें ।
शुद्ध – पद्यांश में निहित भाव स्पष्ट करें ।
अशुद्ध– वे वीर धन्य हैं जिन्होंने इस देश को स्वतन्त्र कराया ।
शुद्ध – वे वीर धन्य हैं जिन्होंने इस देश को स्वतन्त्र करवाया ।
अशुद्ध– वह इतना मूर्ख नहीं है जितना कि आप समझते हैं ।
शुद्ध – वह इतना मूर्ख नहीं है जितना आप समझते हैं ।

अन्वय सम्बन्धी अशुद्धियाँ

अशुद्ध– वह, मैं और तुम सैर के लिए चलेंगे ।
शुद्ध – मैं, तुम और वह सैर के लिए चलेंगे ।
अशुद्ध– यह घटना, जब चुनाव हुए थे, उस समय की है ।
शुद्ध – यह घटना उस समय की है जब चुनाव हुए थे ।

अशुद्ध– राम, जो मेरा मित्र है, को यह रुपये दे देना ।

शुद्ध – मेरे मित्र राम को यह रुपये दे देना ।

अशुद्ध– आपकी पुस्तक, जो मैं कल ले गया था, वह कोई चुरा ले गया ।

शुद्ध – आपकी जो पुस्तक मैं कल ले गया था, कोई चुरा कर ले गया ।

अव्यय सम्बन्धी अशुद्धियाँ

अशुद्ध– रसोई में आटा, दाल और बर्तन आदि वस्तुएं हैं ।

शुद्ध – रसोई में आटा, दाल, बर्तन आदि वस्तुएं हैं ।

अशुद्ध– प्रायः ऐसा होता है कि मेरी मुँह अंधेरे ही आँख खुल जाती है ।

शुद्ध – प्रायः ऐसा होता है कि मुँह अंधेरे ही मेरी आँख खुल जाती है ।

अशुद्ध– मानलो तुम असफल हो जाओ तो क्या करोगे ?

शुद्ध – यदि तुम असफल हो जाओ तो क्या करोगे ?

अशुद्ध– पढ़ो, नहीं तो अपने घर जाओ ।

शुद्ध – पढ़ो या अपने घर जाओ ।

कुछ अन्य ध्यान देने योग्य अशुद्धियाँ

अशुद्ध– क्या वह पुस्तक को ला सकेगा ?

शुद्ध – क्या वह पुस्तक ला सकेगा ?

अशुद्ध– उसे लगभग शत प्रतिशत अंक मिले ।

शुद्ध – उसे शत प्रतिशत अंक मिले ।

अशुद्ध– इस पुस्तक के देने में मेरा जी नहीं करता ।

शुद्ध – यह पुस्तक देने को मेरा जी नहीं करता ।

अशुद्ध– मैं रुपये नौकर के हाथ से भेज रहा हूँ ।

शुद्ध – मैं रुपये नौकर के हाथ भेज रहा हूँ ।

विराम चिह्न की अशुद्धियाँ

अशुद्ध– दो मील चौड़ी विश्व की सबसे बड़ी नदी यही है ।

शुद्ध – दो मील चौड़ी, विश्व की सबसे बड़ी नदी यही है ।

अशुद्ध– मैं अब क्या करूँ ।

शुद्ध – मैं अब क्या करूँ ?

अशुद्ध– अरे, तू कब आई ?
शुद्ध – अरे ! तू कब आई ?
अशुद्ध– मैं बता नहीं सकता कि वह कहाँ है ?
शुद्ध – मैं बता नहीं सकता कि वह कहाँ है ।

अंग्रेज़ी के प्रभाव से होने वाली अशुद्धियाँ

अशुद्ध– रात में वर्षा हुई । (in the night) का प्रभाव
शुद्ध – रात को वर्षा हुई ।
अशुद्ध– उसने मुझे चाय पर बुलाया । (at tea) का प्रभाव
शुद्ध – उसने मुझे चाय के लिए बुलाया ।
अशुद्ध– भारतीय सैनिकों ने सद्भावना के आधार पर कुछ एक जगहों पर सड़कें भी ठीक कर दीं । (on the ground, a few places) का प्रभाव
शुद्ध – भारतीय सैनिकों ने सद्भावना के कारण कुछ जगहों पर सड़कें भी ठीक कर दीं ।
अशुद्ध– दूसरे साथियों को भी नमस्कार भेजता हूँ । (sending my greetings) का प्रभाव
शुद्ध – दूसरे साथियों को भी नमस्कार स्वीकार हो ।

मुहावरों के प्रयोग की अशुद्धियाँ

अशुद्ध– वह शैतान के पाले पड़ गया ।
शुद्ध – वह शैतान के पल्ले पड़ गया ।
अशुद्ध– हमारी नाक में दम आ गया ।
शुद्ध – हमारा नाक में दम आ गया ।
अशुद्ध– सैनिक हथेली पर जान रखकर लड़े ।
शुद्ध – सैनिक सिर हथेली पर रखकर लड़े ।
अशुद्ध– उसका सिर शर्म से गढ़ गया ।
शुद्ध – उसका सिर शर्म से झुक गया ।

गत वर्षों की वार्षिक परीक्षा में पूछे गये प्रश्न

अप्रैल 2010

(1) मैंने तुम्हारी बड़ी प्रतीक्षा देखी ।
(2) अपनी विशाल प्रतिभा के बल पर वह पी.सी.एस. में चुना गया ।

(3) आपकी आज्ञा के अनुकूल कार्य होगा ।
(4) वह पैरों से जूता निकाल रहा है ।
(5) वह विलाप करके रोने लगी ।
(6) वह चन्द्रमा को देखता है ।

उत्तर

(1) मैंने तुम्हारी बहुत प्रतीक्षा की ।
(2) अपनी प्रखर प्रतिभा के बल पर वह पी.सी.एस. में चुना गया ।
(3) आपके आदेशानुसार कार्य होगा ।
(4) वह पैरों से जूता उतार रहा है ।
(5) वह विलाप करने लगी ।
(6) वह चन्द्रमा की ओर देखता है ।

अप्रैल 2011

(1) गरीबी जैसी अभिशाप कोई नहीं ।
(2) रमा के हाथ से भेज देना ।
(3) उसे अंग्रेजी का अच्छा बोध है ।
(4) तुम्हारे साथ उचित न्याय किया जायेगा ।
(5) मैं लस्सी पीना माँगता हूँ ।
(6) महात्मा जी का भाषण विद्वतापूर्वक था ।

उत्तर

(1) गरीबी जैसा अभिशाप कोई नहीं ।
(2) रमा के हाथों भेज देना ।
(3) उसे अंग्रेजी का अच्छा ज्ञान है ।
(4) तुम्हारे साथ उचित व्यवहार किया जायेगा ।
(5) मैं लस्सी पीना चाहता हूँ ।
(6) महात्मा जी का भाषण विद्वतापूर्ण था ।

अप्रैल 2012

(1) मैंने तुम्हारी बड़ी प्रतीक्षा देखी ।
(2) रमेश के हाथ से भेज देना ।

(3) वह विलाप करके रोने लगी ।

(4) दूध में कौन पड़ गया ।

(5) उसे हिन्दी का अच्छा बोध है ।

(6) वह पैरों से जूता निकाल रहा है ।

उत्तर

(1) मैंने तुम्हारी बहुत प्रतीक्षा की ।

(2) रमेश के हाथों भेज देना ।

(3) वह विलाप करने लगी ।

(4) दूध में क्या पड़ गया ?

(5) उसे हिन्दी का अच्छा ज्ञान है ।

(6) वह पैरों से जूता उतार रहा है ।

अप्रैल 2013

(1) वह परिक्षा में प्रथम आया ।

(2) बेटी पराया धन होता है ।

(3) चिड़िया वृक्ष में बैठी है ।

(4) दूध में कौन पड़ गया ।

(5) हमारे वाला नौकर बड़ा कामचोर है ।

(6) अधिकांश सदस्य मेरे पक्ष में थे ।

उत्तर

(1) वह परीक्षा में प्रथम रहा ।

(2) बेटी पराया धन होती है ।

(3) चिड़िया वृक्ष पर बैठी है ।

(4) दूध में क्या पड़ गया ?

(5) हमारा नौकर बड़ा कामचोर है ।

(6) अधिकतर सदस्य मेरे पक्ष में थे ।

7. मुहावरे

प्रत्येक भाषा में कुछ ऐसे शब्द हैं जो विशेष शब्दों के साथ प्रयुक्त होते हैं। इनके अतिरिक्त कई शब्द ऐसे हैं जो अपने साधारण वर्षों को प्रकट करते हैं। जैसे – 'अक़्ल पर पत्थर पड़ना'। इसके अर्थ में 'ईंट पड़ना अथवा मिट्टी पड़ना' का प्रयोग नहीं कर सकते। ऐसे प्रयोग का ज्ञान साहित्य के अध्ययन से प्राप्त होता है। प्रयोग की दो प्रसिद्ध रीतियाँ हैं– (1) रोजमर्रा (2) मुहावरा।

(1) रोजमर्रा– भाषा शास्त्रियों की दैनिक बोलचाल के अनुसार कुछ शब्दों का प्रयोग विशेष शब्दों के साथ होता है। यदि वे विशेष शब्द बदल कर कुछ और शब्द उनके साथ जोड़े जाएं तो उनके अभीष्ट अर्थ नहीं निकलते। ऐसे प्रयोग का नाम रोजमर्रा है। जैसे– एक दो, पाँच सात, दस बीस का प्रयोग प्रायः होता है। परन्तु इनके स्थान पर एक पाँच, चार आठ का प्रयोग शुद्ध नहीं बैठता।

(2) मुहावरा– जब कोई वाक्य अथवा वाक्यांश अपने साधारण अर्थों को छोड़कर उनसे विलक्षण अर्थों को प्रकट करे तो उसे मुहावरा अथवा वाग्धारा कहते हैं। निम्नलिखित मुहावरे वर्णानुसार लिखे गये हैं। जैसे–

1. **अक़्ल पर पत्थर पड़ना –** समझ में न आना
   राम की तो अक़्ल पर पत्थर पड़े हुए हैं, वह लाख समझाये नहीं समझता।
2. **अक़्ल चरने जाना –** बुद्धि का नाश होना
   जब तुम पाठ पढ़ रहे थे तो क्या उस समय तुम्हारी अक़्ल कहीं चरने गई थी?
3. **अगर मगर करना** – टाल मटोल करना
   अगर मगर में कुछ नहीं बनेगा अब तो कुछ करके दिखाना होगा।
4. **अपनी खिचड़ी अलग पकाना** – सब से जुदा रहना
   अपनी अपनी खिचड़ी पकाने से क्या लाभ? मिल कर काम करो।
5. **अपना राग अलापना** – अपनी प्रशंसा करना
   सभा-समाजों में अपना-अपना राग अलापने से कुछ नहीं बनता, प्रत्युत मिल कर निर्णय करने होते हैं।

6. **अबे तबे करना** – बिना आदर बुलाना
हर एक से अबे-तबे नहीं करनी चाहिए ।

7. **अड्डा जमाना** – अधिकार करना
मोहन ने तो धर्मशाला में अड्डा ही जमा लिया है ।

8. **अपना सा मुँह लेकर रह जाना** – शर्मिन्दा होना
मेरे प्रश्न पूछने पर वह अपना सा मुँह लेकर रह गया ।

9. **अपने पाँव पर आप कुल्हाड़ी मारना** – अपना बुरा आप करना
परीक्षा के दिनों में अपनी पुस्तक बेच कर तुमने अपने पाँव पर आप कुल्हाड़ी मारी है ।

10. **अपने मुँह मियां मिट्ठू बनना** – अपनी प्रशंसा करना
अपने मुँह मियां मिट्ठू बनने से क्या लाभ, तुम्हारी कक्षा में एक भी नहीं जो तुम्हारी प्रशंसा करे ।

11. **अक़्ल के पीछे लठ लिए फिरना** – मूर्ख
क्यों अक़्ल के पीछे लठ लिए फिरते हो? कुछ होश करो, अपने घर का ध्यान रखो ।

12. **अपना उल्लू सीधा करना** – स्वार्थी होना
आज देश में सब अपना उल्लू सीधा करने में लगे हुए हैं ।

13. **अक़्ल का दुश्मन** –मूर्ख
यदि तुम अक़्ल के दुश्मन न होते तो तुम्हारे घर की यह अवस्था न होती ।

14. **अक़्ल के घोड़े दौड़ाना** – दूर की सोचना
चाहे लाख अक़्ल के घोड़े दौड़ाओ तुम इस बात को समझ नहीं सकते ।

15. **अपना घर समझना** – शर्म न करना
तकल्लुफ की क्या बात है? मैं तो आप का घर भी अपना ही घर समझता हूँ ।

16. **अपनी-अपनी डफली अपना-अपना राग** – फूट के कारण अलग-अलग होना
यह सभा नहीं है यहाँ तो सब अपनी-अपनी डफली अपना-अपना राग अलापते हैं ।

17. **आँखें तरसना** – देखने के लिए लालायित होना
उसे देखने के लिए तो मानों आँखे तरस रही हों ।

18. **आँखें बिछाना** – स्वागत करना
उनके आते ही राम ने उनके लिए अपनी आँखें बिछा दी ।

19. **आँखें सेंकना** – बुरे भाव से किसी सुन्दर वस्तु को देखना
गली मुहल्ले के युवक व्यर्थ घूमते हुए गलियों में अपनी आँखें सेकते फेरते हैं ।

20. **आस्तीन का साँप** – धोखेबाज मित्र
राम ने मोहन की बहुत सेवा की परन्तु मोहन तो निरा आस्तीन का साँप निकला ।

21. **अंगारे उगलना** – क्रोधपूर्ण वचन कहना
राम को देखते ही परशुराम ने अंगारे उगलने आरम्भ कर दिये ।

22. **अंधे की लकड़ी** – एकमात्र सहारा
मोहन के देहान्त के बाद उसके माता-पिता की अंधे की लकड़ी छिन गई ।

23. **अंग-अंग मुस्काना** – अत्यन्त प्रसन्न होना
विवाह के दिन दुल्हन का अंग-अंग मुस्काता था ।

24. **आकाश पाताल एक करना** – बहुत प्रयत्न करना
मुझे तो अपनी विजय के लिए आकाश पाताल एक करना है ।

25. **आगे पीछे फिरना** – खुशामद करना
क्यों व्यर्थ में परीक्षकों के आगे पीछे फिरते हो, जो उचित है वही हो जाएगा ।

26. **आटे दाल का भाव मालूम होना** – वास्तविकता समझ में आना
युद्ध होने पर तुम्हें आटे दाल का भाव मालूम हो जाएगा ।

27. **आपे से बाहर होना** – अत्यन्त क्रुद्ध होना
क्यों आपे से बाहर हो रहे हो, थोड़ी ही देर में तुम्हारा लड़का घर आ जाएगा ।

28. **आड़े हाथों लेना** – खरी खरी सुनाना
आज राम ने अपने प्रतिद्वन्दी को आड़े हाथों लिया ।

29. **आसमान पर चढ़ाना** – बहुत खुशामद करना
व्यर्थ ही हमारी कक्षा ने मनोहर को आसमान रखा है, जो कुछ उसे आता है वह हमें पता ही है ।

30. **आसमान पर थूकना** – किसी व्यक्ति का अपमान करना
नरेन्द्र मोदी जी की बुराई करना आसमान पर थूकना है ।

31. **आसमान से बातें करना** – बहुत ऊँचा उड़ना
थोड़ी ही देर में हमारा हवाई जहाज आसमान से बातें करने लगा ।

32. **आकाश पाताल का अन्तर** – बड़ा भेद
पूर्वी तथा पश्चिमी सभ्यता में आकाश पाताल का अन्तर है ।

33. **आग में घी डालना** – झगड़ा बढ़ाना
आपने इस अवसर पर ऐसी बातें छेड़ कर आग में घी डालने वाली बात की है ।

34. **आँखें चार होना** – मेल होना
ज्यों ही हमारी आँखें चार हुई, वह भाग निकला ।

35. **आँखों में धूल झोंकना** –धोखा देना
चोर हम सबकी आँखों में धूल झोंक कर भाग निकले ।

36. **अंगूठा दिखाना** – अपमानपूर्वक इन्कार करना
समझौता करके भी दुष्टों ने ठीक अवसर पर अंगूठा दिखा दिया ।

37. **आँखों से गिरना** – मान न रहना
एक बार आँखों से गिरने पर कृष्ण अपने अध्यापक का प्रिय न बन सका ।

38. **आँच न आने देना** – हानि न पहुँचने देना
हम अपने रक्त का अन्तिम कतरा रहने तक देश पर आंच न अपने देंगे ।

39. **आँखें फेरना** – प्रेम न करना
धन के समाप्त होने पर राम के मित्रों ने उससे आँखें फेर ली ।

40. **आँसू पोंछना** – सहानुभूति दिखाना
जब समय पर सहायता को नहीं आए तो अब आँसू पोंछने से क्या लाभ ?

41. **आँखें दिखाना** – क्रोध प्रकट करना
जब तक भारत पाकिस्तान को आँखें नहीं दिखाएगा तक तक चीन अपनी हरकत से बाज नहीं आएगा ।

42. **आँखें लाल होना** – नाराज होना
मोहन का उत्तर सुनते ही अध्यापक की आँखें लाल हो गई ।

43. **इधर उधर की** – गप्प मारना
इधर उधर की बात छोड़ कर अब असली मतलब पर आइए ।

44. **इने गिने** – बहुत थोड़े
इने गिने व्यक्ति ही जीवन में महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त कर सकते हैं ।

45. **इधर की दुनियाँ उधर होना** – अनहोनी बात करना
इधर की दुनियाँ उधर हो जाए तो भी मैं अपना स्कूल नहीं छोड़ूगा ।

46. **इज़्ज़त दो कोड़ी की करना** – आदर घटाना
भरी सभा में व्याख्याता ने सोहन की इज़्ज़त दो कोड़ी की कर दी ।

47. **ईद का चांद** – बहुत कम निकलने वाला
अब तो तुम ईद के चाँद ही हो गए हो । वर्षों में कभी इधर आते हो ।

48. **ईंट से ईंट बजाना** – सर्वनाश करना
हम शत्रु देश के आक्रमण करने पर उसकी ईंट से ईंट बजा देंगे ।

49. **उठ जाना** – मरना
महात्मा गाँधी के उठ जाने के पश्चात् देश में कोई आध्यात्मिक नेता नहीं रहा ।

50. **उधेड़ बुन –** सोच विचार
अब किस उधेड़ बुन में हो, चलो छुट्टी का घंटा बज चुका है ।

51. **उगल देना** – प्रकट करना
अध्यापक की मार-पीट के डर से विद्यार्थियों ने सब कुछ उगल दिया ।

52. **उड़ती चिड़िया पहचानना** – दूर की बात जानना
मैं तो उड़ती चिड़िया पहचानता हूँ, मुझसे क्या छिपाओगे ?

53. **उठा न रखना** – कोई कमी न रहने देना
अब आप सिर धड़ की बाजी लगा चुके हैं तो हम भी कुछ उठा नहीं रखेंगे ।

54. **उंगली उठाना** – बदनामी करना
कौन है जो मेरे होते हुए तुम्हारी ओर उंगली उठा सके ।

55. **उल्टे छुरे से मुंडना** – किसी को बेदर्दी से लूटना
क्यों बेचारे देशवासियों को उल्टे छुरे से मूंड रहे हो ।

56. **उंगली पर नचाना** – इशारे पर चलाना
जब तक सरदार पटेल जीवित रहे वे सभी राजाओं, महाराजाओं को उंगलियों पर नचाते रहे ।

57. **उन्नीस बीस होना** – थोड़ा अन्तर होना
कुश्ती लड़ने वाले दोनों पहलवान उन्नीस बीस हो गये ।

58. **एड़ी चोटी का जोर लगाना** – अत्यन्त परिश्रम करना
आप ऐड़ी चोटी का जोर लगा दें, परमात्मा स्वयं सफलता देंगे ।

59. **एक लकड़ी से हाँकना** – सबसे एक जैसा व्यवहार करना
जनता राज्य में छोटे बड़े सब एक लकड़ी से हाँके जाते हैं ।

60. **कटे पर नोन छिड़कना** – दुःख पर दुःख देना
इस दुःख के समय तुम्हारी जली कटी बातें कटे पर नोन छिड़कने वाली हैं ।

61. **कमर सीधी करना** – थकावट दूर करना
राम ने कहा, जरा कमर सीधी कर लूं तो बात करूँगा ।

62. **कल पड़ना** – चैन पड़ना
जब तक पूर्ण विश्वास न हो जाए, मुझे कल नहीं पड़ सकती ।

63. **काटो तो खून नहीं** – भयभीत होना
शेर को देखते ही देव की स्थिति काटो तो खून नहीं जैसी हो गई ।

64. **कांटे बोना** – बुराई करना
जिनके लिए तुम ने कांटे बोए हैं, उनसे फल की आशा मत करो ।

65. **काया पलट जाना** – बदल जाना
आपके पधारते ही नगर की काया पलट गई है ।

66. **किस खेत की मूली** – नाचीज़
तुम किस खेत की मूली हो ।

67. **कोख की सुच्ची** – जिसका बच्चा न मरा हो
परमात्मा की दया से शीला अभी तक कोख की सुच्ची है ।

68. **कमर टूटना –** हौंसला न रहना
पिता के सिर से उठते ही सारे परिवार की कमर टूट गई ।

69. **कलेजे पर सांप लोटना** – बुरा लगना, दिल जलना
नेताजी के कार्यों से अंग्रेज़ों के कलेजे पर सांप लोटने लगे ।

70. **कान कतरना** – बढ़ कर काम करना
तुम ने तो चोरी करने में नामी चोरों के भी कान कतर डाले ।

71. **काग़ज़ी घोड़े दौड़ाना** – बातें बनाना, काम न करना
अब काग़ज़ी घोड़े दौड़ाने से कुछ नहीं बनेगा, प्रत्युत कुछ करना ही होगा ।

72. **कान खुलना** – होश ठिकाने आना
यदि आज भी तुम्हारे कान नहीं खुले तो तुम्हारा परमात्मा ही मालिक है ।

73. **कान पकड़ना** – तोबा करना
मार पड़ने पर राम ने स्कूल समय में भागने से कान पकड़े ।

74. **कान भरना** – किसी को चुगली करना
श्याम ! चिरकाल से पिता जी के कान भरने का कुछ परिणाम तो निकलना ही था, सो आज निकल गया ।

75. **कान पर जूं न रेंगना** – परवाह न करना
शत्रु सिर पर आ पहुँचे हैं और उनके कान पर जूं नहीं रेंगती ।

76. **कफ़न सिर पर बांधना** – मरने मारने के लिए तैयार रहना
जैसे ही सैनिक कफ़न सिर पर बांध कर निकले तो विजय प्राप्त करके ही वापिस लौटे ।

77. **कसौटी पर कसना** – अच्छी तरह आजमाना
जब तक कसौटी पर नहीं कसा जाए तो खरे खोटे की पहचान कैसे हो सकती है ।

78. **काला अक्षर भैंस बराबर** – मूर्ख, अनपढ़
मोहन के लिए तो काला अक्षर भैंस बराबर है, व्याकरण के बारे में उसे क्या पता ?

79. **कलम तोड़ना** – अच्छा लिखना
इस उपन्यास में लेखक ने कलम तोड़ कर रख दी ।

80. **काला नाग** – अत्यंत कुटिल
वह तो काला नाग ही निकला, उसने अपने सगे भाई को भी नहीं छोड़ा ।

81. **काम आना** – मारा जाना
जब लाखों लोग कलिंग युद्ध में काम आए तो अशोक की अन्तर्रात्मा कराह उठी ।

82. **किताब का कीड़ा** – बहुत पढ़ने वाला
केवल किताब का कीड़ा बनने से भी जीवन में सफलता नहीं मिला करती ।

83. **किस मुँह से** – किस बल बूते पर
अब किस मुँह से मुझे मिलने आए हो ? अब तक तो मैं ही आप का शत्रु था ।

84. **किस्सा खतम करना** – झगड़ा निपट जाना
चलो आज सदा के लिए किस्सा खतम करें ।

85. **कुत्ते की मौत मरना** – अपमानजनक मृत्यु
कुत्ते की मौत मरने की अपेक्षा रणक्षेत्र में मरना बहुत अच्छा है ।

86. **कोई दिन का मेहमान** – मृत्यु के समीप
अब तो बूढ़ा कोई दिन का मेहमान ही लगता है ।

87. **कोरा जवाब** – इन्कार
आपने कोरा जवाब देकर मुझे हताश कर दिया ।

88. **कोल्हू का बैल** – बड़ा परिश्रम अथवा सीमित ज्ञान वाला
राम तो इस युग में भी कोल्हू का बैल बना हुआ है ।

89. **खटाई में पड़ना** – किसी कार्य के होने में ढील पड़ना
अब तो तुम्हारे विवाह की बात खटाई में पड़ गई है ।

90. **खरी खोटी सुनना** – सच सच कह देना
कौन है जो नेता जी को खरी खोटी सुना सके ।

91. **खिचड़ी पकाना** – गुप्त षडयंत्र रचना
अपनी-अपनी खिचड़ी पकाने से क्या लाभ ? मिल कर एक निश्चय कर लो ।

92. **खिल्ली उड़ना** – हँसी मजाक करना
बुजुर्गों और महिलाओं की कभी भी खिल्ली नहीं उड़ानी चाहिए ।

93. **खाक छानना** – मारे मारे फिरना
मैंने वर्षों दर-दर की खाक छानी, परन्तु कुछ नहीं बना ।

94. **खाला जी का घर** – आसान काम
आई०ए०एस० पास करना तुम्हारे लिए खाला जी का घर नहीं ।

95. **खून उबलना** – जोश में आना
तुम्हारी बेहूदा बातों से मोहन का खून उबल रहा है ।

96. **खून सूखना** – डर जाना
कोर्ट केस में हारने के कारण श्याम का खून सूख गया ।

97. **ख्याली पुलाव पकाना** – काम न करना
ख्याली पुलाव पकाने से क्या होता है, हाथ हिलाओगे तो कुछ बनेगा ।

98. **खेत रहना** – मर जाना
हज़ारों सैनिक युद्ध में खेत रहे ।

99. **खेलना खाना** – चार दिन आनन्द के
अभी तो उसके खेलने खाने के दिन हैं कुछ दिन बाद उसे झंझट में डाल लेना ।

100. **खाने को दौड़ना** – क्रोध में आना
मेरी बात सुन कर वह मुझे खाने को दौड़ा ।

101. **गुदड़ी के लाल** – छिपा गुणी
लाल बहादुर शास्त्री तो गुदड़ी का लाल निकले थे ।

102. **गूंगे का गुड़** – अवर्णनीय सुख
प्रभु भक्ति तो गूंगे के गुड़ की भाँति है ।

103. **गाढ़े का साथी** – विपत्ति का मित्र
राम तो मेरा गाढ़े का साथी है ।

104. **गोली मारना** – तुच्छ समझना
पिछली बातों को गोली मारो और आगे का कार्यक्रम तैयार करो ।

105. **गत बनाना** – बुरी हालत करना
आज तो काम करते-करते उनकी गत बन गई है ।

106. **गर्दन उठाना** – विरोध करना
कौन है जो हमारे सामने गर्दन उठा सके ।

107. **गले का हार** – अत्यन्त प्रिय
अब तो राम मेरे गले का हार बन गया है ।

108. **गर्दन पर सवार होना** – पीछा न छोड़ना
क्यों सारा दिन मेरी गर्दन पर सवार रहते हो ?

109. **गला घोंटना** – जबरदस्ती करना
ग़रीब का गला घोंटने से क्या मिलेगा । कुछ तो धर्म की बात करो ।

110. **गिरगिट की तरह रंग बदलना** – अस्थिर मति
आज सभी समाजों में गिरगिट की तरह रंग बदलने वाले लोग मिल जाते हैं ।

111. **गुड़ गोबर कर देना** – बनी बात बिगाड़ना
तुम ने तो जरा सी बात में ही गुड़ गोबर कर दिया ।

112. **गुलछर्रे उड़ाना** – मजे करना
वह तो सदा गुलछर्रे उड़ाने में लगे रहते है ।

113. **गाँठ का पूरा** – स्वार्थी धनी
मनोहर तो गाँठ का पूरा है, उसे किसी का हित प्रिय नहीं ।

115. **गाँठ का बांधना** – भली भांति स्मरण रखना
मेरी इन बातों को गाँठ में बाँध लो, किसी समय काम आएगी ।

116. **गुरु घंटाल** – बड़ा चालाक
राम कुमार तो बड़ा ही गुरु घंटाल निकला, मोहन को भी चूना लगा गया ।

117. **गागर में सागर** – थोड़े में बहुत
कवि ने इस रचना में तो गागर में सागर भर दिया ।

118. **घर का शेर** – घर पर ही बल दिखाना
वह तो घर का शेर बना फिरता है, बाहर निकले तो पता चले ।

119. **घर का रास्ता लेना** – चले आना
अच्छे बालक छुट्टी मिलते ही अपने घर का रास्ता लेते हैं ।

120. **घर फूंक तमाशा देखना** – अपना नाश करके खुश होना
घर फूंक तमाश देखने से क्या लाभ ? कुछ तो होश की दवा करो ।

121. **घाव हरा करना** – दुःख की याद दिलाना
आपने उसकी बात करके मेरे सभी घाव हरे कर दिये ।

122. **घुल घुल कर मरना** – कष्ट उठा कर मरना
निर्धन सारा जीवन घुल घुल कर मरते हैं ।

123. **घर बैठे** – आसानी से
आज के युग में घर बैठे काम नहीं निकलते ।

124. **घर में गंगा** – बिना परिश्रम अभीष्ट पदार्थ की प्राप्ति
जब घर में गंगा बहती हो तो बाहर जाने का क्या लाभ?

125. **घर सिर पर उठाना** – बहुत शोर करना
बच्चों ने तो अकारण ही घर सिर पर उठा रखा है।

126. **घड़ों पानी पड़ना** – बहुत शर्मिन्दा होना
जब मैंने सोहन को उसकी कही बातें सुनाई तो उस पर घड़ों पानी पड़ गया।

127. **घाट घाट का पानी पीना** – भिन्न भिन्न स्थानों से अनुभव प्राप्त करना
रमेश को नादान न समझो, उसने तो घाट घाट का पानी पी रखा है।

128. **घाव पर नमक छिड़कना** – दुःख के पिछले घावों को ताजा करना
तुम्हारी आज की बातें तो मेरे घावों पर नमक छिड़कने का कार्य कर रही हैं।

129. **घास खोदना** – व्यर्थ कार्य करना
ऐसा लगता है कि जीवन में तुमने तो केवल घास ही खोदा है।

130. **घी के दिये जलाना** – अत्यन्त प्रसन्न होना
राम के वन से लौटने पर लोगों ने घी के दिये जला कर उनका स्वागत किया।

131. **घोड़े बेच कर सोना** – गाढ़ी निद्रा में सोना
विदेश में रह कर घोड़े बेच कर सोना उचित नहीं है। सावधानी अनिवार्य है।

132. **घात में बैठना** – अनुकूल अवसर की ताक में रहना
कदम कदम पर हमारे शत्रु घात में बैठे रहते हैं। अतः सावधानी अनिवार्य है।

133. **चिकना घड़ा** – बेशर्म
वह तो चिकना घड़ा है। उस पर अच्छी बुरी बातों का कोई असर नहीं पड़ता।

134. **चुटकियों में** – बहुत जल्दी
मोहन गणित में बहुत तेज है तभी तो चुटकियों में प्रश्न हल कर देता है।

135. **चार पैसे** – कुछ धन
यदि अब भी चार पैसे न कमाए तो कब कमाओगे ?

136 **चार दिन की चांदनी** – अस्थिर सुख
चार दिन की चांदनी और फिर अन्धेरी रात है ।

137. **चादर से बाहर पैर पसारना** – आय से अधिक व्यय करना
चादर से बाहर पैर पसारने से ही प्रायः दीवाले निकला करते हैं ।

138. **चुल्लू भर पानी में डूब मरना** – शर्म करना
यदि तुम में कुछ भी गैरत है तो चुल्लू भर पानी में डूब मरो ।

139. **चकमा देना** – भाग जाना
चोर सिपाही को चकमा देकर चम्पत हो गया ।

140. **चम्पत होना** – भाग जाना
पुलिस की आहट पाते ही चोर चम्पत हो गया ।

141. **चलती गाड़ी में रोड़ा अटकाना** – चलते काम में रुकावट डालना
आप के आज के प्रस्ताव ने चलती गाड़ी में रोड़ा अटका दिया ।

142. **चल बसना** – मर जाना
दुर्घटना होते ही नवयुवक चल बसा ।

143. **चाल चलना** – धोखा देना
दुष्ट व्यक्ति ऐसी चाल चलते हैं कि बुद्धिमान भी बच नहीं पाते ।

144. **चिकनी चुपड़ी बातें करना** – मीठी-मीठी बातें करना
चालाक लोगों की चिकनी चुपड़ी बातों में न आये, वे तो सदा धोखा ही देते हैं ।

145. **चूड़िया पहनना** – कायरता का प्रर्दशन करना
वीर सेना नायक ने चूड़िया पहने हुए सैनिकों को सेना से बाहर का रास्ता दिखा दिया ।

146. **चेहरा उतरना** – कमजोर होना
लम्बी बीमारी के कारण उसका चेहरा ही उतर गया है ।

147. **चेहरे पर हवाइयाँ उड़ना** – बहुत डर जाना
कठिन प्रश्न देख कर परीक्षार्थियों के चेहरे पर हवाइयाँ उड़ने लगीं ।

148. **चोली दामन का साथ** – घनिष्ठ सम्बन्ध
उनका तो सदा से ही चोली दामन का साथ बना रहा ।

149. **चैन की बंसी बजाना** – आनन्द मग्न
देश पर संकट आने पर भी चैन की बंसी बजाने वाले देश द्रोही ही होते हैं ।

150. **चौका लगाना** – साफ करना
चोरों ने मकान मालिक के यहाँ घुस कर घर में चौका ही लगा दिया ।

151. **चोटी से ऐड़ी तक पसीना बहाना** – बहुत मेहनत करना
चोटी से ऐड़ी तक पसीना बहाने से ही रोटी कमाई जाती है ।

152. **छाती पर पत्थर रखना** – चुपचाप कष्ट सहना
परिस्थितियों के अनुसार उसने अब तो छाती पर पत्थर रख लिया है ।

153. **छाती पर साँप लोटना** – ईर्ष्या करना
गणेश के पास होने पर उसके विरोधियों की छाती पर साँप लोटने लगे ।

154. **छोटे मुँह बड़ी बात** – अपने सामर्थ्य से बढ़ जाना
नरेन्द्र मोदी की आलोचना करने वाले केवल छोटे मुँह बड़ी बात करने में लगे हैं ।

155. **छटी का दूध याद आना** – अत्यन्त कष्ट होना
जब मैंने उसकी शरारतों का जवाब दिया तो उसे छटी का दूध याद आ गया ।

156. **छक्के छुड़ाना** – पराजित होना
भारतीय सैनिकों की कार्यवाही ने पाकिस्तानी सेना के छक्के छुड़ा दिये ।

157. **छंटा हुआ** – शैतान व्यक्ति
वह तो दुनियाँ भर का छंटा हुआ है । उसके बारे क्या बात करनी ।

158. **छाती पर मूंग दलना** – किसी केसम्मुख उसके विरुद्ध काम करना
चीन कब से हमारी छाती पर मूंग दल रहा है, आखिर कब तक उसे देखेंगे ।

159. **छान मारना** – तलाशी लेना
बम का पता चलते ही सैनिकों ने पूरी बस्ती को छान मारा ।

160. **जामे से बाहर होना** – आपे से बाहर होना
क्यों अकारण ही जामे से बाहर हो रहे हो, कुछ विचार भी करो ।

161. **जी को मारना** – मन को वश में करना
मैंने तो जी को मार रखा है, इसलिए विरोधी स्थिति का मुझ पर कोई असर नहीं ।

162. **जी छोटा होना** – हौंसला गिरना
क्यों जी छोटा करते हो ? दिल लगा कर परिश्रम करो, अवश्य सफल होंगे ।

163. **जूतियाँ चटखारते फिरना** – इधर उधर भटकते फिरना
स्कूल में जाने के पश्चात् मोहन जूतियाँ चटखारता फिरता है ।

164. **जान तोड़ना –** पूरा प्रयत्न करना
सैनिक तो जान तोड़ कर लड़े परन्तु देशद्रोहियों ने शत्रु का साथ दिया ।

165. **जूत पड़ना** – भारी नुकसान होना
मंहगाई के इस दौर में बड़े जूत पड़ने से वह दीवालिया हो गया ।

166. **जूते चाटना** – खुशामद करना
अब पैसे पैसे के लिए जूते चाटने से क्या लाभ है, पहले तो किसी का सम्मान किया ही नहीं ।

167. **जीती मक्खी निगलना** – महाकृपण
वे तो जीती मक्खी निगलने वाले हैं उनसे क्या आशा हो सकती है ?

168. **जान पर खेलना** – जीवन देना
मातृभूमि की रक्षा के लिए प्रत्येक सैनिक अपनी जान पर खेलने के लिए आतुर है ।

169. **जल भुन कर कोयला होना** – ईर्ष्या से दुःखित होना
मोहन के प्रथम आने पर उसका साथी जल-भून कर कोयला हो गया ।

170. **जी उचाट होना** – उदास होना
मेरा तो यहाँ आकर एक दिन में ही जी उचाट हो गया है ।

171. **जलती आग में घी डालना** – झगड़ा बढ़ाना
राम तुम्हारा इसी प्रकार जलती आग में घी डालना उचित नहीं लगता ।

172. **जिन्दगी के दिन पूरे करना** – जैसे-तैसे दिन बिताना
क्या करें अब तो ज़िन्दगी के दिन पूरे कर रहे हैं ।

173. **जान के लाले पड़ना** – संकट में होना
हमें तो जान के लाले पड़े हैं और आप खुश हो रहे हो ।

174. **जवानी जमा खर्च** – व्यर्थ गप्पें मारना
जवानी जमा खर्च करना व्यर्थ है, कुछ तो मतलब के काम कर लो ।

175. **जहर का घूंट पीना** – शान्त रहना
कड़वी बातें सुन कर भी वह जहर का घूंट पी कर रह गया ।

176. **टका सा जवाब** – कोरा इन्कार
मेरी इस नम्रता पर भी उसने टका सा जवाब दे दिया ।

177. **टक्कर का** – मुकाबले का
उसकी टक्कर का कोई भी सैनिक इस टुकड़ी में नहीं है ।

178. **टपक पड़ना** – अचानक प्रकट होना
इस समय आप कहाँ से टपक पड़े ।

179. **टस से मस न होना** – परवाह न करना
यह सब कुछ सुन कर भी वह टस से मस न हुआ ।

180. **टट्टी की आड़ में शिकार खेलना** – छिप कर शरारतें करना
सामने आओ तो तुम्हारा पता लगे, टट्टी करी आड़ में शिकार खेलने से क्या लाभ ?

181. **टांग अड़ाना** – रुकावट डालना
राम हर बात में अपनी टांग अड़ाता है ।

182. **टोपी उछालना** – अपमान करना
सब की टोपी उछालना कुछ एक समाचार पत्रों का काम ही है ।

183. **टांय टांय फिश** – बातें बहुत बनाना
बस इतने में ही उसकी टांय टांय फिश हो गई ।

184. **टोह लगाना** – खोजना
सिपाहियों ने डाकुओं की टोह लगा ली ।

185. **ठोकर लगाना** – दुःख अनुभव करना
कुछ लोग जीवन में ठोकर लगने से सम्भल जाते हैं ।

186. **ठोकरें खाना** – कष्ट भोगना
बेचारा रमेश पिता के देहान्त के पश्चात् दर-दर की ठोकरें खा रहा है ।

187. **ठिकाने लगाना** – मार डालना
हमने समय पर अपने शत्रुओं को ठिकाने लगा दिया ।

188. **ठन ठन गोपाल** – मूर्ख
वह तो कोरा ठन ठन गोपाल है ।

189. **ठोक बजाना** – परखना
हर वस्तु को लेने से पहले अच्छी तरह ठोक बजा कर देख लीजिए ।

190. **टेढ़ी खीर** – कठिन काम
आई.ए.एस. की परीक्षा पास करना वास्तव में टेढ़ी खीर है ।

191. **डोरी ढीली छोड़ना** – खुली छुट्टी देना
मैंने तो अभी डोरी ढीली छोड़ रखी है, जब पड़ताल होगी तब देखेंगे ।

192. **ढाक के तीन पात** – कुछ परिवर्तन न होना
वर्ष के बाद देखने पर पता लगा कि हालत वही ढाक के तीन पात वाली है ।

193. **तलवे चाटना** – चापलूसी करना
वह तो काम के लिए हर एक के तलवे चाटता है ।

194. **तलवार की धार पर चलना** – कठिन मार्ग पर चलना
सदा सत्य बोलना तलवार की धार पर चलने से कम नहीं ।

195. **तीस मारखां** – दिग्गज
मोहन इन दिनों बड़ा तीस मारखां बना फिरता है ।

196. **तिल का ताड़ करना** – मामूली बात को बढ़ाना
तुम ने तो तिल का ताड़ कर दिया, आखिर ऐसी क्या बात थी ?

197. **तीन पाँच करना** – झगड़ना
हर एक से तीन पाँच करना अच्छा नहीं, थोड़ा प्यार से भी बात कर लें ।

198. **तारे तोड़ना** – भरसक प्रयत्न करना
तुम्हारी इच्छा पूर्ण करने के लिए तो मैं तारे तोड़ सकता हूँ ।

199. **ताक में रहना** – अवसर ढूंढना
मैं सदा इस ताक में रहता हूँ कि तुम कब आते हो ।

200. **तिलों में तेल न होना** – निस्सार
इन तिलों में तेल नहीं है। व्यर्थ परिश्रम करने से कोई लाभ नहीं होगा।

201. **तीन तेरह करना** – तितर बितर करना
वीर सैनिकों ने कुछ ही क्षणों में शत्रुओं की सेना को तीन तेरह कर दिया।

202. **तू-तू मैं-मैं करना** – झगड़ा करना
थोड़ी ही देर में सदस्यों ने तू-तू मैं-मैं करना आरम्भ कर दिया। परिणाम शून्य निकला।

203. **तेवर बदलना** – क्रुद्ध होना
काम निकलने पर तुरन्त ही उन्होंने तेवर बदल लिये।

204. **तूती बोलना** – प्रसिद्ध
अब तो आप की तूती बोलती है।

205. **थाली का बैंगन** – किये हुए वचन से बदल जाना
राम कुमार तो ठहरा थाली का बैंगन उसका कौन विश्वास करे?

206. **थर थर कांपना** – डरना
अध्यापक जी के कक्षा में आने पर सब विद्यार्थी थर थर कांपने लगे।

207. **थर्रा जाना** – सहम जाना
बादल की जोरदार गरज सुन कर वे सब थर्रा गए।

208. **दम भरना** – स्वीकृति प्रकट करना
प्रत्येक उसकी मित्रता का दम भरना चाहता है। ताकतवर से सभी डरते हैं।

209. **दम मारना** – मुकाबले के लिए तैयार होना
कौन है जो भारतीय सैनिकों के समक्ष दम मार सके।

210. **दांत खट्टे होना** – बुरी तरह पराजित होना
भारतीय सैनिकों ने युद्ध में शत्रु के दांत खट्टे कर दिये।

211. **दम घुटना** – घबराना
मेरा तो यहाँ पर दम घुटता है। आप पता नहीं कैसे रहते हैं?

212. **दाँत निकालना** – हँसते रहना
व्यर्थ दाँत निकालने से क्या लाभ? मतलब की बात कर लिया करो।

213. **दाँतों तले उंगली दबाना** – हैरान होना
हमारी स्थिति देख कर कौन दाँतों तले उंगली नहीं दबाता ।

214. **दाई से पेट छुपाना** – भेदी से भेद छुपाना
मुझे अपनी बात न बता कर तुम दाई से पेट छिपा रहे हो ।

215. **दाना पानी** – भाग्य
यदि हमारा दाना पानी होगा तो हम यही रहेंगे ।

216. **दाल में काला** – सन्देह होना
दाल में कुछ काला लगता है, तभी तो भाग दौड़ हो रही है ।

217. **दाहिना हाथ** – परम सहायक
वह तो तुम्हारा दाहिना हाथ है फिर भी तुम उस पर विश्वास नहीं करते ।

218. **दिन दुगुनी रात चौगुनी** – बहुत अधिक उन्नति
परमात्मा करे कि आप दिन दूनी रात चौगनी उन्नति करें ।

219. **दिल मिलना** – प्रेम होना
जब दिल मिल गया तो फिर झगड़ा ही क्या है ?

220. **दो टूक बात** – साफ जबाब
मैंने तो रोज की चखचख की बजाये उन्हें दो टूक बात कह दी ।

221. **दुनियाँ की हवा लगना** – चालाक होना
अब तुम्हें भी दुनियाँ की हवा लग गई है ।

222. **दीन दुनियाँ को भूल जाना** – मदमस्त रहना
मैं तो इन दिनों अपने अध्ययन में इतना मस्त हूँ कि दीन दुनियाँ को भूल गया हूँ ।

223. **दुम दबा कर भाग जाना** – हार कर भागना
भारतीय सेना के पहुँचते ही आतंकी दुम दबा कर भाग गये ।

224. **दो कोड़ी का आदमी** – साधारण व्यक्ति
वह तो दो कोड़ी का आदमी भी नहीं, तुम क्यों उसके पीछे पड़े हो ?

225. **दूध का दूध पानी का पानी** – वास्तविकता
व्यापारी ने दूध का दूध और पानी का पानी कर दिया ।

226. **दो नावों पर पैर रखना** – दोनों पक्षों के साथ रहना
दो नावों पर पैर रख कर कभी कोई पार नहीं उतर सकता ।

227. **दूध के दांत न टूटना** – अनुभव शून्य
अभी तो तुम्हारे दूध के दांत भी नहीं टूटे हमें क्या समझाते हो ?

228. **धोबी का कुत्ता न घर का न घाट का** – किसी तरफ का न रहना
तुम्हें स्पष्ट रहना चाहिए नहीं तो धोबी का कुत्ता न घर का न घाट का की स्थिति में आ जाओगे ।

229. **धत्ता बताना** – धोखा देना
काम निकलने पर उन्होंने भी हमें धत्ता बता दिया ।

230. **धज्जियां उड़ाना** – दोष निकालना
चीन ने भारत पर आक्रमण करके पंचशील सिद्धान्त की धज्ज्यां उड़ा दी है ।

231. **धूप में बाल सफेद करना** – बड़ी आयु में भी अनुभव रहित होना
हम ने धूप में बाल सफेद नहीं किए, आखिर हमें भी कुछ अनुभव है ।

232. **धोखे की टट्टी** – भ्रम में डालने वाली वस्तु
धोखे की टट्टी से कम तक शिकार करोगे, सामने आकर मुकाबला क्यों नहीं करते ।

233. **धोती ढीली होना** – डर जाना
शत्रु का नाम सुन कर जिसकी धोती ढीली होती है वे क्या लड़ेंगे ?

234. **धाक जमाना** – प्रभाव डालना
मास्टर जी ने आते ही धाक जमा ली ।

235. **न तीन में न तेरह में** – साधारण व्यक्ति
वहाँ पर मैं तो न तीन में हूँ और न ही तेरह में । मेरा कोई सुझाव उचित नहीं होगा ।

236. **न इधर के न उधर के** – किसी भी पक्ष में न रहना
आप से मिल कर हम न इधर के रहे न उधर के ।

237. **नमक मिर्च लगाना** – बहुत बढ़ा चढ़ा कर कहना
जब उन्होंने नमक मिर्च लगा कर सब बातें कह दी तो उसे बड़ा क्रोध आया ।

238. **नजर लगना** – अपशगुन हो जाना
ऐसा लगता है कि आप को किसी की नजर लग गई है ।

239. **निन्यानवे का फेर** – धन कमाने में रहना
तुम तो निन्यानवे के फेर में रहते हो, जरा अध्यात्मवाद की तरफ भी ध्यान दो ।

240. **नौ दो ग्यारह होना** – एक दम भाग जाना
मुझे देखते ही वह नौ दो ग्यारह हो गया ।

241. **नाक रखना** – इज़्ज़त बचाना
आप ने हमारे देश की नाक रख ली ।

242. **नाक कटना** – बदनामी होना
तुम्हारे इस कृत्य से समाज में हमारी नाक कट गई ।

243. **नाक में दम करना** – तंग करना
बच्चों ने तो मेरा नाक में दम कर रखा है ।

244. **नाक रगड़ना** – मिन्नत करना
व्यर्थ नाक रगड़ने से क्या लाभ इन तिलों में तेल नहीं ।

245. **नाकों चने चबाना** – बहुत तंग करना
हमने शत्रु सेना को नाकों चने चबाये जिससे शत्रु डर कर भाग गया ।

246. **नाच नचाना** – इच्छानुकूल कार्य करना
उसे तो रमेश अपने इशारे पर नाच नचाता रहता है । वह क्या कर सकता है ?

247. **नानी याद आना** – होश ठिकाने आना
यदि हमने उत्तर में कुछ कह दिया तो तुम्हारी नानी याद आ जाएगी ।

248. **नीचा दिखाना** – हरा देना
भारतीय सैनिकों ने युद्ध में शत्रु को नीचा दिखाया ।

249. **नीला पीला होना** – क्रोध में आना
उसकी गालियाँ सुन कर राम नीला पीला हो गया ।

250. **नाक की लाज रखना** – प्रसिद्धि बनाए रखना
भगवान् ! अब तो अपने नाम की लाज रख लो ।

251. **पत्थर की लकीर** – दृढ़ निश्चय
अब तो इसे पत्थर की लकीर समझिये, जो कह दिया सो कह दिया ।

252. **पट्टी पढ़ाना** – सिखाना
वकील ने अपराधी को ऐसी पट्टी पढ़ाई कि वह उन शब्दों के सिवाय कुछ न बोला ।

253. **पांचों उंगलियां घी में होना** – अत्यन्त लाभ
इन दिनों राम कुमार की पांचों उंगलियां घी में है । राम का साथ जो मिल गया ।

254. **पांव धरती पर न पड़ना** – अत्यन्त प्रसन्नता में अपने अभिमान का प्रकाशन
इन दिनों उसके पांव धरती पर नहीं पड़ते ।

255. **पानी फिरना** – बरबाद होना
बाढ़ के कारण उसके परिश्रम पर पानी फिर गया ।

256. **पुराना घाव** – अनुभवी व्यक्ति
वह तो पुराना घाव के समान है उसकी बातों में न आना ।

257. **पुल बांधना** – खूब खुशामद करना
उसने अध्यापक की प्रशंसा में पुल बांध दिये जिससे सब हैरान हो गये ।

258. **पानी पानी होना** – शर्मिन्दा होना
अध्यापक की झाड़ झपड़ से वह पानी पानी हो गया ।

259. **पते की कहना –** गुप्त बात का प्रकाश करना
उसने तो पते की कह दी वह तो छिपा रुस्तम निकला ।

260. **पीठ दिखाना** – युद्ध से भागना
युद्ध से पीठ दिखाकर तो केवल कायर ही जाता है, वीर नहीं ।

261. **पानी का बुलबुला** – क्षणभंगुर
मानव जीवन पानी के बुलबुले के समान है ।

262. **पापड़ बेलना –** बहुत प्रकार के काम करना
हमने सब पापड़ बेल लिए हैं, परन्तु कुछ नहीं बना ।

263. **पीठ ठोकना –** उत्साह बढ़ाना
जब आप भी उनकी पीठ ठोक रहे हैं तो वे कैसे रह सकते हैं ।

264. **पेट में चूहे कूदना** – भूख लगना
मेरे पेट में तो आज प्रातः से चूहे कूद रहे हैं ।

265. **पोल खोलना –** छिपे भेद को प्रकट करना
भरी सभा में प्रधान जी ने उस की पोल खोल दी ।

266. **पैरों तले जमीन निकलना** – बहुत हैरान होना
उसके फेल होने की सूचना से मेरे पैरों तले की जमीन निकल गई ।

267. **पौ बारह होना** – भारी लाभ होना
आज कल तुम्हारे तो पौ बारह हैं ।

268. **फूट फूट कर रोना** – बहुत रोना
पिता के देहान्त पर वह फूट फूट कर रोया ।

269. **फूंक फूंक कर कदम रखना** – संभल कर काम करना
जीवन में सदा फूंक फूंक कर कदम रखना चाहिए ।

270. **फुस फुस करना** – कानाफूसी करना
परीक्षा भवन में कुछ विद्यार्थी फुस फुस करते रहे ।

271. **फड़क उठना** – उमंग में आना
शत्रु की ललकार सुन कर वीरों के अंग फड़क उठे ।

272. **फूंक देना** – जान भरना
उनके भाषणों ने तो मुर्दों में भी प्राण फूंक दिये ।

273. **फूल सूंघ कर रहना** – बहुत कम खाना
फूल सूंघ कर तो नहीं रहा जाता कुछ न कुछ तो जीवन रक्षा के लिए खाना पड़ेगा ।

274. **फेर में आना** – धोखे में आना
अनेक आदमी इन साधु लोगों के फेर में आ जाते हैं ।

275. **बात का बतंगड़ बनाना** – झगड़ा बढ़ाना
बात का बतंगड़ बनाने से क्या लाभ, सोच कर बोलो तो अच्छा रहेगा ।

276. **बाल की खाल उतारना** – बहुत नुकताचीनी करना
तुम तो बाल की खाल उतारते हो, नहीं तो इन बातों में क्या रखा है ।

277. **बाल बाल बचना** – कुछ नुकसान न होना
आज मैं बाल-बाल ही बचा, साईकल दुर्घटना में मर ही चला था ।

278. **बात का धनी** – वचन का पक्का
आप तो बात के धनी हैं, अब क्यों पीछे हटते हो ।

279. **बन्दर का हाल मछन्दर जाने** – भेदी ही एक दूसरे के भेद जानते हैं ।
यहाँ तो बन्दर का हाल मछन्दर जाने वाली स्थिति ही पैदा हो रखी है ।

280. **बगला भगत** – महा कपटी
आप जैसे कई बगले भगत हमने देखे हैं ।

281. **बाजू टूटना** – सहारा न रहना
पुत्र के देहान्त से तो मानो पिता का बाजू ही टूट गया ।

282. **बन्दर घुड़की** – धमकाना
बन्दर घुड़की देने से कोई लाभ नहीं, काम की बात करें तो अच्छा रहेगा ।

283. **बगलें झांकना** – निरुतर होना
मेरे प्रश्न पूछने पर वे बगलें झाकने लगे ।

284. **बलियों उछलना** – प्रसन्न होना
मैच जीतने पर स्कूल के बाल बलियों उछलने लगे ।

285. **बायें हाथ का खेल** – आसान काम
हमारे लिए परीक्षा में पास होना तो बाएं हाथ का खेल है ।

286. **बत्तीस दांतों में जीभ** – सब ओर से शत्रुओं से घिर जाना
इन दिनों मेरी स्थिति बत्तीस दांतों में जीभ की सी है ।

287. **बगल में मुंह डालना** – शर्मिन्दा होना
बगल में मुंह डाल कर घूमते हो, यदि झूठ न बोलते तो ऐसा न होता ।

288. **बेकार से बेगार भली** – कुछ न करने से किसी का मुफ्त काम करना अच्छा है ।
बेकार से बेगार भली के अनुसार दफ्तर जाता रहता है। मिलता-मिलाता कुछ नहीं ।

289. **बाग-बाग होना** – खुश होना
बच्चे के जन्म पर परिवार बाग-बाग हो रहा है ।

290. **बालू की भीत** – अस्थिर
संसार की स्थिति बालू की भीत जैसी होती है ।

291. **बीड़ा उठाना** – जिम्मा लेना
हमने तो संसार भर में विश्व प्रेम की भावना पैदा करने का बीड़ा उठा रखा है ।

292. **बे सिर पैर की** – असम्बद्ध
बे सिर पैर की उड़ाने से क्या लाभ? मतलब की बात कर लिया करो।

293. **बोल बाला होना** – प्रसिद्ध होना
उस समय नेता जी सुभाष चन्द्र बोस का बोल बाला हो रहा था।

294. **बिना सींग के बैल** – मूर्ख
तुम तो बिना सींग के बैल लगते हो। कुछ ज्ञान की बात कर लिया करो।

295. **बाँछे खिल जाना** – प्रसन्न होना
परीक्षा में प्रथम आने के समाचार से ही उसकी बांछे खिल गई।

296. **बाल पकना** – बूढ़ा होना
जब बाल पक जाते हैं तो शरीर भी शिथिल होने लगता है।

297. **बेपर की उड़ाना** – झूठी बात फैलाना
जलसे वालों ने बेपर की उड़ा रखी है कि प्रधानमंत्री जालन्धर में आ रहे हैं।

298. **भिनक पड़ना** – किसी बात का पता करना
जब उसके कान में भिनक पड़ी तो वह एकदम से सतर्क हो गया।

299. **भाड़े का टट्टू** – किराए का आदमी
अफरातफरी मचाने के लिए उसने तो भाड़े के टट्टू तैयार कर रखे हैं।

300. **भले का जमाना नहीं** – भलाई का कोई फल नहीं
आज भले का जमाना नहीं है, यह सर्वमान्य ही है।

301. **भेड़ चाल** – अंधाधुंध अनुकरण
दुनियाँ में भेड़ चाल बहुत है, अपनी अक्ल से तो बहुत कम लोग काम करते हैं।

302. **भाड़ झोंकना** – व्यर्थ समय खोना
पूरा वर्ष पढ़ने पर भी तुम्हें कुछ नहीं आया आखिर भाड़ ही झोंकते रहे।

303. **भिड़ के छत्ते को छेड़ना** – किसी झगड़ालू या शरारती के साथ झगड़ा करना
तुम ने मुनीम जी को छेड़ कर भिड़ के छत्ते को छेड़ लिया है ।

304. **माथे पर बल पड़ना** – तेवर चढ़ाना
मारे क्रोध के उसके माथे पर बल पड़ गये ।

305. **मिट्टी खराब करना** – दुर्गति करना
क्यों अपनी मिट्टी खराब कर रहे हो, सफलता पाना चाहते हो तो परिश्रम करो ।

306. **मुँह लगाना** – बहुत आज़ादी देना
मुख्याध्यापक जी ने राम को मुँह लगा रखा है तभी तो वह बिगड़ता जा रहा है ।

307. **मन के लड्डू** – मनोरथ बनाना
यूं ही मन के लड्डू बनाने से कुछ नहीं बनेगा, कुछ करो धरो ।

308. **मिट्टी का माधो** – महामूर्ख
वह तो मिट्टी का माधो है, तुम उसे क्या समझा सकते हो ।

309. **मक्खी चूस** – कंजूस
मक्खी चूस लोग मेले में एक पैसा भी खर्च नहीं करते ।

310. **मगज चाटना** – तंग करना
क्यों मगज चाट रहे हो, स्वाध्याय भी कुछ कर लिया करो ।

311. **मिट्टी पलीत करना** – किसी का अपमान करना
क्यों अपनी मिट्टी पलीत कर रहे हो, कुछ तो अपने बारे में सोचो ।

312. **माथा ठनकना** – पता लगना
मेरा तो वहीं माथा ठनक गया था कि कुछ होने वाला है ।

313. **मारा मारा फिरना** – बुरी अवस्था होना
यहाँ से निकल कर वह सर्वत्र मारा मारा फिरता है ।

314. **मुँह ताकना** – दूसरों की आस पर जीना
अपना सब कुछ गंवा कर दूसरों का मुँह क्यों ताकते हो ।

315. **मुँह धोना** – आशा न करना
कर्म करना जब छोड़ दिया तो सफलता से मुँह भी धो लो ।

316. **मुँह से खून लगना** – चस्का पड़ना
जब किसी के मुँह से खून लग जाता तो छूटता नहीं ।

317. **मुँह फट** – बकवादी
मुँह फट लोग सभा समाजों में शीघ्र बदनाम हो जाते हैं ।

318. **मुट्ठी में करना** – वश में करना
ऐसा लगता है कि आपने सब को मुट्ठी में कर रखा है ।

319. **मोम होना** – पिघल जाना
उसकी दर्द भरी बातें सुन कर मेरा दिल मोम हो गया ।

320. **मौत सिर पर खेलना** – मृत्यु समीप होना
जब मौत सिर पर खेल रही हो तो जो कुछ भी मनुष्य कर सकता है करता है ।

321. **मीन मेख निकालना** – दोष निकालना
तुम्हारी तो आदत हो गई है कि हर चीज में मीन मेख निकालते हो ।

322. **मीठी छुरी फेरना** – मित्र बन कर शत्रुता करना
आज के मित्रों की क्या कहें वे तो प्रायः मीठी छुरी फेरते रहते हैं ।

323. **युग बदलना** – वीरता का काम करना
वीरो उठो युग को बदल दो, भारतमाता तुम्हारी ओर निहार रही है ।

324. **रंग-ढंग** – हालात
यदि उसके रंग-ढंग यही रहे तो शीघ्र ही दीवाला निकल जाएगा ।

325. **रंग उतरना** – चेहरा पीला पड़ना
उसे देखते ही आपके चेहरे का रंग क्यों उतर गया ।

326. **रंग में रंगा जाना** – प्रभावित होना
मनोहर भी अब अपने साथियों के रंग में रंगा जा चुका है ।

327. **रंग जमाना** – प्रभाव डालना
उसने सभा में आते ही अपना रंग जमा दिया ।

328. **रंगा सियार** – धोखेबाज
हम तो उसे साधु ही समझते रहे परन्तु वह तो रंगा सियार निकला ।

329. **राम बाण** – अचूक दवा
कुछ औषधियाँ तो मरीजों के लिए राम बाण सिद्ध होती हैं ।

330. **राई का पहाड़ बनाना** – बात का बतंगड़ बनाना
कवि लोग भी राई का पहाड़ बना लेते हैं ।

331. **रंग में भंग पड़ना** – प्रसन्नता में विघ्न पड़ना
सोहन के विवाह के समय उसकी दादा की मृत्यु से रंग में भंग पड़ गया ।

332. **रफू चक्कर होना** – भागना
पैसा प्राप्त करते ही वह रफू चक्कर हो गया ।

333. **लहू पसीना एक करना** – भरपूर परिश्रम करना
मैंने तो परीक्षा में सफलता के लिए लहू पसीना एक कर दिया है ।

334. **लकीर का फकीर होना** – अन्धविश्वास
पुरानी आदतों पर चलने वाले लकीर के फकीर लोग अपनी बुद्धि से कम सोचते हैं ।

335. **लोहा मानना** – सिक्का मानना
सारा संसार आज भी हमारा लोहा मानता है ।

336. **लोहे के चने चबाना** – कठिन काम करना
चाहे लोहे के चने क्यों न चबाने पड़े फिर भी हिम्मत नहीं हारनी चाहिए ।

337. **लम्बी चौड़ी हांकना** – बहुत बातें करना
इस प्रकार लम्बी चौड़ी हांकने से क्या लाभ जब तुम कुछ कर ही नहीं सकते ।

338. **लपेट में आना** – फंस जाना
मैं भी उन दुष्टों की लपेट में आ गया ।

339. **लोहा लेना** – युद्ध करना
कौन है जो भारत की सेनाओं के समक्ष लोहा लेना के लिए तत्पर हो ।

340. **विष उगलना** – कठोर वचन कहना
उन्होंने मेरे विरुद्ध विष उगलना शुरू कर दिया जबकि मैं सदा उससे प्यार करता रहा ।

341. **शैतान के काम कतरना** – चालाक होना
तुम्हारा मुन्ना तो शैतान के कान कतरता है ।

342. **श्री गणेश करना** – आरम्भ करना
हमने आज ही अपनी दुकान का श्रीगणेश किया है ।

343 **सब एक ही थैली के चट्टे बट्टे** – सब एक जैसे
तुम सब तो एक ही थैली के चट्टे बट्टे हो, सभ्यता क्यों नहीं सीख लेते ।

344. **सब्ज बाग़ दिखाना** – लोभ देकर बहकाना
आप चाहे कितने सब्ज़ बाग दिखाएं मैं आपके साथ कभी नहीं आऊंगा ।

345. **समझ पर पत्थर पड़ना** – कुछ न सूझना
उनकी तो समझ पर पत्थर पड़ गए हैं, वे मेरे तुम्हारे समझाने से क्या समझेंगे ।

346. **सिर से पैर तक आग लगना** – बहुत क्रुद्ध होना
उनकी बात सुनते ही मेरे तो सिर से पांव तक आग लग गई ।

347. **सिक्का बैठना** – रोब जमना
अब तो सर्वत्र आप का सिक्का बैठ गया है ।

348. **सिर मारना** – प्रयत्न करना
मैंने तो लाख सिर मारा परन्तु मुझे सफलता नहीं मिली ।

349. **सिर आँखों पर** – स्वीकार करना
आपका आदेश सिर आँखों परन्तु मेरी मजबूरियां भी सामने रखें ।

350. **सिर चढ़ाना** – लाड़ करना
तुमने अपने सभी लड़कों को सिर पर चढ़ा रखा है ।

351. **सिर धुनना** – पछताना
बुरे कार्य कर रहे हो बाद में सिर धुनना पड़ेगा ।

352. **सिर पर खून सवार होना** – जान लेने को उद्यत रहना
ऐसा लगता है कि तुम्हारे सिर पर खून सवार है, किसी की जान लेकर रहोगे ।

353. **सिर पर कफ़न बांधना** – मरने मारने को तैयार
सैनिक मैदाने जंग में सिर पर कफ़न बांध कर निकलते हैं ।

354. **सीधे मुँह बात न करना** – अभिमान करना
वह प्रोफेसर क्या बना सीधे मुँह बात भी नहीं करता ।

355. **स्वाहा करना – समर्पण करना**
मैंने तो अपना सब कुछ देश के लिए स्वाहा कर दिया ।

356. **हजामत होना** – बुरी अवस्था
काम के आरम्भ करते ही हमारी हजामत हो गई ।

357. **हँसी उड़ाना** – मजाक उड़ाना
अपने से बड़ों की हँसी उड़ा रहे हो, यह कोई बुद्धिमानी का काम नहीं ।

358. **हथियार डालना** – हार मानना
शत्रु सेना ने हमारे मैदान में आते ही हथियार डाल दिए ।

359. **हवा से बातें करना** – भाग जाना
मोहन कार में बैठते ही हवा से बातें करने लगा ।

360. **हाँ में हाँ मिलाना** – खुशामद करना
आप तो अकारण ही अधिकारियों की हाँ में हाँ मिलाते रहते हो ।

361. **हाथ कटाना** – प्रतिज्ञाबध होना
मैंने जब आपको लिख कर दिया तो अपने हाथ स्वयं कटवा लिये ।

362. **हाथ की मैल** – तुच्छ
पैसा तो हाथ की मैल होता है, इससे मित्रता को क्यों कलंकित कर रहे हो ।

363. **हाथ खींचना** – सहायता बंद करना
मेरे पिता जी ने क्रुद्ध होकर मुझसे अपना हाथ खींच लिया ।

364. **हाथ तंग होना** – पैसे की कमी होना
बीमारी के कारण तथा कोई सहायता न मिलने के कारण आजकल राम का हाथ तंग हो गया है ।

365. **हाथ धो बैठना** – खो देना
पैसा तो गंवा ही दिया, चोरों से लड़ने के कारण वह जान से भी हाथ धो बैठा ।

366. **हाथ पैर जोड़ना** – दीनता दिखाना
चाहे कितने ही हाथ पैर क्यों न जोड़ो; वे कुछ नहीं मानेंगे ।

367. **हाथ मलना –** पछताना
अब सिवाए हाथ मलने के तुम्हारे पास क्या रह गया है ।

368. **हाथ साफ करना** – ठगना
चोरों ने मिनटों में लाखों के माल पर हाथ साफ कर दिया ।

369. **हाथों के तोते उड़ना** – होश उड़ जाना
जब राम ने जेब में से बटुआ गायब देखा तो उसके हाथों के तोते उड़ गये ।

370. **हुक्का पानी बंद होना** – जाति से बाहर निकालना
पंचों का आदेश न मानने पर गांव वालों ने उसका हुक्का पानी बंद कर दिया ।

371. **हाथ धोकर पीछे पड़ना** – बुरी तरह पीछे पड़ना
आप तो हाथ धो कर मेरे पीछे पड़ गए हैं ।

372. **हुलिया बिगाड़ना –** बुरी तरह पीछे पड़ना
तुमने तो मार-मार कर मेरे बच्चों का हुलिया ही बिगाड़ कर रख दिया ।

373. **हाथ पाँव मारना** – यत्न करना
सब लोग अपना जीवन बनाए रखने के लिए हाथ पांव मारते हैं ।

8. लोकोक्ति

ऐसे प्रचलित वाक्य जो अपने विलक्षण अर्थों से सच्चाई का अनुमोदन करते हैं, लोकोक्तियाँ कहलाते हैं । मुहावरे वाक्यांश होते हैं और लोकोक्तियाँ स्वतन्त्र वाक्य होती हैं । इनके यथोचित प्रयोग से भाषा का सौन्दर्य और ओज बढ़ जाता है । प्रसिद्ध लोकोक्तियाँ और उनके अर्थ निम्नलिखित वर्णानुसार लिखे जाते हैं ।

1. **अब पछताए होत क्या जब चिड़िया चुग गई खेत** = समय निकल जाने पर पछताने का क्या लाभ ?
2. **अपनी करनी पार उतरनी** = सब अपने कर्मों का फल भोगते हैं ।
3. **अपनी गली में कुत्ता भी शेर होता है** = अपने घर में निर्बल भी बलवान् होता है ।
4. **अपनी अपनी डफली, अपना अपना राग** = सबके विचार भिन्न-भिन्न होते हैं ।
5. **उधर दीजे दुश्मन कीजे** = किसी को उधार देना उससे शत्रुता खरीदना है ।
6. **अन्त भला सो भला** = जिसका परिणाम अच्छा वह अच्छा
7. **अन्त भले का भला** = अच्छे का परिणाम सदा अच्छा होता है
8. **अन्धों में काना राजा** = मूखों में थोड़ा पढ़ा लिखा ।
9. **आ बैल मुझे मार** = किसी से अपने आप झगड़ा मोल लेना
10. **आगे कुआं पीछे खाई** = सब ओर विपत्ति ही विपत्ति होना
11. **आप मरे जग परलो** = सब का अपने से ही सम्बन्ध है
12. **आपा तजे सो हर को भजे** = अभिमान त्यागने पर भगवान् मिलता है ।
13. **आँख के अन्धे नाम नयन सुख** = गुण विरुद्ध नाम होना ।
14. **आई तो रोजी नहीं तो रोजा** = मिले तो खा ली नहीं तो भूखा रहना ।
15. **आई बात रुकती नहीं** = मन में आई बात अवश्य निकल जाती है ।
16. **आँधी के आम** = सस्ती चीज
17. **आँख और कान में चार अंगुल का फर्क** = देखने और सुनने में भारी अन्तर है ।

18. **इस जमीन का आसमान ही और है** = इस स्थान की सभी बातें अजीब हैं ।
19. **ईश्वर की माया कहीं धूप कहीं छाया** = ईश्वर की गति बड़ी विचित्र है ।
20. **उल्टा चोर कोतवाल को डांटे** = दोषी का पूछने वाले पर दोष थोपना ।
21. **उतावली सो बावली** = जल्दी शैतान का काम है ।
22. **उल्टी गंगा पहाड़ को चली** = उलटा काम
23. **उखली में सिर दिया तो मूसलों से क्या डर** = किसी कार्य को आरम्भ कर पर आने वाली विपत्तियों से क्या डरना ।
24. **उतर गई लोई तो क्या करेगा कोई** = बदनाम होने पर दोषी अधिक निर्भय हो जाता है ।
25. **उल्टे बांस बरेली को** = जो वस्तु जहाँ अधिक हो वहाँ वह चीज नहीं भेजी जा सकती ।
26. **एक तंदरुस्ती हज़ार न्यामत** = स्वास्थ्य परमात्मा की सबसे बड़ी देन है ।
27. **एक तो चोरी दूसरी सीना जोरी** = एक तो काम बिगाड़ना दूसरा आँखें दिखाना ।
28. **एक और एक ग्यारह** = एकता में बल होता है ।
29. **एक अकेला दो का मेला** = दो हों तो समय आनन्द से गुजर जाता है ।
30. **एक अनार सौ बीमार** = एक वस्तु के अनेक ग्राहक
31. **एक हाथ से ताली नहीं बजती** = दोष दोनों दलों का होता है ।
32. **एक करेला दूसरा नीम चढ़ा** = स्वयं बुरा होना और बुरों से सम्बन्ध रखना ।
33. **एक थैली के चट्टे बट्टे** = एक जैसे ।
34. **एक म्यान में दो तलवारें** = एक ही राज्य पर दो शासकों का अधिकार नहीं हो सकता ।
35. **एक मछली सारे तालाब को गंदा करती है** = एक बुरे व्यक्ति से सारा समाज खराब हो जाता है ।
36. **एक अण्डा वह भी गन्दा** = एक ही वस्तु वह भी खराब ।
37. **ओस के चाटे प्यास नहीं बुझती** = साधारण लाभ से तृष्णा पूरी नहीं होती ।
38. **ओछे की प्रीत बालू की भीत** = नीच की मित्रता अस्थिर होती है ।

39. **और बात खोटी सही दाल रोटी** = दाल रोटी का ही सब रोना है ।
40. **करेगा सो भरेगा** = कर्म का फल सबको मिलेगा ।
41. **कहने से करना भला** = बातें बनाने से कुछ करना अच्छा
42. **कढ़ाई से निकला चूल्हे में गिरा** = एक आपत्ति से बच कर दूसरी में फंसना
43. **कर सेवा खा मेवा** = सेवा का फल अवश्य मिलता है ।
44. **कभी नाव गाड़ी पर कभी गाड़ी नाव पर** = समयानुार एक दूसरे की सहायता करना ।
45. **कभी घी घना, कभी मुट्टी चना कभी यह भी मना** = सब दिन होत न एक समान ।
46. **कमली ओढ़ने से फकीर नहीं बनता** = वेश बदलने से स्वभाव नहीं बदलता ।
47. **कहाँ राजा भोज कहाँ गंगू तेली** = दो व्यक्तियों में अन्तर होना ।
48. **का वर्षा जब कृषि सुखानी** = समय पर सहायता न मिलना ।
49. **काला अक्षर भैंस बराबर** = अनपढ़ ।
50. **काठ की हांडी बार-बार नहीं चढ़ती** = धोखे और झूठ से बार-बार काम नहीं चलता ।
51. **कुत्ते को घी हजम नहीं होता** = ओछा मनुष्य धन पाने पर अकड़ता है ।
52. **कुत्ता भी दुम हिला कर बैठता है** = सफाई सब को प्यारी है ।
53. **कुम्हारी अपना ही भाण्डा सराहती है** = सबको अपनी ही वस्तु प्यारी है ।
54. **कोठी वाला रोये छप्पर वाला सोये** = धनी अधिक चिन्तित रहते हैं ।
55. **कोयलों की दलाली में मुँह काला** = बुरों के साथ काम करने में बदनामी होती है ।
56. **कहीं की ईंट कहीं का रोड़ा भानमती ने कुनबा जोड़ा** = चतुर व्यक्ति इस प्रकार घर बनाने में समर्थ होते हैं ।
57. **कुकड़ी के चोर को कटार की सजा** = छोटा अपराध भारी दण्ड ।
58. **कंगाली में आटा गीला** = घाव पर चोट लगती रहती है ।
59. **खग जाने खग की भाषा** = भेदी ही भेद जानता है ।
60. **खाये पान टुकड़े को हैरान** = अपनी हैसियत से बड़े काम करना ।

61. **खाल ओढ़ाये सिंह की स्यार सिंह न होय** = रूप परिवर्तन से बड़े काम करना
62. **खाक डाले चांद नहीं छिपता** = अच्छे आदमियों की निन्दा करने से उन का कुछ नहीं बिगड़ता ।
63. **खुदा गंजे को नाखून न दे** = ओछा व्यक्ति अधिकार पाकर जनता को दुःखी करता है ।
64. **खरी मजदूरी चोखा काम** = जैसे काम वैसे दाम ।
65. **खाइए मन भाता पहिनये जग भाता** = खाना अपनी इच्छा का और पहनना जग इच्छा का ।
66. **गंगा नहाना** = झंझटों से छूटना ।
67. **गधा पीटे घोड़ा नहीं होता** = स्वभाव कभी नहीं बदलता ।
68. **गए ऊन लेने को आय मुण्डाय** = लाभ की इच्छा से जाना और हानि उठाना
69. **गुड़ न दे गुड़ की सी बात तो करे** = चाहे काम न करे पर मीठा अवश्य बोले ।
70. **गोद में लड़का नगर में ढिंढोरा** = अपने घर पड़ी वस्तु को बाहर ढूंढना ।
71. **गोद में बैठ आँख में उंगली डालना** = अपना भला करने वाले के साथ बुराई करना ।
72. **गुड़ दिए मरे तो जहर क्यों दे** = आसानी से जो काम बन जाए सख्ती से काम क्यों करे ।
73. **गेहूं के साथ घुन भी पिस जाता है** = दुष्टों के साथ भले भी मर जाते हैं ।
74. **गाय न बच्छी नींद आये अच्छी** = जब पास कुछ न हो तो खतरा काहे का ।
75. **घर का जोगी जोगना** = अच्छे व्यक्ति का भी अपने घर में मान कम होता है ।
76. **घड़ों पानी पड़ना** = बहुत शर्मिन्दा होना ।
77. **घर में भूंगी भांग नहीं और बाहर न्योते** = अपने सामर्थ्य से बड़ा काम करना ।
78. **घड़ी में घड़ियाल** = थोड़े समय में कुछ का कुछ होना ।

79. **घाट-घाट का पानी पीना** = सब प्रकार के गुण प्राप्त करना
80. **घोड़ा घास से यारी करे तो खाए क्या ?** = मेहनत मजदूरी मांगने मे लिहाज नहीं करनी चाहिए ।
81. **चल न पावे कूदन नाम** = नाम बड़ा और दर्शन छोटे ।
82. **चमड़ी जाय पर दमड़ी न जाए** = अत्यन्त कंजूस होना ।
83. **चाचा चोर भतीजा काज़ी** = बुरे व्यक्तियों के साथी सम्बन्धी उसे कभी बुरा नहीं कहते ।
84. **चार दिन की चांदनी** = अस्थिर सुख ।
85. **चांद को भी ग्रहण लगता है** = निर्दोष पर दोषारोपण होता रहता है ।
86. **चांदी का चश्मा लगाते हैं** = रिश्वत लेते हैं ।
87. **चोर की दाड़ी में तिनका** = दोषी स्वयं डरता है ।
88. **चोरी का धन मोरी में जाए** = बुरी कमाई व्यर्थ ही जाती है ।
89. **चोटी कुतिया जलेबियों की रखवाली** = भक्षक का रक्षक बनना ।
90. **चिराग तले अन्धेरा** = स्वयं अधिकारियों का कानून के विरुद्ध काम करना ।
91. **चूल्हे की न चक्की की** = जो न भोजन बना सके और न अन्य कोई धंधा कर सके ।
92. **चांदी का जूता सिर पर** = रुपया सब काम बनाता है ।
93. **चोर से कहे चोरी कर शाह से कहे जागते रहो** = वह चतुर व्यक्ति जो झगड़े में दोनों को उकसाए ।
94. **चलती का नाम गाड़ी** = सफलता में वाह वाह है ।
95. **चूल्हा फेंकना और दाढ़ी रखना** = काम खतरे का और फिर मान की अभिलाषा ।
96. **चौबे गये छिब्बे होने पर दूबे ही रह गए** = सामर्थ्य से बाहर का काम करना ।
97. **छठी का दूध याद आना** = बहुत कष्ट उठाना ।
98. **छछून्दर के सिर पर चमेली का तेल** = अयोग्य व्यक्ति का अपने से अच्छी वस्तु पाना ।
99. **छाती पर सांप लौटना** = ईर्ष्या से जलना ।

100. **छुपे रुस्तम** = ऐसे व्यक्ति जिनके गुणों का कोई पता न हो ।
101. **छूछी हांडी बाजे टन टन** = निर्बुद्धि बहुत बातें बनाता है ।
102. **छोटे मुँह बड़ी बात** = अपने सामर्थ्य और योग्यता से बढ़ कर बात करना ।
103. **जिस थाली में खाना उसी में छेद करना** = अपने ही हितचिन्तकों का अशुभ चिन्तन करना ।
104. **जीभ भी जली स्वाद भी न आया** = चोरी भी की पर हाथ कुछ न लगा ।
105. **जैसा देश वैसा भेस** = देश काल के अनुसार काम करना ।
106. **जमानत में करामात है** = संगठन ही महान् शक्ति है ।
107. **जब तक सांस तब तक आस** = जीवित रहने तक आशा बनी रहती है ।
108. **जल में रह कर मगर से वैर** = जिसके आश्रय में रहना उसी से वैर रखना ।
109. **जाको राखे साइयां मार न सके कोय** = जिसका ईश्वर रक्षक हो उसका कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता ।
110. **जिसकी लाठी उसकी भैंस** = शक्ति वाले का सब कुछ है ।
111. **जितनी चादर देखो उतने पैर पसारो** = अपनी हैसियत के अनुसार काम करो ।
112. **जिसके हाथ डोई उसका सब कोई** = देने वाली की सब चापलूसी करते हैं ।
113. **जैसी करनी वैसी भरनी** = कर्मफल अवश्य मिलता है ।
114. **जैसा दूल्हा वैसी बारात** = अपने जैसे ही साथी बनते हैं ।
115. **जैसी माई वैसी आई** = जैसी माँ वैसी बेटी ।
116. **जो गरजते हैं वे बरसते नहीं** = बहुत बोलने वाले कुछ काम नहीं कर सकते ।
117. **जो तोको कांटा बुवै ताहि बोय तू फूल** = बुरा करने वाले के साथ भी भला करना चाहिए ।
118. **जाये लाख रहे साख** = प्रतिष्ठा रहे सब कुछ जाए ।
119. **जहाँ न पहुँचे रवि वहाँ पहुँचे कवि** = कवि की कल्पना बहुत दूर तक होती है ।

120. **जाकी रही भावना जैसी प्रभु मूरत देखी तिन तैसी** = जैसे विचार वैसी समझ ।
121. **झट मंगनी पट ब्याह** = तुरत फुरत काम होना ।
122. **झूठ के पाँव नहीं होते** = झूठ कभी स्थिर नहीं रहता ।
123. **झड़ बेरी का कांटा** = जिससे पीछा छुड़ाना कठिन हो ।
124. **टका सा जवाब** = कोरा जवाब ।
125. **टके के वास्ते मन्दिर ढाना** = लोभवश अनुचित काम करना ।
126. **टट्टी की आड़ में शिकार खेलना** = छिप कर बुरा काम करना ।
127. **टुकड़ा देकर बछड़ा पाला** = कृतघ्न ।
128. **टेढ़ी उंगल से ही घी निकलता है** = काम बनाने के लिए कुछ ढंग होना चाहिए ।
129. **ठोकर लगी पहाड़ की तोड़े घर की सील** = बाहर से अपमानित होकर अपनों पर गुस्सा निकालना ।
130. **ठोक बजा ले वस्तु को, ठोक बजा दे दाम** = जांच कर किया हुआ काम नहीं बिगड़ता ।
131. **डायन भी दस घर छोड़ कर खाती है** = दुष्ट भी अपने पड़ोसियों का लिहाज करते हैं ।
132. **डूबते को तिनके का सहारा** = मुसीबत के मारे को थोड़ी सी सहायता ।
133. **ढाक के वही तीन पात** = कुछ परिवर्तन न होना ।
134. **ढपोल संख** = गपोड़ी ।
135. **ढोल के पोल** = जो अन्दर से खाली हो ।
136. **तबेले की बला बन्दर के सिर** = एक का अपराध दूसरे पर पड़ना ।
137. **तिरिया तेल हमीर हठ चढ़े न दूजी बार** = स्त्री का विवाह और हमीर का बचपन एक बार ही होता है ।
138. **तख्त या तख्ता** = या तो राजा नहीं तो मौत ।
139. **तवे पर बूंद** = अस्थिर, शीघ्र नष्ट होने वाला ।
140. **तन को कपड़ा न पेट को रोटी** = बहुत ग़रीब होना ।
141. **तन ताज़ा कलन्दर राजा** = फकीर का पेट भरने पर वह स्वयं को राजा समझता है ।

142. **तीन में न तेरह में** = जो किसी गिनती में न हो ।
143. **तीस मार खां बने फिरते हैं** = झूठी शेखी मारने वाले ।
144. **तीन लोक से मथुरा न्यारी** = किसी व्यक्ति का दूसरे साथियों से भिन्न रूप में काम करना ।
145. **तू डार डार मैं पात पात** = जब एक चालाक हो और दूसरा उससे भी चालाक हो ।
146. **तुरन्त दान महा कल्याण** = नकद सौदे में बड़ा लाभ होता है ।
147. **तेल देखो तेल की धार देखो** = धैर्य से काम करो ।
148. **तेली का बैल हो गया है** = रात दिन परिश्रम करने वाला
149. **बन्दा जोड़े पली पली रहमान रुड़ावे कुप्पा** = भगवान् की इच्छा न होने पर मनुष्य का परिश्रम सफल नहीं होता ।
150. **तेली का तेल जले मसालची का दिल** = खर्च कोई करे दिल किसी का जले ।
151. **थूक कर चाटना** = थोड़े काम से बड़ा काम नहीं हो सकता ।
152. **दाल में काला** = सन्देह होना
153. **दादा ले और पोता बरते** = बहुत पक्की चीज़ ।
154. **दाम बनाए काम** = पैसे से ही बहुत काम बनते हैं ।
155. **दांत काटी रोटी** = घनिष्ट मित्रता
156. **दीवार के भी कान होते हैं** = गुप्त बातचीत एकान्त में भी सावधानी से करनी चाहिए ।
157. **दुनियाँ ठगिये मकर से रोटी खाइये शकर से** = जो धोखे फरेब से धन कमाते हैं वे मौज उड़ाते हैं ।
158. **दूर के ढोल सुहावने** = दूर से हर वस्तु अच्छी लगती है ।
159. **दूध का जल छाछ फूंक फूंक कर पीता है** = जिसने एक बार नुकसान उठाया हो वह सब काम सोच कर करता है ।
160. **दोनों हाथों में लड्डू हैं** = दोनों तरफ से लाभ है ।
161. **दोनों घरों का पहुना भूखा रहता है** = सांझे के काम में बहुत हानि होती है ।
162. **धोबी का कुत्ता न घर का न घाट का** = जिसका कोई ठिकाना न हो ।
163. **धूप में बाल सफेद किये हैं** = अनुभुव शून्य ।

164. **नदी में रहना मगर से वैर** = जिसके आश्रय में रहना उससे झगड़ा करना ।
165. **न रहेगा बांस न बजेगी बांसुरी** = हानि का कारण नष्ट करना चाहिए ।
166. **नदी नाव संयोग** = अचानक मेल ।
167. **न नौ मन तेल होगा न राधा नाचेगी** = काम करने के लिए ऐसी शर्त पेश करना जो कभी पूरी न हो सके ।
168. **नाच न जाने आंगन टेढ़ा** = काम करना न आता हो तो बहाने बनाने पड़ते हैं ।
169. **नाम बड़ा दर्शन छोटे** = आडम्बर बहुत हो वास्तविकता कुछ भी न हो ।
170. **नाक पर मक्खी नहीं बैठने देना** = किसी का एहसान न उठाना
171. **निर्बल के बलराम** = जिसका कोई नहीं होता है उसके भगवान् सहाय होते हैं ।
172. **नीम हकीम खतरा जान** = अधूरा ज्ञान बहुत हानिकारक होता है ।
173. **नौ नकद न तेरह उधार** = नकद सौदइा कम कीमत पर भी हो तो अच्छा है ।
174. **नानी के आगे ननिहाल की बातें** = अपने से बुद्धिमान् के आगे शिक्षा की बातें कहना ।
175. **पत्थर को जोंक नहीं लगती** = पत्थर दिल कभी नर्म नहीं होता ।
176. **पत्थर डारो कीच में, उठरि बिगारे अंग** = बुरे को छेड़ने से अपनी ही हानि होती है ।
177. **पराधीन सपने सुख नांहि** = परतन्त्रता में कभी सुख प्राप्त नहीं हो सकता ।
178. **पहले आत्मा फिर परमात्मा** = प्रथम शरीर फिर धर्म ।
179. **पर्वत पर कुआं खोदना** = व्यर्थ का परिश्रम करना ।
180. **पराये धन पर लक्ष्मी नारायण** = दूसरे के धन को खर्च करना ।
181. **पांचों उंगलियां बराबर नहीं** = सब मनुष्य एक समान नहीं ।
182. **पानी मथने से घी नहीं निकलता** = व्यर्थ के कार्य से परिश्रम भी व्यर्थ हो जाता है ।
183. **फल सूंघ कर रहते हैं** = बहुत थोड़ा खाते हैं ।
184. **फूटी आँख का तारा** = मातृहीन बालक ।
185. **बावन तोले पाव रत्ती** = बिल्कुल ठीक ।

186. **बेकार से बेगार भली** = कुछ न करने से किसी का मुफ्त में काम कर देना अच्छा है ।
187. **बगल में छुरी मुँह में राम राम** = बगले भक्त ।
188. **बकरे की मां कब तक खैर मनाएगी** = एक न एक दिन अवश्यक काबू आना ।
189. **बन्दर का हाल मछन्दर जाने** = भेदी ही भेद जानते हैं ।
190. **बत्ती दांतों में जीभ** = चारों ओर से शत्रुओं से घिरना
191. **बासी बचे न कुत्ता खाये** = पूरा काम समाप्त होने पर चिन्ता नहीं रहती ।
192. **बाप बड़ा न भैया सब से बड़ा रुपया** = रुपये से सभी प्रकार के काम पूर्ण हो जाते हैं ।
193. **बांह गहे की लाज** = जिसका हाथ पकड़ा जाए उससे निभाना चाहिए ।
194. **बिन मांगे मोती मिले मांगे मिले न भीख** = मांगने से कुछ नहीं मिलता, जो मिलना होता है वह अवश्य मिलता है ।
195. **बिच्छू का काटा रोये साँप का काटा सोये** = कई कामों का परिणाम पहले बुरा होता है कुछ का बाद में
196. **भले का जमाना नहीं** = भले मानस को कोई नहीं पूछता ।
197. **भागते चोर की लंगोटी ही सही** = जब सब कुछ नष्ट होता है तो जो कुछ बच जाए वही अच्छा है ।
198. **भूखा सिंह न तिनका खाए** = मान वाला अपने मान से गिर कर कभी नहीं कमाता ।
199. **भेड़ जहाँ जाएगी वहाँ मुंडेगी** = सीधा साधा व्यक्ति सब जगह लुटता है ।
200. **भैंस के आगे बीन बजाना** = मूर्खों को उपदेश देना व्यर्थ है ।
201. **भूखे भक्ति न होय गोपाला** = भूखा व्यक्ति भक्ति नहीं कर सकता ।
202. **भूखा सिंह न तिनका खाये** = मान वाला अपने मान से गिर कर कभी नहीं कमाता ।
203. **मन के हारे हार है** = वही हारता है जिसका मन हार जाता है ।
204. **मरज बढ़ता गया ज्यों-ज्यों दवा की** = जब काम सुधारने पर भी न सुधरे प्रत्युत बिगड़े ।
205. **मारे और रोने न दे** = बली के सामने किसी की नहीं चलती ।
206. **मानो तो देव नहीं तो पत्थर** = श्रद्धा के बिना कोई काम नहीं ।
207. **मान न मान मैं तेरा मेहमान** = जबरदस्ती गले पड़ना ।

208. **माया को माया मिले कर कर लम्बे हाथ** = धनवान के पास ही धन एकत्रित होता है ।
209. **मुल्ला की दौड़ मस्जिद तक** = सब व्यक्ति अपनी शक्ति के अनुसार काम करते हैं ।
210. **वह मुँह और मसूर की दाल** = अपनी योग्यता से अधिक इच्छा करना ।
211. **यहाँ का बाबा आदम ही निराला है** = यहाँ के रंग-ढंग अजीब हैं ।
212. **रख पत रखा पत** = मान करो और मान कराओ ।
213. **रंग में भंग पड़ना** = शुभ कार्य में विघ्न पड़ना
214. **रस्सी जल गई पर बल न गया** = नष्ट होने पर भी हठ न छोड़ना ।
215. **रस्सी साँप बन गई** = बात का बतंगड़ होना ।
216. **राम राम जपना पराया माल अपना** = बगला भक्त ।
217. **लकीर का फकीर** = अन्ध विश्वासी ।
218. **लातों के भूत बातों से नहीं मानते** = दुष्ट व्यक्ति दण्ड के बिना नहीं मानते ।
219. **लाल गुदड़ी में नहीं छुपता** = योग्य व्यक्ति बुरी स्थिति में छिपे नहीं रहते ।
220. **लिखे मूसा पढ़े खुदा** = ऐसा खराब लिखना कि कोई न पढ़ सके ।
221. **लेने के देने पड़ गये** = लाभ के बदले हानि ।
222. **वही ढाक के तीन पात** = कुछ परिवर्तन न होना ।
223. **विष निकले अति मंथन से रला कर हूँ माहि** = बहुत बात बढ़ाने से लड़ाई की आशंका रहती है ।
224. **शकल चुड़ैल की मिजाज परियों का** = अपनी हैसियत से बढ़ कर मिजाज बनाना ।
225. **शतरंज नहीं सरदंज है** = शतरंज में बहुत सोचना पड़ता है ।
226. **शैतान की आंत** = लम्बा किस्सा ।
227. **शैतान सिर पर चढ़ना** = क्रोध के आवेश में काम बिगाड़ना ।
228. **सदा के उजड़े नाम बस्ती राम** = गुण के विपरीत नाम होना ।
229. **सत्तर चूहे खाकर बिल्ली हज को चली** = बहुत पाप करके धर्मात्मा बनना ।
230. **सांच को आंच नहीं** = सच्चा निर्णय होता है ।
231. **सब दिन होत न एक समान** = सब दिन एक जैसे नहीं होते ।

232. **सांप मरे न लाठी टूटे** = झगड़ा इस प्रकार निपटाना कि किसी की हानि न हो ।
233. **सागर में गागर भरना** = थोड़े में बहुत ।
234. **सावन हरे न भादो सूखे** = सदा एक ही हालत में रहना ।
235. **सिर मुंडाते ही ओले पड़े** = किसी काम में आरम्भ होते ही नुकसान हो जाना ।
236. **सहज पके सो मीठा होय** = जो काम धीरे-धीरे होता है वह अच्छा होता है ।
237. **समरथ को नहीं दोष गोसाईं** = शक्तिशाली के सब काम अच्छे ।
238. **सूखे धानों पानी पड़ना** = समय बीत जाने पर सहायता व्यर्थ है ।
239. **सावन के अंधे को हरा ही हरा सूझता है** = सब लोग अपने दृष्टिकोण से देखते हैं ।
240. **हवेली पर सरसों जमाना** = असम्भव काम करना ।
241. **हाथ कंगन को आरसी क्या** = जो प्रत्यक्ष है उसके लिए अनुमान की क्या आवश्यकता है ।
242. **हाथी के दांत खाने के और दिखाने के और** = कहना कुछ और करना कुछ ।
243. **हाथ सुमरिनि बगल कतरनी** = बगला भक्त ।
244. **हाथी के पांव में सबका पांव** = बड़े व्यक्तियों के साथ छोटों की गुजर होती है ।
245. **हजामत हो गई** = ठगे गए ।
246. **होनहार बिरवान के होत चीकने पात** = होनहार बालक के लक्षण पहले ही नजर आते हैं ।
247. **होत हो जोत** = अमीर की सब प्रशंसा करते हैं ।
248. **हाकिम की अगाड़ी और घोड़े की पिछाड़ी नहीं जाना चाहिए** = इन दोनों अवस्थाओं में हानि होती है ।

9. पारिभाषिक शब्दावली

Abbreviation	संक्षेप
Absence	अनुपस्थिति, (गैर हाजिरी)
Accommodation	आवास
Advice	परामर्श, सलाह
Allegiance	निष्ठा
Alteration	परिवर्तन
Amendment	संशोधन
Appendix	परिशिष्ट
Assistant	सहायक
Attendance	उपस्थिति
Basic Pay	मूल वेतन
Birth Date	जन्मतिथि
Block	खंड, ब्लाक
Board	बोर्ड, मण्डल
Break in service	सेवा में व्यवधान
By hand	दस्ती
Cancel	रद्द करना
Clarification	स्पष्टीकरण
Closing Balance	अन्त-शेष
Committee	समिति
Competence	सक्षमता
Conference	सम्मेलन
Confirmation	पुष्टि
Consilidated fund	समेकित निधि
Conveyance allowance	वाहन भत्ता
Corruption	भ्रष्टाचार
Covering letter	सहपत्र
Dealing Assist.	संबंधित सहायक
Dearness Allow.	महंगाई भत्ता
Department	विभाग
Deputy Secy.	उपसचिव
Dissent	असहमति
Duplicate	अनुलिपि
Duration	अवधि
Duty	ड्यूटी, कार्य
Encashment	भुनाना, तुड़ाना
Entry	प्रविष्टि
Evidence	साक्ष्य
Expert	विशेषण
Export	निर्यात
Extract	उद्धरण
Fittness Certificate	स्वस्थता
Fresh Receipt	नई आवती
Further Action	अगली कार्रवाई
General Manager	प्रधान प्रबंधक
General Meeting	साधारण सभा
Grant-in-Aid	सहायता-अनुदान
Guidance	मार्गदर्शन
Head Clerk	प्रधान लिपिक
Head of Acctt.	लेखा शीर्ष
Head Office	प्रधान कार्यालय
Head Quarters	मुख्यालय
Holiday	अवकाश

Immediate Officer	आसन्न अधिकारी
Import	आयात
Increment	वेतन वृद्धि
Inquiry	पूछताछ जांच
Inspector	निरीक्षक
Instruction	अनुदेश
Instructor	अनुदेशक
Interpretation	निर्वचन
Intimation	प्रज्ञापन
Investigation	अन्वेषण
Irrelevant	असंबद्ध
Issue	निर्गम
Job	नौकरी
Joining Date	कार्यग्रहण तिथि
Joint Secy.	संयुक्त सचिव
Labour Welfare	श्रम कल्याण
Leave Salary	छुट्टी का वेतन
Leave Vacancy	अवकाश
Length of service	सेवाकाल
Management	प्रबन्ध
Medical	चिकित्सा
Medical Leave	चिकित्सा-छुट्टी
Medical Officer	चिकित्सा अधिकारी
Messenger	संदेशवाहक
Ministry	मंत्रालय
Modification	संशोधन
Most-Immediate	अतितात्कालिक
Nationality	राष्ट्रीयता
Necessary Action	आवश्यक कार्यवाही
Negligence	उपेक्षा
Non-Objection	अनापत्ति
Non-Official	गैर-सरकारी
Obedience	आज्ञापालन
Objection	आपत्ति
Offence	अपराध
Offer	नियुक्त
Office	कार्यालय
Office copy	कार्यालय प्रति
Office Hours	कार्यालय समय
Office Order	कार्यालय आदेश
Officer	अधिकारी
Officer-in-charge	प्रभारी
Officiating	स्थानापन्न
Option	विकल्प
Original Copy	मूल प्रति
Outstanding	बकाया
Overtime	अतिरिक्त
Partime	अंशकालिक
Pay	वेतन
Payment	अदायगी
Penalty	दंड, जुर्माना
Pending	लम्बित
Pension	पैंशन
Planning	योजना

Proceedings	कार्यवाही	Target	लक्ष्य
Proposal	प्रस्ताव	Technical	तकनीकी
Publicity	प्रचार	Testimonial	शंसापत्र
Postpone	स्थगित करना	Tour	दौरा
Qualification	अर्हता, योग्यता	Training	प्रशिक्षण
Quarterly	त्रैमासिक	Translation	अनुवाद
Rectification	परिशोधन	Travelling Allowance	यात्रा-भत्ता
Reference	संदर्भ	Under Secy.	अवर सचिव
Remark	विचार	Unemployment	बेकारी
Remuneration	पारिश्रमिक	Unofficial Letter	अशासकीय पत्र
Renewal	नवीनीकरण	Up-to-date	अद्यतन
Reverse	राजस्व	Verification	सत्यापन
Satisfactory	संतोषजनक	Violation	अतिक्रमण
Scrutiny	समीक्षा	Waiting List	प्रतीक्षा-सूची
Seal	मुद्रा, मोहर	Warning	चेतावनी
Secret	गुप्त	Working Day	कार्य-दिवस
Security	प्रतिभूति	Working Hours	कार्य-समय
Seniority	वरिष्ठता	Working Knowledge	कार्यसाधक ज्ञान
State Govt.	राज्य सरकार	Write off	बट्टे खाते डालना
Stock	सामान, सामग्री		
Summary	सारांश, संक्षेप	Zone	जॉन, अंचल
Superintendent	अधीक्षक		
Supervisor	पर्यवेक्षक		

10. दैनिक प्रयोग में आने वाली कुछ महत्वपूर्ण टिप्पणियां

1. A brief note is placed below.
   संक्षिप्त टिप्पणी नीचे प्रस्तुत है ।
2. Acknowledge receipt of this (P.U. 2011)
   इसकी पावती भेजिए ।
3. Action is proposal may be taken.
   यथा प्रस्ताविक कार्यवाई की जाए ।
4. Agenda of the meeting is put up. (P.U. 2013)
   बैठक की कार्यसूची प्रस्तुत है ।
5. Application may be rejected.
   आवेदन अस्वीकार कर दिया जाए ।
6. Approved as proposed. (P.U. 2012)
   प्रस्ताव के अनुसार अनुमोदित ।
7. Administrative approval may be obtained.
   प्रशासनिक अनुमोदन प्राप्त किया जाए ।
8. Await reply. (P.U. 2012)
   उत्तर की प्रतीक्षा करें ।
9. Await further report.
   और विवरण की प्रतीक्षा करें ।
10. Ascertain the position please.
    कृपया स्थिति का पता लगायें ।
11. Amended draft is submitted for approval.
    संशोधित प्रारूप अवलोकनार्थ प्रस्तुत है ।
12. Brief resume of the case is given below.
    मामले का संक्षिप्त सार नीचे दिया गया है ।
13. Call for explanation. (P.U. 2012)
    स्पष्टीकरण मांगें ।
14. Call for explanation. (P.U. 2010)
    रिपोर्ट मंगवायें ।
15. Comply with the orders. (P.U. 2013)
    आदेशों का पालन करें ।
16. Clarify the position Please.
    कृपया स्थिति को स्पष्ट करें ।

17. Copy enclosed for ready reference.
सुलभ संदर्भ के लिए प्रतिलिपि संलग्न है ।
18. Copy is enclosed. (P.U. 2012)
प्रतिलिपि संलग्न है ।
19. Copy forwarded for information and necessary action.
प्रतिलिपि सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्रवाई के लिए प्रेषित है ।
20. Case may be kept pending (P.U. 2013)
मामले को अभी अनिर्णित रखा जाए ।
21. Delay should be avoided.
विलम्ब न किया जाए ।
22. Disciplinary proceeding may be initiated.
अनुशासनिक कार्रवाई शुरू की जाये ।
23. Draft reply is put up. (P.U. 2011)
उत्तर का मसौदा प्रस्तुत है ।
24. Enquiry may be conducted.
जांच की जाए ।
25. Expedite action. (P.U. 2010, 2011, 2012, 2013)
शीर्घ कार्रवाई करें ।
26. Explanation may be called for.
स्पष्टीकरण मांगा जाए ।
27. Facts of the case may be put up.
मामले के तथ्य प्रस्तुत करें ।
28. For perusal and return. (P.U. 2013)
देखकर लौटाने के लिए ।
29. For comments please.
कृपया टिप्पणी दें ।
30. For sympathetic consideration.
सहानुभूतिपूर्ण विचार के लिए ।
31. Forwarded and recommended. (P.U. 2012)
प्रेषित और संस्तुत ।
32. I concur with the proposal.
मैं इस प्रस्ताव को अपनी सहमति प्रकट करता हूँ ।
33. I have no remarks to offer.
मुझे कोई टिप्पणी नहीं करनी ।

34. Inform all concerned.
सभी संबंधित व्यक्तियों को सूचित करें ।
35. Issue a circular. (P.U. 2011)
परिपत्र जारी करें ।
36. Keep pending.
निर्णय के लिए रोक रखें ।
37. Kindly accord sanction. (P.U. 2010)
कृपया स्वीकृति दीजिए ।
38. Kindly confirm. (P.U. 2011, 2012, 2013)
कृपया पुष्टि करें ।
39. Matter is under consideration. (P.U. 2010)
मामला विचाराधीन है ।
40. No action is necessary. (P.U. 2011)
कोई कार्रवाई अपेक्षित नहीं ।
41. Needful has been done.
आवश्यक कार्रवाई कर दी गई है ।
42. Orders may be issued. (P.U. 2013)
आदेश जारी किए जाएं ।
43. Please see the proceeding notes.
कृपया पिछली टिप्पणियां देख लें ।
44. Put up the relevant papers.
सम्बन्धित काग़ज़ प्रस्तुत करें ।
45. Reminder may be sent. (P.U. 2010, 2011, 2012)
अनुस्मारक भेजा जाए ।
46. Report compliance immediately.
अनुपालन करके तुरन्त सूचित करें ।
47. Specific reason may be given. (P.U. 2011)
विशिष्ट कारण दिया जाए ।
48. Submitted for information.
सूचना के लिए प्रस्तुत हैं ।
49. This may be treated as confidential.
इसे गोपनीय समझें ।
50. Verified and found correct. (P.U. 2010)
जांचा और सही पाया ।

तकनीकी शब्दावली

(केवल प्रशासकीय शब्दावली)

1.	Acceptance (2012)	स्वीकृति
2.	Account (2011, 2013)	लेखा, खाता, हिसाब
3.	Accuse	अभियोग लगाना
4.	Acknowldege (face etc.)	अभिस्वीकार करना, मानना
5.	Acknowledge due	रसीदी, पावती सहित
6.	Addressee	पाने वाला
7.	Adjournment (2010)	स्थगन
8.	Administration	प्रशासन
9.	Admissible	स्वीकार्य
10.	Affidavit (2010, 2012)	शपथ लेना, हलफ़नामा
11.	Agent	अभिकर्ता, एजेंट
12.	Agitation	आन्दोलन
13.	Agreement	करार, अनुबन्ध, सहमति
14.	Allowance	भत्ता
15.	Amenity	सुख सुविधा
16.	Anti-corruption Officer	भ्रष्टाचार निरोध अधिकारी
17.	Appeal	अपील, अपील करना
18.	Appointment	नियुक्ति
19.	Appoint (2012)	नियुक्ति करना
20.	Approval	अनुमोदन
21.	Article (2011, 2012)	अनुच्छेद, नियम, वस्तु
22.	Association	संघ, समाज, संगम
23.	At par	सममूल्य पर
24.	Attendant	परिचर
25.	Attestation	साक्ष्यांकन, अनुप्रमाणन
26.	Audit	लेखा-परीक्षा
27.	Ballot Paper	मतपत्र, मत-पर्ची
28.	Ban	प्रतिबंध, रोक, पाबंदी

29.	Bonafide (2012, 2017)	सद्भावी, वास्तविक, असली
30.	Book fair(2010)	पुस्तक मेला
31.	Bureau	कार्यालय, ब्यूरो
32.	Cabinet	मंत्रिमण्डल
33.	Candidate	अभ्यार्थी, प्रार्थी, उम्मीदवार
34.	Care-taker	रखवाला, अवधायक
35.	Cashier	रोकड़िया
36.	Censure	निंदा प्रस्ताव, परिनिंदा
37.	Certificate of Medical Fitness	आरोग्य प्रमाण-पत्र
38.	Character Certificate	चरित्र प्रमाण-पत्र
39.	Charge Sheet (2013)	आरोप पत्र, फर्द, जुर्म
40.	Circular (2012)	परिपत्र, गश्ती, चिट्ठी
41.	Circulation of a traffic	यातायात परिचालन
42.	Circus	क्रीड़ा रंग, रंगमंडप
43.	Citation (2010)	प्रशस्ति, उद्धरण, अनुलेखन
44.	City Booking Office	नगर टिकट घर
45.	City Compensatory Allowance	नगर भत्ता
46.	Civic	नागरिक
47.	Civic-Poll	नगर निर्वाचन
48.	Civic Sense	नागरिक भावना
49.	Civil air-craft	असैनिक वायुयान
50.	Claimant (2012, 2013)	दावेदार, दावी
51.	Collector (2011)	समाहर्ता, संग्राहक, संकलनकर्ता
52.	Colony	बस्ती, उपनिवेश
53.	Colossal	विशाल, बृहत्काय
54.	Colour blindness	वर्णाधता
55.	Communique	विज्ञप्ति
56.	Complaint	शिकायत
57.	Complementary	पूरक
58.	Completion report	समापन रिपोर्ट
59.	Certified copy	प्रमाणित प्रति

60.	Complementary copy	उपहार प्रति, मानार्थ प्रति
61.	Composite	मिला जुला, सम्मिश्र, संश्लिष्ट
62.	Comprehension	व्यापकार्थ बोध
63.	Contigencies	आकस्मिक व्यय
64.	Contractor	ठेकेदार, संविदाकार
65.	Confiscate	जब्त करना, अधिहरण करना
66.	Corporation	निगम
67.	Custody (2011, 2013)	अभिरक्षा
68.	Decorum (2011, 2012)	शिष्टता, शालीनता
69.	Defacto	वस्तुतः
70.	Defaulter	त्रुटिकारी, चूक करने वाला
71.	Defendent	प्रतिवादी
72.	Depreciation charge	मूल्य ह्रास प्रभार
73.	Design	अभिकल्प, अभिकल्पना
74.	Despatch	प्रेषण, रवानगी
75.	Dignitary	उच्च पदधारी
76.	Director (2012)	निर्देशक
77.	Disbursement	संवितरण
78.	Discipline	अनुशासन
79.	Discrepancy	विसंगति, गलती
80.	Discretion (2010)	विवेक, विवेकाधिकार
81.	Dissent	विसम्मति, असहमति
82.	Disqualified	अयोग्य, अनर्हता
83.	Division	विभाजन, मंडल, श्रेणी, प्रभाग
84.	Eligible (2012)	पात्रता प्राप्त, पात्र
85.	Emergency	आपात, आपातस्थिति
86.	Emigrant	उत्प्रवासी
87.	Employment	रोजगार, नौकरी, नियोजन
88.	Employment Exchange	रोजगार कार्यालय
89.	Employment Status	पदास्थिति

90.	Enquiry (2010)	पूछताछ, जांच
91.	Enrollment number	नामांकन संख्या
92.	Enrolled	नामांकित
93.	Evacuee	निष्क्रांत
94.	Executive Engineer	कार्यपालक अभियन्ता
95.	faculty (2012)	संकाय
96.	Finance	वित्त, रुपया लगाना
97.	Gazetted Officer	राजपत्रित अधिकारी
98.	Gazetteer	राजविवरणिका
99.	Gazetted Post	राजपत्रित पद
100.	Grant (2011, 2012)	अनुदान, स्वीकार करना
101.	Incentive	प्रोत्साहन
102.	Index	सूचक, अनुक्रमणी, विषय-सूची
103.	Initial (2013)	आद्यक्षर
104.	Insured letter	बीमा किया हुआ पत्र
105.	Interim	अन्तरिम
106.	Intelligence	गुप्तवार्ता, आसूचना
107.	Intelligentsia	प्रबुद्ध वर्ग, बुद्धिजीवी वर्ग
108.	Intensive reading	गहन अध्ययन
109.	Intention	अभिप्राय, आशय
110.	Judgement	निर्णय
111.	Jurisdiction	अधिकार-क्षेत्र
112.	Ledger	खाता
113.	Lessee	पट्टेदार
114.	Liason officer	सम्पर्क अधिकारी
115.	Maintenance	अनुराग, भरण पोषण
116.	Major	वयस्क, बालिग
117.	Manager	प्रबन्धक, व्यवस्थापक
118.	Minor (2013)	अवयस्क, नाबालिग
119.	Monopoly (2013)	एकाधिकार, एकाधिपत्य

120.	Motion	प्रस्ताव
121.	Nationalization	राष्ट्रीयकरण
122.	Negotiation (2010)	संधिवार्ता, समझौते की बातचीत
123.	Note of dissent	विसम्मति लेख
124.	Notification	अधिसूचना
125.	Oath Commissioner	शपथ आयुक्त
126.	Offender (2012, 2013)	अपराधी
127.	Permissible	अनुमेय, अनुज्ञेय
128.	Planning Commission	योजना आयोग
129.	Precedence	पूर्वता, अग्रता
130.	Procedure (2010)	कार्यावधि, प्रक्रिया
131.	Public	सार्वजनिक, आम
132.	Quorum	गणपूर्ति, कोरम
133.	Receipt (2011, 2013)	पावती, प्राप्ति रसीद
134.	Recruitment	भर्ती
135.	Receiver	पाने वाला
136.	Reminder	स्मरण पत्र
137.	Representative	प्रतिनिधि
138.	Senior (2012)	वरिष्ठ, ज्येष्ठ
139.	Sine die (2011, 2013)	अनिश्चित काल के लिए
140.	Statutory	कानूनी, विधिक, संविधिक
141.	Stenographer	आशुलिपिक
142.	Subordinate	अधीन, अधीनस्थ
143.	Tender	निविदा, टेंडर
144.	Transfer	बदली, स्थानांतरण, अंतरण
145.	Treasure	कोषपाल
146.	Unofficial	अशासकीय, अशासनिक
147.	Vacancy (2013)	रिक्ति
148.	Vigilance Officer	सतर्कता अधिकारी
149.	Warrant (2012)	अधिपत्र, वारंट